रांची, गुरुवार
13.03.2025
वर्ष : 10, अंक : 102 पृष्ठ : 12
मूल्य : दो रूपए

बिहान भारत

रांची से प्रकाशित हिन्दी दैनिक
खबरे हमारी, विश्वास आपका

website : www.bihanbharat.org bihanbharat@gmail.com @bihan_bharat Bihan Bharat RNI NO - JHAHIN/2015/73988

संक्षिप्त खबरें

होलिका दहन 13 को, 15 को मनाई जाएगी होली

रांची। रंगों का त्यौहार होली लगभग सभी गांवों और शहरों में 15 मार्च शनिवार का मनाई जाएगी। होलिका दहन 13 मार्च की रात को होगा। पंचागों की गणना के अनुसार 13 मार्च गुरुवार को चतुर्दशी तिथि पूर्वाहन 10.02 मिनट तक है। उसी रात भद्रा की समाप्ति के बाद रात 10.57 के बाद होलिका दहन होगा। शुक्रवार 14 मार्च को पूर्णिमा दिन को 11.12 मिनट तक है। उदया तिथि के अनुसार रंगोत्सव होती 15 मार्च को मनाया जाएगा।

रिम्स का 14 और 15 मार्च को बंद रहेगा ओपीडी

रांची। रिम्स का ओपीडी 14 और 15 मार्च को बंद रहेगा। रिम्स प्रशासन ने बुधधार को एक सूचना जारी कर यह जानकारी दी है। जारी सूचना के मुताबिक, इस दौरान ईमरजेंसी सेवा, फोरेंसिक मेडिसिन, रेडियोलॉजी विभाह और पाकशाला अन्य दिनों की तरह की खुला रहेगा। जारी सूचना के मुताबिक, होली को लेकर 14 मार्च को छुट्टी घोषित है। इसलिए ओपीडी सेवाएं बंद रहेंगी। जबकि 15 मार्च को भी ओपीडी सेवा बंद रखने का फैसला लिया गया है। दोनों दिन ओपीडी के अलावा निदेशक कार्यालय, चिकित्सा अधीक्षक कार्यालय, सभी विभाग, पुस्तकालय, माइक्रोबायोलॉजी विभाग, पैथोलॉजी विभाग, जीव रासायन विभाग, एमआरडी और सेंट्रल पैथोलॉजी विभाग बंद रहेगा।

इस वर्ष नहीं बदलेगा अप्रैल से कोर्ट का समय : हाई कोर्ट

रांची। राज्य में इस वर्ष जिला अदालतों में सुनवाई का समय नहीं बदलेगा। हर वर्ष रांची सिविल कोर्ट सहित झारखंड के सभी जिला न्यायालयों में अप्रैल से मॉर्निंग कोर्ट में मुकदमों की सुनवाई होती थी लेकिन अब झारखंड हाई कोर्ट ने पत्र जारी कर डे कोर्ट में ही सुनवाई जारी रखने की सूचना बुधवार को जारी कर दी है। डे कोर्ट में अदालत के कामकाज का समय सुबह 10:30 से लेकर शाम के पांच बजे तक निर्धारित किया गया है। पहले करीब दो महीने से ज्यादा समय से मॉर्निंग कोर्ट में सुनवाई चलती थी लेकिन अब ऐसा नहीं होगा।

मुख्यमंत्री सोरेन ने दिए निर्देशः पर्व-त्योहारों में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करें

अपराधमुक्त वातावरण में आपसी प्रेम और सौहार्द के साथ मनायें त्योहार : हेमंत सोरेन

बिभा संवाददाता

रांची। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिया है कि होली, सरहुल, ईद, रामनवमी सहित अन्य त्योहारों के दौरान राज्य में विधि-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जाए। उन्होंने कहा कि पर्व-त्योहारों का उत्सव अपराधमुक्त वातावरण में, आपसी प्रेम और सौहार्द के साथ मनाया जाना चाहिए।

बुधवार को झारखंड मंत्रालय में हुई उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि राज्य के किसी भी क्षेत्र में सांप्रदायिक तनाव या विवाद उत्पन्न न हो। पुलिस को अलर्ट मोड में रहने के निर्देश देते हुए उन्होंने संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष सतर्कता बरतने को कहा।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिया कि चिन्हित संवेदनशील क्षेत्रों में शांति समिति के साथ निरंतर बैठक कर समन्वय स्थापित करें। भीड़-भाड़ वाले जगहों, धार्मिक स्थलों पर पुलिस बल की तैनाती करें तथा शरारती तत्वों पर पैनी नजर रखते हुए कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित करें। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि पर्व-त्योहारों के समय सोशल मीडिया पर भी कड़ी निगरानी रखें। अफवाह फैलाने वालों पर सख्त कार्रवाई सुनिश्चित करें। बैठक में मुख्यमंत्री के समक्ष राज्य के पुलिस महानिदेशक अनुराग गुप्ता ने अपराध नियंत्रण को लेकर किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। बैठक में मुख्य सचिव अलका तिवारी, अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार, प्रधान सचिव गृह विभाग वंदना दादेल, डीजीपी अनुराग गुप्ता, पुलिस महानिरीक्षक विशेष शाखा प्रभात कुमार, पुलिस महानिरीक्षक अभियान एवी होमकर, पुलिस महानिरीक्षक अपराध अनुसंधान विभाग असीम विक्रांत मिंज, पुलिस महानिरीक्षक मुख्यालय मनोज कौशिक सहित अन्य वरीय पुलिस अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने ये दिये निर्देश

- आगामी पर्व-त्योहार (होली, ईद, रामनवमी, सरहुल) के मद्देनजर अपेक्षित निरोधात्मक कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।
- विधि-व्यवस्था बनाये रखने के लिए दण्डाधिकारी/बलों की उपलब्धता एवं प्रतिनियुक्ति करें।
- धार्मिक स्थलों के आस-पास की सुरक्षात्मक कार्रवाई और सीसीटीवी का लगाने एवं इलेक्ट्रॉनिक सर्विलास की व्यवस्था की जाए।
- जुलूस मार्गों का भौतिक सत्यापन सुनिश्चित करें।
- जुलूस मार्गों में पड़ने वाले संवेदनशील स्थानों और अन्य संवेदनशील स्थानों में दण्डाधिकारी-बलों की प्रतिनियुक्ति एवं विडियोग्राफी-ड्रोन के जरिये एरियल सर्विलांस की व्यवस्था सुनिश्चित करने।
- जुलूस के साथ दण्डाधिकारी - बलों की प्रतिनियुक्ति एवं क्यूआरटी दफ्फर की व्यवस्था करने।
- जुलूस मार्गों में लगातार प्रकाश और लाउड स्पीकर की व्यवस्था करने।
- संयुक्त नियंत्रण कक्ष और आपातकालीन योजना सुनिश्चित करने।
- जिला स्तरीय थाना की ओर से शांति समिति की बैठक करने।
- जिलों में दंगा रोधी सुरक्षा उपकरणों, दंगा रोधी वाहन, वॉटर केनन की उपलब्धता का सत्यापन और एंटी रॉयट कन्ट्रोल ड्रील की व्यवस्था करने।
- अवैध मादक पदार्थों-शराब के विरूद्ध छापेमारी करने
- डीजे सहित अन्य साउण्ड सिस्टम के जरिये उत्तेजक भडकाउ गानों के प्रसारण पर रोक लगाने।
- सुरक्षा बलों के लिए भोजन,आवास और पानी की व्यवस्था करने।
- पर्व-त्योहार के दौरान आपातकालीन चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध कराने।

स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने नवनियुक्त चिकित्सकों को दिया नियुक्ति पत्र

समाज को दिशा देने में चिकित्सकों की भूमिका महत्वपूर्ण : इरफान अंसारी

बिभा संवाददाता

रांची। झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने नामकुम स्थित आईपीएच सभागार में बुधवार को नवनियुक्त चिकित्सकों को नियुक्ति पत्र दिया। इस मौके पर स्वास्थ्य मंत्री ने 56 विशेषज्ञ चिकित्सा पदाधिकारी,38 चिकित्सा पदाधिकारी,11 दंत चिकित्सक,57 ओटी टेक्निशियन को नियुक्ति पत्र दिया। उन्होंने नवनियुक्त चिकित्सकों को बधाई दी और कहा कि मुख्यमंत्री ने भी उन्हें शुभकामनाएं दी है।

इस मौके पर स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने कहा कि आने वाले दिनों में झारखंड में स्वास्थ्य के क्षेत्र में काफी बदलाव देखने को मिलेगा। रिम्स में मरीजों के दबाव को कम करने के लिए बहुत जल्द ही पांच सुपर स्पेशियालिटी हॉस्पिटल की स्थापना करने जा रहे हैं। झारखंड में डॉक्टर्स की कमी को पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है, इसी क्रम में आज डॉक्टर्स को नियुक्ति पत्र दिया जा रहा है। इससे पहले भी

सामुदायिक स्वास्थ्य पदाधिकारियों को भी नियुक्ति पत्र दिया गया था। जल्द ही स्वास्थ्य विभाग में 10 हजार से अधिक बहाली की जाएगी। रिटायर डॉक्टर्स से भी सेवायें ली जाएगी। डॉ इरफान अंसारी ने कहा कि नवनियुक्त चिकित्सकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। अब आप जानता के बीच जाकर अपनी सेवाएं देंगे। अपनी क्षमता से समाज को एक खूबसूरत दिशा देने का प्रयास करेंगे। आपकी पोस्टिंग विभिन्न अस्पतालों में होगी,आपका प्रयास होना चाहिए कि मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मिले।

उन्होंने कहा कि चिकित्सक मरीजों की जान बचाने का काम करते हैं, इसलिए हमें उनका मनोबल भी बढ़ाने का काम करना होगा। कहा कि मैं आपके साथ हूँ। हमलोग कदम से कदम मिलाकर चलेंगे और झारखंड को स्वास्थ्य के क्षेत्र में बहुत आगे तक लेकर जाएंगे।

इस अवसर पर स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव अजय कुमार, अभियान निदेशक अबु इमरान सहित स्वास्थ्य विभाग के वरीय पदाधिकारी एवं चिकित्सक उपस्थित थे।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में इंफ्रास्ट्रक्चर को किया जा रहा है मजबूत

मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने कहा कि राज्य को बहुत जल्द कई मेडिकल कॉलेज भी देने जा रहे हैं साथ ही साथ मेडिकल सीटें भी बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। हर पंचायत में हेल्थ कॉटेज बनाने की व्यवस्था करने जा रहे हैं। एआई टेक्नोलॉजी के तहत इलाज की व्यवस्था की जाएगी। जल्द ही रोबोटिक टेक्नोलॉजी के माध्यम से इलाज की व्यवस्था की जाएगी। 108 एम्बुलेंस का विस्तार करने जा रहे हैं साथ ही रिमोट एरिया में बाइक एम्बुलेंस की व्यवस्था करने जा रहे हैं।

एयर एम्बुलेंस के माध्यम से हजारों लोगों की बचाई गई जान

डॉ. इरफान अंसारी ने कहा कि मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के प्रयास से झारखंड के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं देने का प्रयास किया जा रहा है। इसी के तहत राज्य में आम लोगों के लिए एयर एम्बुलेंस की सेवा शुरू की गई थी। इस सुविधा के माध्यम से हजारों लोगों कि जान बचाने का काम किया गया। इसी के तर्ज पर प्रत्येक जिले में हेलीकॉप्टर एम्बुलेंस सेवा देने पर विचार किया जा रहा है।

सरकार के साथ अन्य सेक्टर भी स्वास्थ्य के क्षेत्र में करें काम

राज्य में स्थापित बड़ी कंपनियों को सीएसआर फंड के माध्यम से भी स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करने के लिए निर्देशित किया जा रहा है। प्राइवेट हॉस्पिटल्स को मरीजों की मौत पर उनके बकाए बिल को माफ करने का भी निदेश दिया गया है ताकि मरीज के परिजनों को उनके दुख की घड़ी में परेशान ना होना पड़े। इसका सख्त पालन करने का निदेश उन्होंने दिया है।

हॉकी झारखंड ने हरियाणा को पराजित कर पहली बार विजेता बनी

बिभा संवाददाता

रांची : 01 मार्च से 12 मार्च 2025 तक पंचकुला हरियाणा में आयोजित 15वीं हॉकी इंडिया सीनियर महिला राष्ट्रीय चैंपियनशिप 2025 , में झारखण्ड हॉकी टीम ने आज फाइनल मैच में हॉकी हरियाणा को हरियाणा की धरती में पेनाल्टी शूटआउट में 4-3 गोल से पराजित कर पहली बार विजेता बनी। इससे पूर्व झारखंड टीम 10 वर्ष पहले 2015 में फाइनल पहुंचकर पहली बार उपविजेता बनी थी ।

झारखंड अपने चिरप्रतिद्वंदी मेजबान हरियाणा टीम के साथ मैदानी खेल में 01-01 गोल से बराबरी रहे, मैदानी खेल में झारखंड टीम की ओर प्रमोदानी लकड़ा ने गोल की ,जबकि हरियाणा की और से रानी ने और मैच पेनाल्टी शुट आउट में गया। पेनाल्टी शूट आउट में झारखंड टीम की ओर से रजनी केरकेट्टा,निराली कुजूर, बिनिमा धान और कप्तान अलबेला रानी टोप्पो ने गोल की, जबकि सम्मी बड़ा गोल करने में असफल रही । झारखंड टीम का सीनियर नेशनल में पहली बार विजेता होने पर हॉकी झारखंड के अध्यक्ष श्री भोलानाथ सिंह पूरी टीम को 02.00 लाख रुपए नगद देने की घोषणा की।

झारखंड टीम के विजेता होने झारखंड सरकार के खेल मंत्री सुदीप्य कुमार सोनू, हॉकी झारखंड के अध्यक्ष भोलानाथ सिंह, विजय शंकर सिंह,मनोज कोणबेगी, असरिता लकड़ा, रजनीश कुमार,असुंता लकड़ा, जयंत केर-केट्टा , शशिकांत प्रसाद, सुरजीत झा, अशोक भगत, दसरथ महतो सहित हॉकी झारखंड और खेल विभाग के समस्त पदाधिकारियों ने पूरी टीम को बधाई दी है।

कैबिनेट : प्रतियोगी परीक्षाओं में धांधली रोकने को विशेष कोर्ट गठन की मिली मंजूरी

बिभा संवाददाता

रांची । झारखंड सरकार की कैबिनेट बैठक में बुधवार को राज्य में प्रतियोगी परीक्षाओं में होने वाली धांधली को रोकने के लिए विशेष कोर्ट के गठन की मंजूरी दी गई। इसके तहत परीक्षाओं में अनुचित साधनों की रोकथाम और निवारण के उपाय अधिनियम-2023 की धारा-26 के तहत अपर न्यायायुक्त-एक, रांची के कोर्ट को विशेष कोर्ट के रूप में स्वीकृति दी गई।

कैबिनेट की बैठक में लिए गए अन्य फैसले

झारखंड हाई कोर्ट में दायर मामले में माभगत चरण महांती, भूतपूर्व पदचर की सेवा नियमित करने और उनकी बेटी प्रिया महान्ती को अनुकंपा पर नियुक्त करने की स्वीकृति दी गई।

हाई कोर्ट के आदेश पर हसनैन अख्तर की सेवा नियमित करते हुए उन्हें वित्तीय लाभ देने की स्वीकृति दी गई।

हाई कोर्ट में दायर मामले में सेवानिवृत लिपिक देवनारायण सिंह की सेवा नियमित करने और अन्यि वित्तीय लाभ देने की स्वीकृति दी गई।

राज्य सरकार की ओर से हाई कोर्ट के लिए नियुक्त विधि पदाधिकारियों और उनके एसोसिएट काउंसेल की ओर से हाई कोर्ट के अलावा मुख्यालय के अंदर किसी अन्य कोर्ट या न्यायाधिकरण में पैरवी करने के लिए फीस निर्धारण की स्वीकृति दी गई।

झारखण्ड सम्पूर्ण बिजली आच्छादन योजना के तहत बचे हुए कार्यों को पूरा करने के लिए मार्च, 2025 तक योजना के अवधि विस्तार की स्वीकृति दी गई।

ऊर्जा विभाग के मुख्ये अभियंता के सचिव अरविन्द कुमार बलदेव प्रसाद के इलाज में हुए 28 लाख रुपये के खर्च की राशि का भुगतान करने का निर्णय लिया गया। उनके कैंसर का इलाज अपोलो प्रोटोन कैंसर सेंटर, चेन्नई में किया गया था।

गोड्डा के एनआरईपी के पूर्व कार्यपालक अभियंता राधेश्याम मांझी पर लगाए गए दो वेतन वृद्धि की रोक के खिलाफ विरूद्ध समर्पित अपील को स्वीकृत करते लगाए गए दंड के परिमार्जन की स्वीकृति दी गई।

भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी स्वार्गीय नागेन्द्र कुमार सिन्हा को एयर एम्बुलेन्स से रांची से हैदराबाद ले जाने और इसपर खर्च हुए 14.52 लाख रुपए देने का निर्णय लिया गया।

जल संसाधन विभाग के विशेष भू-अर्जन और पुनर्वास कार्यालयों के छटनीग्रस्त कर्मियों की सेवा समाप्ति और पुनर्बहाली के बीच की सीमा सेवा के दौरान वेतन देने का निर्णय लिया गया।

छठे झारखंड विधानसभा के द्वितीय (बजट) सत्र में राज्यपाल के अभिभाषण पर घटनोत्तर स्वीकृति दी गई।

एकीकृत बिहार पंचायत राज वित्त निगम लिमिटेड के कर्मियों के बकाया वेतन के भुगतान की स्वीकृति दी गई।

राज्य के एसटी, एससी, अल्पसंख्यक और पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग के नियंत्रण में चलने वाले आश्रम विद्यालयों, पीवीटीजी आवासीय प्राथमिक विद्यालयों, अनुसूचित जनजाति आवासीय प्राथमिक विद्यालय तथा अनुसूचित जाति आवासीय प्राथमिक विद्यालयों के संचालन गैर सरकारी संस्थाओं के माध्यम से कराने की अवधि विस्तारित करने की स्वीकृति दी गई।

जन वितरण प्रणाली के कम्प्यूटरीकरण प्रक्रिया के क्रम में सभी जन वितरण प्रणाली दुकानों में ई-पोस मशीन के जरिए खाद्यान्न वितरण के लिए नियमावली को शिथिल करते हुए मेसर्स लिंकवेल टेलीसिस्टम प्राईवेट लिमिटेड और मेसर्स इंटिग्रा माईक्रोसॉफ्ट प्राईवेट लिमिटेड से अगले आठ माह या फोर जी नेटवर्क आधारित ई-पोस मशीन लगाने के लिए अवधि में विस्तापर किया गया।

राज्य के मेडिकल कॉलेजों में पीजी (मेडिकल, एमडीएस) में पास होने के बाद तीन वर्षों की आवश्यक सरकारी सेवा की बाध्यता संबंधी प्रावधानों में संशोधन की स्वीकृति दी गई।

झारखंड माल और सेवा कर अधिनियम-2017 में संशोधन करने के लिए प्रस्तावित झारखंड माल और सेवा कर (संशोधन) विधेयक-2025 को झारखंड विधानसभा के चालू सत्र में पुरःस्थापित करने की स्वीकृति दी गई।

लातेहार जिले के सिकनी कोल ब्लॉक के 410.75 एकड़ क्षेत्र में से 133.473 एकड़ पर झारखंड राज्य खनिज विकास निगम लि. के खनिज खनन पट्टा की अवधि विस्तार की स्वीकृति दी गई।

झारखंड कारा और सुधारात्मक सेवाएं विधेयक-2024 को वापस लेते हुए झारखंड कारा एवं सुधारात्मक सेवाएं विधेयक-2025 को झारखंड विधानसभा में पुनर्स्थापन की स्वीकृति दी गई।

एक जनवरी 2016 से लागू रिवाइज्डी वेतनमान पेंशन में बदलाव की स्वीकृति दी गई।

झारखण्ड राज्य के पुलिस, कक्षपाल, सिपाही (होमागार्ड), उत्पाद सिपाही संयुक्त भर्ती नियमावली, 2025 के गठन की स्वीकृति दी गई।

झारखंड सहायक कारापाल संवर्ग नियमावली-2012 में संशोधन करते हुए झारखंड सहायक कारापाल संवर्ग (संशोधन) नियमावली- 2025 प्रवृत करने की स्वीकृति दी गई।

राज्य के पीवीटीजी और अन्य आदिवासी समूह के अविद्युतीकृत टोलों तथा घरों के विद्युतिकृत करने के लिए ऑन-ग्रिड और ऑफ ग्रिड योजना के लिए 55.92 करोड़ की प्रशासनिक स्वीकृति दी गई।

रांची में बन रहे 5000 एमटी क्षमता के कोल्डप स्टो रेज के तीसरे पुनरीक्षित राशि के रूप में कुल 11 करोड़ 65 लाख 41 हजार 783 की स्वीकृति दी गई।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से जेपीएससी अध्यक्ष ने की शिष्टाचार भेंट

बिभा संवाददाता

रांची। झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी) के अध्यक्ष एल खियांग्ते ने बुधवार को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मुलाकात की। यह शिष्टाचार भेंट कांके रोड स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में हुई। उन्होंने मुख्यमंत्री से मुलाकात के दौरान विभिन्न विषयों पर चर्चा की।

उल्लेखनीय है कि पूर्व मुख्य सचिव एल खियांग्ते को 27 फरवरी को जेपीएससी का नया अध्यक्ष बनाया गया था। राज्य सरकार ने एल. खियांग्ते के नाम का प्रस्ताव भेजा था, जिस पर तत्काल निर्णय लेते हुए राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने इस पर मुहर लगा दी थी। जेपीएससी अध्यक्ष का पद छह माह से खाली था। 22 अगस्त 2024 को डॉ मेरी नीलिमा केरकेट्टा के रिटायर होने के बाद जेपीएससी अध्यक्ष की नियुक्ति नहीं हुई थी।

एल खियांग्ते झारखंड कैडर के 1988 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के अधिकारी हैं। उन्होंने 1987 में यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा पास की थी। मूल रूप से मिजोरम के रहने वाले एल खियांग्ते आदिवासी समुदाय से आते हैं। वह झारखंड के मुख्य सचिव और मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी (सीईओ) रह चुके हैं। इसके अलावा कई प्रमुख पदों पर भी उन्होंने काम किया है। एल खियांग्ते प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान (एटीआई) के महानिदेशक भी रहे हैं। जेपीएससी के नये अध्यक्ष एल खियांग्ते इतिहास विषय में ग्रेजुएट हैं।

अपराधियों पर कसे लगाम, जनता से करें बेहतर व्यवहार : एसपी

बिभा संवाददाता

रामगढ़। जिले में अपराधी गतिविधियों को लगाम लगाना है। किसी भी स्तर पर अपराधियों को छोड़ा नहीं जाएगा। साथ ही थाने में आम जनता के साथ बेहतर व्यवहार होना चाहिए। जनता का भरोसा पुलिस पर और मजबूत हो, इसके लिए काम करना है। यह बातें बुधवार को एसपी कार्यालय में क्राइम मीटिंग के दौरान एसपी अजय कुमार ने कही।

उन्होंने कहा कि क्राइम मीटिंग में लंबित कांडों और अतिसंवेदनशील मामलों के निष्पादन की बात तो की ही गई। लेकिन सबसे बड़ी बात पुलिस की छवि को लेकर की गई है। हाल के दिनों में कुछ ऐसी घटनाएं थानों में हुई हैं जिसे लेकर पुलिस पदाधिकारी पर कार्रवाई हुई।

इन बिंदुओं पर एसपी ने की विस्तार से चर्चा

एसपी अजय कुमार ने क्राइम मीटिंग के दौरान लंबित मामले, हत्या, पोस्को एक्ट, आगजनी, नक्सली, आपराधिक घटनाएं, महिला उत्पीड़न, साइबर क्राइम, एनडीपीएस एक्ट, लूट, डकैती, चोरी, गृहभेदन पर भी विस्तार पूर्वक चर्चा की। उन्होंने कहा कि टीएसपीसी, पीएलएफआई के सक्रिय सदस्यों का प्रोफाइल तैयार करना है। प्रत्येक दिन थाना और ओपी प्रभारी के द्वारा मॉर्निंग मीटिंग कर टास्किंग की जानी चाहिए। जन शिकायतों से प्राप्त मामलों को तत्काल निष्पादित किया जाना चाहिए। साथ ही कैरेक्टर और पासपोर्ट वेरिफिकेशन का काम समय पर होना चाहिए।

सभी व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में लगना चाहिए सीसीटीवी कैमरा

बैठक के दौरान एसपी अजय कुमार ने बाजार में अपराधियों पर लगाम लगाने के लिए सीसीटीवी कैमरा लगाने की बात कही। उन्होंने कहा कि पहले भी कई बार उन्होंने व्यापारिक संगठनों को पत्र लिखा है। जब तक दुकानदार अपने प्रतिष्ठानों में बेहतर क्वालिटी का सीसीटीवी कैमरा नहीं लगाएंगे, तब तक हिट एंड रन और छिंतई की घटनाओं पर लगाम लगाना आसान नहीं होगा। बैठक में रामगढ़ एसडीपीओ, पतरातु एसडीपीओ समेत सभी थानों के प्रभारी मौजूद रहे।

मुरहू प्रखण्ड मुख्यालय में धूमधाम से मनाया गया होली मिलन समारोह

बिभा संवाददाता

खूँटी । जिले के प्रखंड में बुधवार को होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रखंड विकास पदाधिकारी और उपप्रमुख अरुण साबू की अगुवाई में सभी उपस्थित जनों के साथ धूमधाम से होली मिलन मनाया गया। इस मौके पर, अबीर गुलाल लगाकर सूखी होली खेली गयी और होली मिलन समारोह मनाया गया। जिसमें जाति पंथ भेदभाव मिटाकर हिंदू , मुस्लिम, इसाई और आदिवासी सभी समुदाय के लोगों ने मिलकर होली मिलन समारोह में शामिल हुए और पूरे जोशो खरोश से पूरे उमंग के साथ होली खेली। वहीं हिंदी गीतों में क्षेत्रीय नाच के साथ थिरके। इसके अलावे मुरहू प्रखंड के दो कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति होने पर समारोह आयोजित करके उन्हें विदाई दिया गया। इस दौरान होली भोज का आयोजन किया गया। मौके पर, प्रखंड विकास पदाधिकारी ने बताया कि आज के बाद कार्यालय छुट्टी हो जाएगी और कल लोग अपने अपने घर चले जाएंगे। इसलिए आज होली मिलन कार्यक्रम किया गया। जिसमें सभी को अबीर गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएँ दी गयी। उपप्रमुख अरुण साबू ने कहा कि होली प्रकृति के परिवर्तन का पर्व है। जिसमें लोग एक दूसरे को रंग अबीर गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं व बधाई देते हैं। वहीं आज सभी को बधाई दी गयी। अबीर लगाया गया और नाच-गान किया गया। इस कार्यक्रम में प्रखंड विकास पदाधिकारी रंजीत कु सिन्हा, उपप्रमुख अरुण साबू, थाना प्रभारी रामदेव यादव, जिला परिषद सदस्य नेलानी देमता व दयामनी मुण्डू, पंचायत समिति सदस्य रौशन लाल गंझू, मुखिया गण, बबलू खान, चन्द्रप्रभात मुण्डा, सांसद प्रतिनिधि धर्मदास कांडीर सहित सभी प्रखंड कर्मी आदि अनेक लोग उपस्थित थे।

अनिल धान हत्याकांड के आरोपी युवक गिरफ्तार

बिभा संवाददाता

खूँटी । विगत 06 फरवरी को टोड़ांगकेल गाँव में हुए अनिल धान हत्याकांड का खुलासा कर खूँटी पुलिस ने आरोपी युवक मंगरा सोय मुरूम को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। खूँटी पुलिस ने 06 फरवरी को थाना क्षेत्र के टोड़ांगकेल गाँव के पास से अज्ञात शव बरामद किया था। जिसकी बाद में अनिल धान के रूप में पहचान हुई थी। मृतक तोरपा के कंडयोर गाँव का रहने वाला था। घटना के दो दिन बाद मृतक के पिता सुलेमान धान ने शव की पहचान अपने बेटे के रूप में की थी। खूँटी पुलिस ने हत्याकांड को गंभीरता से लेते हुए जांच के लिए एक टीम का गठन किया। खूंटी थाना प्रभारी मोहन कुमार के नेतृत्व में गठित टीम के कुशल नेतृत्व एवं अथक प्रयास से इस कांड में शामिल अपराधकर्मी मंगरा सोय मुरूम को बुधवार को खूँटी के नामकोम बस्ती से किराये के मकान से गिरफतार किया। आरोपी मूलरूप से मुरहू के रूमुदकेल गाँव का रहने वाला है। थाना प्रभारी मोहन कुमार के मुताबिक गिरफतार अभियुक्त मंगरा सोय मुरूम ने पुछताछ में ना सिर्फ हत्या की बात स्वीकारी बल्कि बताया कि मृतक और वे दोनो एक ही लड़की से शारीरिक संबंध बनाना चाहते थे। इसी को लेकर दोनो में विवाद उत्पन्न हो गया। इसी के बाद मंगरा सोय मुरूम ने अनिल धान को पानी में डुबा-डुबा कर और मुक्का मार मारकर हत्या करने की बात स्वीकारी है। पुलिस ने आरोपी युवक के घटना के वक्त पहना कपड़ा घटनास्थल से 100 मीटर दूर झाड़ी से बरामद किया है। आरोपी की गिरफ्तारी में थाना प्रभारी के अलावा पुअनि अगस्टीन लुगून,खुर्शीद आलम, चंदन कुमार एवं सशस्त्र बल शामिल है।

हरि कीर्तन के साथ संपन्न हुआ देवी मां का पूजा

खूँटी । जिले के कर्रा प्रखंड के बुढीरोमा गाँव में माँ देवी का पूजा अर्चना के बाद बुधवार को 12 घंटा का हरि कीर्तन के साथ पूजा संपन्न हो गया। जिसमें हरि कीर्तन में सैकड़ों महिला पुरुष शामिल हुए। इस अवसर पर कार्यक्रम में अगल-बगल के दर्जनों गाँव के लोग उपस्थित हुए। पूजनोत्सव के दौरान मांस मदिरा रहा बंद। बुढीरोमा गांव के अलावा दर्जनों गांवों में माता देवी की पूजा को लेकर 72 घंटा तक माश मंदिरा का लोगों ने सेवन नहीं किया और भक्ति में ही अपना दिनचर्या व्यतीत किया।

हत्या को अंजाम देने वाले युवक को पुलिस ने किया गिरफ्तार

खूँटी । मुरहू थाना अंतर्गत ग्राम सिरका, टोला-बन्दाडीह के इंदर स्वांसी की हत्या करनेवाले गाँव के ही युवक को पुलिस ने बुधवार को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया। वहीं इस मामले की जानकारी देते हुए डीएसपी ने बताया कि ग्रामीणों के माध्यम से सूचना प्राप्त हुआ की सिरका गाँव के ही रहने वाले सागर पाहन ने आपसी लड़ाई करके तोनो से इंदर स्वांसी को काटकर गम्भीर रुप से घायल कर दिया था।

विधायक ने बंद पड़े सिकनी कोलियरी को खोलने की उठायी थी मांग

विधायक के प्रयास के बाद कैबिनेट में भी मिली मंजूरी, जल्द चालू होगा कोलियरी

बिभा संवाददाता

लातेहार : विधायक प्रकाश राम ने विधानसभा सत्र के दौरान जेएसएमडीसी के द्वारा संचालित एकमात्र सिकनी कोलियरी मामले में तारांकित प्रश्न पूछते हुए बंद पड़े कोलियरी को खोलने की मांग रखी। विधायक ने सदन में बताया कि सिकनी कोलियरी लातेहार जिला के लिए कितना महत्वपूर्ण है। सरकार को राजस्व देने के साथ-साथ करीब 10 हजार लोगों को प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार देने का कार्य करती है। पिछले 5 वर्षों के दौरान राज्य सरकार को 300 से लेकर 500 करोड़ जबकि जिला को करीब 25 करोड़ का राजस्व दिया है। विधायक प्रकाश राम के सवाल पर जवाब देते हुए विभागीय मंत्री ने कहा कि इसी माह मार्च महीने में खनन पट्टा अवधि विस्तार कर दिया जायेगा। अवधि विस्तार को लेकर विधायक प्रकश राम ने प्रयास कर केबिनेट में भी इस प्रस्ताव को पास करा दिया है।

लोगों को रोजगार मिले इसके लिए प्रयासरत हूं : प्रकाश राम

विधायक प्रकाश राम ने कहा कि क्षेत्र को लोगों को रोजगार मिले, इसके लिए मैं हमेशा से प्रयासरत रहा हूं। आने वाले समय में भी अन्य कंपनियों और विभाग के साथ समन्वय बनाकर क्षेत्र के युवाओं को रोजगार के साथ जोड़ने का काम करूंगा। लातेहार जिला सदियों से पलायन का दंश झेल रहा है, पलायन रोकने के लिए सभी को मिलकर काम करना होगा।

सीमेंट लदा 16 चक्का ट्रक घाटी में गिरा, चालक खलासी का ट्रक के नीचे दब जाने की आशंका

खूँटी । जिले के अड़की थाना क्षेत्र अन्तर्गत सुदूरवर्ती बिहड़ बडानी गाँव के निकट घाटी में सीमेंट लदा एक 16 चक्का ट्रक 100 फीट नीचे खाई में गिर गया जिससे चक्का उपर की ओर पलट गया। इस दुर्घटना में ट्रक पूरी तरह छतिग्रस्त हो गया है। लेकिन चालक व खलासी का पता नहीं चलने से आशंका जताया जा रहा है कि ट्रक के नीचे दोनों दब गये होंगे। प्रभारी ने बताया कि, ट्रक गाड़ी में सीमेंट लदा है। वाहन के चालक और खलासी का अभी तक कोई पता चल पाया है। जिसको पता लगाने के लिए छानबीन किया जा रहा है। लेकिन कुछ जानकारी मिली कि ट्रक में बांगड़ सीमेंट लदा है जो सीमेंट खूँटी ले जा रहा था। वहीं ये ट्रक आखिर इस रास्ते से क्यों पार हुआ जबकि मैन रोड होकर सारा गाड़ी जाता है। इधर बडानी के रास्ते से कोई गाड़ी नहीं जाता है। चालक और खलासी का पता नहीं है। क्रैन लाकर वाहन को सीधा किया जाएगा तभी पता चल पाएगा कि चालक खलासी उसमें दबे हैं कि नहीं। लेकिन संदेह है कि चालक खलासी उसी में दब गये होंगे।

पूर्व मंत्री ने धूमकुरिया एवं तालाब का किया शिलान्यास

बिभा संवाददाता

चान्हो/मांडर। मांडर प्रखंड के केसकानी कुंबा टोली और ढवठा टोली में धूमकुरिया, चिंगरी तथा कुरकुरा में तालाब वहीं चान्हो के तरंगा में तालाब का जीर्णोद्धार व गहरीकरण कार्य का शिलान्यास बुधवार को किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में पहुंचे पूर्व मंत्री बंधु तिर्की ने नारियल फोड़कर व शिलापट्ट का अनावरण कर शिलान्यास किया। इस दौरान बंधु तिर्की ने कहा कि इस तालाब का जीर्णोद्धार व गहरीकरण होने से आसपास क्षेत्र के लोगों को काफी लाभ मिलेगा। साथ ही यहां के किसानों को खेतों में सिंचाई करने में भी काफी सुविधा होगी। आगे कहा कि साथ ही सरकारी और निजी पुराने तालाबों का भी जीर्णोद्धार व गहरीकरण का कार्य तेजी से किया जा रहा है। इसके अलावा विभाग द्वारा छोटी-बड़ी कई सिंचाई योजनाओं को भी धरातल पर लाने का प्रयास किया जा रहा है। आने वाले समय में क्षेत्र के हर किसानों की खेत में सिंचाई के लिए बिजली व पानी पहुंचाया जाएगा। मौके पर तरंगा अंजुमन कमेटी के सदर जावेद खा, पंचायत समिति सदस्य, तबरेज खान, मोहसिन खान, ज्ञान खान, रामचन्द्र मुंडा, अफरोज अंसारी, इस्तेयाक अंसारी, इदरीस अंसारी, नौसद मियां समेत दर्जनों लोग उपस्थित थे।

उपायुक्त ने की शांति एवं सौहार्दपूर्ण माहौल में होली मनाने की अपील

बिभा संवाददाता

लातेहार : जिला दंडाधिकारी सह उपायुक्त श्री उत्कर्ष गुप्ता के द्वारा लातेहार वासियों को हर्षोल्लास, भाईचारगी व शांतिपूर्ण माहौल में होली का त्योहार मनाने की अपील की गई।

उपायुक्त श्री उत्कर्ष गुप्ता ने कहा कि रंगों के पर्व होली को शांतिपूर्ण संपन्न करने के लिए जिला व पुलिस प्रशासन ने तैयारी को अंतिम रूप दे दिया है। इस पर्व की संवेदनशीलता को देखते हुए पर्याप्त संख्या में दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारियों की प्रतिनियुक्ति की गई है। जिले के संवेदनशील स्थानों को चिन्हित कर लिया गया है और चिन्हित स्थानों पर विधि व्यवस्था बनाए रखने को लेकर जिला प्रशासन व पुलिस के वरीय पदाधिकारी को जिम्मेवारी सौंपी गई है। संवेदनशील स्थानों पर समुचित संख्या में मजिस्ट्रेट, पुलिस पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की गई है। अनुमंडल पदाधिकारी, लातेहार एवं महुआडांड़ अपने-अपने क्षेत्रान्तर्गत विधि-व्यवस्था संधारण हेतु वरीय पदाधिकारी के रूप में प्रतिनियुक्त रहेंगे। क्यूआरटी टीम को भी हमेशा सक्रिय रहने का निर्देश दिया गया है।

उपायुक्त ने युवाओं को सचेत करते हुए कहा कि किसी भी भ्रामक खबर या अफवाह को बिना पुष्टि किए आगे न बढ़ाएं। यदि कोई संदिग्ध जानकारी मिलती है तो उसे पहले संबंधित प्रशासनिक अधिकारी, थाना प्रभारी, बीडीओ या सीओ से सत्यापित करवाएं। उपायुक्त ने कहा कि त्योहारों के दौरान जिला कंट्रोल रूम सक्रिय रहेगा, जिससे कि किसी भी समस्या का समाधान तुरंत किया जा सके। किसी भी प्रकार की सहायता के लिए या आपात स्थिति में सूचना देने के लिए जिले स्तर पर 24 घंटे कार्यरत कंट्रोल रूम नंबर 06565-247981 पर अथवा कंट्रोल रूम के मोबाइल नंबर 08987796308 पर कॉल कर सूचना को साझा किया जा सकता है। साथ ही साईबर सेल के मोबाइल नंबर 6206159795 पर अथवा 112 पर कॉल कर सूचना साझा कर सकते हैं। साथ ही सभी बीडीओ और सीओ को अपने क्षेत्रों में 24 घंटे एंबुलेंस, आवश्यक जीवन रक्षक दवा की उपलब्धता सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया हैं।

जनजातीय समुदाय में प्राचीन परम्परा है फाग काटना

ब्रजेश कुमार (बिभा)

खूँटी । जिले में जनजातीय समुदाय का होली आने के पहले फाग काटना प्राचीन परम्परा रहा है। जिसमें सेमल, डोका, हुपु, बुरकुण्डा जैसे कंटीले पेड़ों की डालियों को चौराहे पर गाड़कर नियम धर्म पूर्वक काटा जाता है। जो फाल्गुन के अंतिम दो दिन पहले से यह परम्परा शुरू हो जाता है। जिसमें दो दिन फाग काटा जाता है पहला दिन छोटा फाग और दूसरा दिन बड़ा फाग। तब फिर शुरू होता है फगुआ। फिर जिस दिन यानि चैत्र माह का पहला होली होता है उस दिन जनजातीय समुदाय के लोग हरवे हथियार लेकर शिकार खेलने जंगल जाते हैं। वहीं होली के दूसरे दिन क्षेत्रीय सामान्य वर्ग के लोग शिकार खेलने जाते हैं। गोवर्धन सिंह मानकी ने बताया कि जनजातीय समुदाय में फाग काटने की परम्परा प्राचीन है। जिसमें फाल्गुन पुर्णिमा के एक दिन पहले चतुर्दशी तिथि को छोटा फाग काटा जाता है। जिसमें पुरुष नहा धोकर जंगल जाकर कंटीले पेड़ की डालियाँ लाते हैं। और फिर अखरा या चौराहे के पास से लेकर जल स्थल के पास तक डालियों को जगह जगह गाड़ते हुए लाएंगे। वहीं दूसरे दिन यानि फाल्गुन पूर्णिमा की रात को फाग काटने की परम्परा होती है। जिसे बड़ा फाग कहते हैं। फाग काटने से पहले चंडी जयार में काला मुर्गा की बलि दी जाती है। फिर नाच-गान करते हुए और डालियों को काटते हुए गीत गा-गाकर नाच-गान किया जाता है। बिरसा मुण्डा ने बताया कि गाँव के बीच मुख्य फाग स्थल पर गाड़े गये कंटीले डाली विशेष कर सेमल पेड़ की डाली में पुआल आदि देकर जलाया जाता है। फिर जलते हुए डाली को फिर तलवार फरसा आदि से काटा जाता है। और उसके राख से मूँछ बनाया जाता है। जिससे राक्षसी प्रवृति पर अपनी विजय माना जाता है। फिर रातभर शुरू हो जाता है नाच-गान और फाग काटने की खुशी देखने को मिलती हैं। ये मात्र उल्लास नहीं बल्कि एक आस्था भी है। जहाँ राक्षसी प्रवृति का नाश करना। यहाँ यह मान्यता है कि जंगल में राक्षस इन्हीं पेड़ों का सहारा लेकर समाज को परेशान करते थे। जिससे मानव जाति ही नहीं सभी लोगों का नाश करते थे। जिसे एकजुटता के साथ उसे जनजातीय समुदाय की रक्षा के लिए देवताओं ने उसे मार डाला था। जिस ऐतिहासिक आस्था के नाम से प्रत्येक वर्ष फाग काटा जाता है। वहीं राजेश नाग ने बताया कि छोटा फाग और बड़ा फाग काटने के बाद चैत्र माह के पहले दिन लोग जंगल जाते हैं और शिकार करके लाते हैं। फिर जब शिकार करके पुरुष घर लौटते हैं तो बहनें भाई का पैर धोती है। फिर पैर धोने के बाद ही भाई बहनों को उपहार स्वरूप उसकी खुशियाँ के लिए उपहार देते हैं। तब घर के अंदर प्रवेश करने की परम्परा है।

नगर पंचायत के शहरी अस्पताल अर्बन पीएचसी में हमेशा चिकित्सक नदारद

बिभा संवाददाता

खूँटी । नगर पंचायत क्षेत्र के अर्बन पीएचसी अस्पताल के चिकित्सक हमेशा गायब रहने से मरीजों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं हमेशा ही अनुपस्थिति का विवाद में रही चिकित्सका बुधवार को फिर अनुपस्थित रही। जिससे अस्पताल में आये मरीजों को काफी समस्या हुई। वहीं चिकित्सका मरीजों को उपचार करने के बजाय अस्पताल नहीं पहुँचकर इधर उधर रही। जिसके कारण अस्पताल में हुआ हंगामा की जानकारी सिविल सर्जन को मिली तो उन्होंने अर्बन अस्पताल में 12 बजे एक सहायक चिकित्सक को भेजे। और इधर, चिकित्सका को बुलवाये और फटकार लगाया। उन्होंने बताया कि चिकित्सका यहां आयी थी उसे फटकार लगाये हैं। उसको हिदायत दिया गया है कि ड्यूटी देना है तो समय से दे। ड्यूटी का समय 09 बजे से 03 बजे तक है। वहीं मरीजों ने बताया कि रोजा कि समय है और अभी नौ बजे से पंक्ति में खड़े हैं। लेकिन कोई उपचार नहीं हुआ। वहीं कई मरीजों ने अपनी व्यथा सुनाई। वहीं अस्पताल मैनेजर ने बताया कि अस्पताल में चिकित्सक कभी के रहने का समय सुबह 09 बजे से 03 बजे तक हज पर कभी भी चिकित्सका अस्पताल में समय से उपस्थित होकर ड्यूटी नहीं की। इधर , नौ बजे से चिकित्सक के इंतिजार में परेशान मरीजों को काफी दिक्कत हुआ।

संक्षिप्त खबरें

भारथी ग्रुप ऑफ इंस्टीच्यूशन में होली मिलन समारोह का आयोजन

मांडर(बिभा)। प्रखण्ड स्थित कन्दरी में बुधवार को भारथी ग्रुप ऑफ इंस्टीच्यूशन के अतंगर्त भारथी कॉलेज ऑफ नर्सिंग एवं सतीश कुमार सिन्हा मेमोरियल कॉलेज ऑफ नर्सिंग के परिसर में होली मिलन समारोह का आयोजन धुमधाम से किया गया। साथ की फूड फेस्टिवा एवं बी०एससी० नर्सिंग 2020-24 एवं जी०एन०एम० 2021-24 के फेयरवेल का भी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय के सचिव श्री नितिन परासर एवं शैक्षणिक सचिव डा० दीपाली परासर शामिल हुए। शैक्षणिक सचिव दीपाली पराशर ने होली की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रेम व सदभावना का यह त्योहार हर धर्म, सम्प्रदाय और जाति के बंधन को खोलकर भाईचारे का संदेश देता है। इसलिए हम सभी को आपसी सौहार्द्र के साथ इस पर्व को मनाने का प्रयास करना चाहिए। प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा होली के अवसर पर संगीत कार्यक्रम एवं स्वादिष्ट भोजनों के स्टॉल लगाए गए जो सभी के आर्कषण का केन्द्र बना रहा। इससे लोगों में भाईचारे की भावना को बढ़ावा मिला। इस अवसर पर नर्सिंग कि प्राचार्या श्रीमति निहारिका श्रीवास्तवा एवं बी०एड एवं नर्सिंग के व्याख्यातागण शामिल हुए।

सरसों कार्यक्रम में सफलता पूर्वक किसान दिवस का आयोजन

चान्हो(बिभा) : प्रखण्ड स्थित बुधवार को सुक्रहुत्तु गाँव, पंचायत लुंडारी,पंचायत के शुकुर हुतु गांव में चान्हो मुख्यालय में आयोजित सी एफ एल डी सरसों कार्यक्रम में 40 एकड़ क्षेत्र में नई मस्टर्ड किस्म 'बिरसा भाभा मस्टर्ड 1' के साथ-साथ कृषि उत्पादों एवं तकनीकों का डेमोन्स्ट्रेशन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों में नवीन कृषि तकनीकों का परिचय कराना और सरसों की खेती में उत्पादन वृद्धि एवं एरिया विस्तार के नए अवसर प्रदान करना था। कार्यक्रम का सफल संचालन बीटीएम श्री जनक सिंह एवं एफपीओ चान्हो बिरसा मुंडा संगठन प्रोड्यूसर कंपनी के सीईओ श्री जितेंद्र साहू, श्री महादेव ओराव, श्री मिर्जा ओराव एवं श्रीमती सुस्माही टोपो समेत प्रगतिशील किसानों द्वारा किया गया। कार्यक्रम न केवल किसानों के लिए उन्नत कृषि तकनीकों एवं नवीन किस्मों का परिचय लेकर आया है, बल्कि सरसों की खेती में उत्पादन वृद्धि एवं आर्थिक समृद्धि की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ है। भविष्य में ऐसे प्रयास क्षेत्रीय कृषि विकास को और मजबूती प्रदान करेंगे।

मांडर महाविद्यालय में अभाविप के नेतृत्व में होली मिलन समारोह आयोजित

मांडर(बिभा) : मांडर महाविद्यालय के ग्राउंड में आज अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के नेतृत्व में छात्र-छात्राओं एक दूसरे अबीर गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दी । घंटों तक छात्रों ने पारंपरिक गीतों पर नृत्य किया, कार्यक्रम का आगाज शिक्षकों ने छात्रों को गुलाल लगाकर किया एवं तत्पश्चात छात्रों ने शिक्षकों को गुलाल लगाकर उनसे आशीर्वाद लिया । मांडर कॉलेज एडमिशन इंचार्च डॉ.पवन ने छात्रों को संदेश दिया कि पारंपरिक और सभ्यता के तहत होली मनाना चाहिए,यह आपसी सद्भावना का त्यौहार है इसे मिलजुल कर मनाना है एवं वर्तमान युवा पर्व के नाम पर फूहड़ता एवं नशा के शिकार हो जाते हैं यह युवाओं को बबार्दी ओर धकेलता है इस तरह के कुसंस्कृति से युवाओं को बचाना चाहिए। मौके पर महाविद्यालय के सभी शिक्षक सहित सैकड़ो की संख्या में छात्र उपस्थित रहे। इस आयोजन में परिषद के आदर्श प्रसाद ,राहुल ठाकुर रोहित साहू ,दीपक सिंह रोहित लोहरा, पवन साहू, बिट्टू सिंह, अमन सिंह, अनिकेत सिंह, रोहित करमाली, कमलेश सिंह, पंकज महतो सहित अन्य छात्रों का योगदान रहा।

तसलीम खाँ व शुभम कुमार बने अवर निरीक्षक

रामगढ़(बिभा): पुलिस मुख्यालय, झारखण्ड, राँची का कार्यालय आदेश ज्ञापांक- 294 / पी0, दिनांक- 06 मार्च 25 के माध्यम से झारखण्ड पुलिस के विभिन्न जिलों के कुल 52 आशु सहायक अवर निरीक्षक को आशु पुलिस अवर निरीक्षक के पद पर प्रोन्नति प्रदान किया गया है। जिसमें रामगढ़ जिला के कुल 02 आशु सहायक अवर निरीक्षक को आशु पुलिस अवर निरीक्षक की कोटि में प्रोन्नति प्रदान किया गया है। नव प्रोन्नत आशु पुलिस अवर निरीक्षक मो० तसलीम खाँ, आशु पुलिस अवर निरीक्षक शुभम कुमार, रामगढ़ जिलाबल का पीपिंग समारोह पुलिस अधीक्षक कार्यालय, रामगढ़ सभागार में आयोजित किया गया, जिसमें नवप्रोन्नत पदाधिकारियों को अजय कुमार पुलिस अधीक्षक, रामगढ़ द्वारा स्टार लगाकर प्रोन्नति के लिए बधाई दी गई तथा भविष्य में लग्न एवं मेहनत से और अच्छे कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया गया साथ ही उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई ।

संक्षिप्त खबरें

सैकड़ों लोगों ने झामुमो का दामन थामा

रांची(बिभा): हरमू स्थित केंद्रीय कार्यालय (कैंप) में झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के निति-सिद्धांत, पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष श्री शिबू सोरेन के मार्गदर्शन एवं पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष श्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व पर आस्था व्यक्त करते हुए पार्टी के केंद्रीय महासचिव विनोद कुमार पांडेय के समक्ष धनबाद जिला के संयोजक प्रमुख लखि सोरेन, संयोजक मन्नू आलम एवं मुकेश सिंह के उपस्थिति में धनबाद जिला से सैकड़ो लोग पार्टी में शामिल हुए। इस अवसर पर पार्टी के केंद्रीय महासचिव विनोद कुमार पांडेय जी ने सभी को पार्टी का अंगवस्त्र पहना कर पार्टी में शामिल किया।

गेस्ट फैकल्टी का प्रतिनिधिमंडल ने एनएसयूआइ प्रदेश उपाध्यक्ष को मांग पत्र सौंपा

रांची(बिभा) : रांची विश्वविद्यालय नेट उत्तीर्ण कक्षा आधारित शिक्षक (गेस्ट फैकल्टी) का प्रतिनिधिमंडल ने एनएसयूआइ प्रदेश उपाध्यक्ष अमन अहमद को अपना पूरा 50 पन्ना का दस्तावेज सहित मांगपत्र सौंपकर भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन का गेस्ट फैकल्टी शिक्षकों के हित में सहयोग मांगा और संघ के अध्यक्ष अरविंद प्रसाद ने कहा कि हमे पूर्ण उम्मीद है छात्रहित के लिए एनएसयूआई गेस्ट फैकल्टी शिक्षकों के साथ खड़ी रहेगी और हम लोगों का सहयोग करेगी । एनएसयूआई प्रदेश उपाध्यक्ष अमन अहमद ने कहा कि छात्रहित के मामलों को एनएसयूआइ प्राथमिकता के साथ सदैव तात्पर्य उठाती रही है, निश्चित तौर पर जब कॉलेजो में शिक्षक होंगे तभी पाठन पाठ प्रक्रिया सुचारू रूप से चलेगा । अमन अहमद ने गेस्ट फैकल्टी संघ को आश्वस्त किया कि हम मामले की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने बाद इस मामलों को गंभीरतापूर्वक राज्य सरकार एवं विवि प्रशासन के समक्ष रखेंगे एवं छात्रहित, शिक्षकहित में राज्य सरकार द्वारा उचित निर्णय लिया जाएगा ।

श्री गणेश हर्बल मेडिसिन स्टोर का उदघाटन

रांची(बिभा) : गणेशजी हर्बल, आर एस टावर,लेडी केसी मेमोरियल राय के सामने, रांची का विधिवत उदघाटन फीता काट किया गया. मौके पर संचालक दिनेश कांवटिया ने कहा की नारी घर की मुस्कान है. उन्होंने कहा की महिला की सुंदरता एक शक्तिशाली ऊर्जा है। यह ऊर्जा परिवार को मजबूत बनाती है, समाज का निर्माण करती है और अंततः राष्ट्र को सशक्त बनाती है। इसी सोच से प्रेरित होकर, ब्रांड गणेशजी हर्बल के तहत तैयार किए गए हर्बल उत्पादों के माध्यम से महिलाओं की सुंदरता को और अधिक निखारने के लिए समर्पित हैं। गणेशजी हर्बल सरकार द्वारा प्रदत्त झारखंड के हर्बल कॉस्मेटिक मैन्युफैक्चरिंग लाइसेंस के तहत कार्यरत है, जो गुणवत्ता और विश्वास सुनिश्चित करता है। सभी वर्गों के लिए किफायती, उत्पाद मात्र 20 से शुरू होते हैं, जैसे बादाम और हल्दी का फेस वॉश। प्रति उपयोग सिर्फ आरएस 1.80 की लागत में, यह हर किसी के लिए बेहतर और अधिक चमकदार रूप का वादा करता है। कानवतिया स्वयं हरबल कॉस्मेटिक्स के अनुभवी हैं एवम्-मात्र आरएस 20/- में परामर्श देते हैं।

एसबीयू के विद्यार्थियों ने किया उषा मार्टिन लिमिटेड का किया दौरा

रांची(बिभा) : सरला बिरला विश्वविद्यालय के बीटेक (छठे और आठवें सेमेस्टर), डिप्लोमा (छठे सेमेस्टर) तथा ईईई एवं ईसीई के विद्यार्थियों ने औद्योगिक भ्रमण के तहत रांची स्थित उषा मार्टिन लिमिटेड का दौरा किया। इस भ्रमण के दौरान छात्रों को कंपनी के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। 1960 में स्थापित इस कंपनी ने अपनी अत्याधुनिक निर्माण सुविधाओं और वैश्विक वितरण केंद्रों में आधुनिक तकनीक को अंगीकृत कर सशक्त वैश्विक उपस्थिति दर्ज की है। दुनिया की सबसे बड़ी वायर रोप निर्माण इकाइयों में से एक ऊषा मार्टिन कंपनी सौ एकड़ से अधिक क्षेत्र में फैली हुई है। अत्याधुनिक और उच्च-क्षमता वाली मशीनों से सुसज्जित इस कंपनी में उत्पादित वायर रोप्स का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों जैसे ऑयल एंड ऑफशोर, माइनिंग, क्रेन, लिफ्ट, एरियल रोपवे, निर्माण, मछली पकड़ने आदि में किया जाता है। भ्रमण के दौरान उषा मार्टिन लिमिटेड के जीएम-कापोरेंट अफेयर्स, सीएसआर और ईएसजी एवं मीडिया रिलेशंस डॉ. मयंक मुरारी, डिप्टी जीएम-एचआरडी श्री अरविंद कुमार और सुरक्षा प्रमुख श्री अरमान ने छात्रों को कंपनी की प्रोफाइल, वैश्विक उपस्थिति, निर्माण प्रक्रिया और सीएसआर गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। विजिट के दौरान एसबीयू के विद्यार्थियों के साथ विवि के डॉ. दुर्गेश कुमार, डॉ. शुभम सहाय, डॉ. राहुल प्रकाश और ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट के श्री अमित नाथ चरण उपस्थित रहे।

राज्यपाल संतोष गंगवार से राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष ने की मुलाकात

रांची(बिभा) : राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से आज राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष ए०पी० सिंह ने राज भवन में शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर राज्यपाल को सिंह ने झारखण्ड राज्य के पांचवे वित्त आयोग का प्रथम प्रतिवेदन समर्पित किया।

होली को लेकर केन्द्रीय शांति समिति की बैठक

किसी भी तरह की अफवाहों से दूर रहें, पुलिस-प्रशासन को दें जानकारी :डीसी

बिभा संवाददाता

रांची : रंगों के त्योहार होली को लेकर उपायुक्त-सह-जिला दण्डाधिकारी, रांची श्री मंजूनाथ भजन्त्री की अध्यक्षता में केन्द्रीय शांति समिति की बैठक आयोजित की गयी। रांची समाहरणालय ब्लॉक-बी स्थित कमरा संख्या-505 में आयोजित बैठक में डीआईजी-सह-वरीय पुलिस अधीक्षक, रांची श्री चंदन सिन्हा, अनुमंडल पदाधिकारी सदर एवं बुण्डू, पुलिस अधीक्षक यातायात, पुलिस अधीक्षक ग्रामीण, अपर जिला दंडाधिकारी (विधि-व्यवस्था), जिला नजारत उप समाहर्त्ता संबंधित पुलिस पदाधिकारी एवं शांति समिति के सदस्य उपस्थित थे। बैठक में सौहार्दपूर्ण वातावरण में होली का पर्व मनाने की बात कही गयी।

बैठक के दौरान शांति समिति के सदस्यों ने रमजान के दौरान होलिका दहन एवं सांप्रदायिक सौहार्द के साथ होली मनाने की बात कही। समिति के सदस्यों द्वारा आपराधिक प्रवृति के लोगों पर कार्रवाई करने, रैश ड्राइविंग पर लगाम लगाने सहित कई बातें रखी गयी। उक्त बिन्दुओं पर शांति समिति के सदस्यों ने बारी-बारी से सुझाव भी दिये।

उपायुक्त-सह-जिला दण्डाधिकारी श्री मंजूनाथ भजन्त्री ने कहा कि होली को लेकर जिला प्रशासन पूरी तरह से सतर्क है। शांति समिति के सदस्यों को विधि व्यवस्था से संबंधित कोई भी जानकारी मिलती है तो इसकी जानकारी दें। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने वाले मैसेज फारवर्ड न करें, साइबर सेल द्वारा सोशल मीडिया पर कड़ी नजर रखी जा रही है। उन्होंने रांचीवासियों से अफवाहों से भी बचने की अपील की। इसके अतिरिक्त उपायुक्त-सह-जिला दण्डाधिकारी श्री मंजूनाथ भजन्त्री द्वारा होली के दौरान पानी, बिजली, साफ-सफाई एवं आवश्यक स्थानों पर एंबुलेंस की व्यवस्था सुनिश्चित किये जाने की भी बात कही।

उपायुक्त-सह-जिला दण्डाधिकारी श्री मंजूनाथ भजन्त्री ने कहा कि शांति समिति के सदस्यों के सुझावों को नोट किया गया है, होली में जिला प्रशासन का बेहतर से बेहतर व्यवस्था देने का प्रयास होगा। उन्होंने शांति समिति के सहयोग की सराहना करते हुए कहा कि जिस तरह से दुर्गा पूजा में सभी का सहयोग मिलाा उसी तरह होली एवं रमजान के साथ आने वाले त्योहार रांचीवासी एवं समिति के सहयोग से शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न होंगे।

उपायुक्त-सह-जिला दण्डाधिकारी श्री मंजूनाथ भजन्त्री ने कहा कि केन्द्रीय शांति समिति के साथ नये सदस्य भी जुड़ेंगे। जिला प्रशासन द्वारा संबंधित थाना एवं सीओ को इस संबंध में पत्र दिया गया है, वेरिफिकेशन कराकर समिति से अन्य सदस्यों को जोड़ने का कार्य किया जायेगा। उन्होंने कहा कि शांति समिति के सदस्यों के लिए आई कार्ड भी जारी किया जायेगा। उपायुक्त-सह-जिला दण्डाधिकारी श्री मंजूनाथ भजन्त्री ने कहा कि समिति से महिलाएं भी जुडें।

सामाजिक सौहार्द बिगाड़नेवालों की खैर नहीं - डीआईजी-सह-एसएसपी

शांति समिति की बैठक के दौरान डीआईजी-सह-वरीय पुलिस अधीक्षक श्री चंदन सिन्हा ने कहा कि हमारा देश तुलसी, कबीर, नानक, रसखान का देश है, रांची की संस्कृति, तहजीब में भाईचारा है, हमेशा की तरह इस बार भी रांची वासी सौहार्दपूर्ण वातावरण में मिलजुल कर रमजान और होली मनायेंगे। उन्होंने कहा कि शांति समिति के सदस्य इस बात का ध्यान रखें कि छोटी बात बड़ी न हो, कम उम्र के बच्चे गलती करते हैं तो उसे बढ़ने न दें। वहीं उन्होंने सख्त लहजे में कहा कि सामाजिक सौहार्द बिगाड़नेवालों की खैर नहीं, पुलिस ऐसे लोगों से कड़ाई से निपटेगी। उन्होंने कहा कि होली के दौरान जिला में पर्याप्त सुरक्षा बलों की तैनाती रहेगी, सभी संवेदनशील स्थानों पर पेट्रोलिंग की व्यवस्था होगी।

मयंक सिंह और राहुल सिंह करेंगे अमन साव गिरोह का संचालन

बिभा संवाददाता

रांची। गैंगस्टर अमन साव के एनकाउंटर के बाद अब मयंक सिंह और राहुल सिंह उसके गिरोह का संचालन करेंगे। इस संबंध में अमन साव गिरोह के मयंक सिंह ने सोशल मीडिया पर बुधवार को एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर यह जानकरी दी है।

जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा है कि अब गैंग का संचालन मयंक सिंह और राहुल सिंह करेंगे। गैंग से जुड़े सभी लोगों और बॉस अमन साव से व्यक्तिगत रूप से जुड़े हुए सभी लोगों को यह बताना चाहता हूं कि आपलोगों को किसी प्रकार की चिंता नहीं करनी है। बॉस अब हमारे बीच नहीं रहे, लेकिन उनका साथ हमेशा हमारे साथ और हमारे ऊपर बना रहेगा।

प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि अमन साहू का जेल के अंदर रहना जैसे हमारे लिए कमजोरी थी। उसके ठीक उल्टा अब हमलोग उनके कारण और भी दिव्य, गंभीर और शक्तिशाली बन गये हैं। हमें अपने भाई अमन साव पर गर्व है कि उसने जीते जी पूरे तंत्र को हिला रखा था। इस बात का भी गर्व है कि पूरे सिस्टम का मालिक होने के बाद भी विरोधियों को हमारे भाई को साजिश रचकर मारना पड़ा।

उल्लेखनीय है कि पलामू पुलिस के अनुसार अमन साव को 11 मार्च की सुबह करीब 09.30 बजे आतंकवाद निरोधी दस्ता (एटीएस) सेंट्रल जेल रायपुर से एनआईए कोर्ट रांची में पेशी के लिए सेंट्रल जेल होटवार ला रही थी। इसी दौरान पलामू के चैनपुर थाना और रामगढ़ थाना के बोर्डर पर चैनपुर थाना अंतर्गत अंधारी ढोढा घाटी में जंगल का फायदा उठाते हुए अमन साव के गुर्गों ने अमन साव को पुलिस के गिरफ्त से छुड़ाने के लिए बम फेकते हुए पुलिस पार्टी पर फायरिंग करने लगे। इसी बीच अफरा तफरी के माहौल का फायदा उठाते हुए अमन साव एक जवान का हथियार छिन कर गाड़ी से उतर कर फायरिंग करते हुए भागने लगा। फायरिंग के दौरान एक जवान के जांघ में गोली लग गई। इसके बाद एटीएस ने आत्मरक्षा में जबाबी कार्रवाई किया इसी क्रम में अमन साव मारा गया और उसके गुर्गे फायरिंग करते हुए जंगल का फायदा उठा कर वहां से भागने में सफल रहे।

अमन साव गिरोह के तीन अपराधी गिरफ्तार

रांची। झारखंड की राजधानी रांची की पुलिस ने अमन साव गैंग के तीन अपराधियों को बीती रात गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार अपराधियों में सिकिदरी थाना क्षेत्र के अजय सिंह,रातू थाना क्षेत्र के समीर कुमार बाग्ची उर्फ कुल्लू बंगाली और मांडर थाना क्षेत्र के वसीम अंसारी शामिल है। इनके पास से एक पिस्टल, मैग्जीन, दो गोली, दो देशी कट्टा, दो गोली और एक बाइक बरामद किया गया है। डीएसपी अमर कुमार पांडेय ने बुधवार को बताया कि सात मार्च को कोयला व्यवसायी विपिन मिश्रा के ऊपर फायरिंग की गई थी। इसके बाद रांची पुलिस ने कई टीमों का गठन कर संगठित अपराधियों के खिलाफ एक साथ सघन छापेमारी अभियान चलाया। इस दौरान अमन साव गैंग के तीन सदस्यों को अवैध आग्नेयास्त्र एवं गोली के साथ पकड़ा गया है, पकड़े गए सभी अपराधकर्मियों का पूर्व अपराधिक इतिहास रहा है। उन्होंने बताया कि अजय सिंह के खिलाफ विभिन्न थानों में 14 से अधिक मामले दर्ज है। जबकि समीर कुमार बाग्ची उर्फ कुल्लू बंगाली पर पूर्व से तीन से अधिक मामले दर्ज है। वसीम अंसारी पे० जमरूद्दीन अंसारी के खिलाफ विभिन्न थानों में चार मामले दर्ज हैं।

रांची पुलिस ने बाइक चोर गिरोह का भंडाफोड़ किया, छह गिरफ्तार

बिभा संवाददाता

रांची। रांची पुलिस ने एक बड़े बाइक चोर गिरोह का पदार्फाश करते हुए छह आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जिनमें दो नाबालिग भी शामिल हैं। गिरफ्तार किए गए अपराधियों में सुभाष उरांव, भागीरथ कुमार, संतोष लकड़ा, अमन कुमार के अलावा दो नाबालिग लड़के शामिल हैं।

पुलिस के अनुसार, डीआईजी सह एसएसपी चंदन सिन्हा को गुप्त सूचना प्राप्त हुई थी कि अरगोड़ा थाना क्षेत्र में एक बाइक चोर गिरोह सक्रिय है। इस सूचना पर कार्रवाई करते हुए पुलिस की टीम ने इस क्षेत्र में छापेमारी की और चोरी की चार बाइकों के साथ इन छह आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

गिरफ्तारी के बाद, पुलिस पूछताछ कर रही है और आरोपियों से कई अहम जानकारी मिलने की संभावना जताई जा रही है। गिरफ्तार चोरों की निशानदेही पर एसएसपी डीएसपी हटिया के नेतृत्व में कई अन्य टीमों का गठन कर छापेमारी की जा रही है।

मतदाता पहचान पत्र के लंबित आवेदनों का जल्द से जल्द करें डिस्पोजल : के. रवि कुमार

बिभा संवाददाता

रांची। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने कहा है कि मतदाता पहचान पत्र से संबंधित सभी आवेदनों को ससमय निष्पादित करें। उन्होंने कहा कि किसी भी मतदाता को मतदाता पहचान पत्र पंजिकरण से संबंधित कोई शिकायत न रहे। श्री कुमार आज सभी जिलों के उप निर्वाचन पदाधिकारी एवं निर्वाचन कार्यालय के डाटा इंट्री ऑपरेटरों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से समीक्षा बैठक कर रहे थे।

श्री कुमार ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग का सख्त निर्देश है कि मतदाता पहचान पत्र बनाने में जीरो एरर के लक्ष्य से कार्य करना है। उन्होंने कहा कि विगत के चुनावों में मतदाता सूची के निर्माण एवं मतदाताओं के पंजिकरण के लिए बेहतर कार्य हुए हैं। उस कार्यप्रणाली को अभी भी एक्टिव रखें ताकि ससमय मतदाताओं के समस्याओं का निराकरण होता रहे। उन्होंने एनजीएसपी पोर्टल पर किसी भी मतदाता के शिकायत पेंडिंग न रहे सभी शिकायतों का ससमय निराकरण करते हुए संबंधितों को सूचित करें।

इस अवसर पर संयुक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री सुबोध कुमार, सहायक मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री देव दास दत्ता, अवर निर्वाचन पदाधिकारी श्री सुनील कुमार सहित वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से सभी जिलों के उप निर्वाचन पदाधिकारी एवं निर्वाचन से संबंधित पदाधिकारी उपस्थित रहे।

द इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया में होली मिलन समारोह का आयोजन

बिभा संवाददाता

रांची : द इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (क्छअक), रांची शाखा द्वारा होली मिलन समारोह का आयोजन द कॅव्स, हरमू रोड, रांची में किया गया। इस कार्यक्रम में शहर के प्रतिष्ठित चार्टर्ड एकाउंटेंट्स और उनके परिवारों ने भाग लिया और रंगों के इस पर्व का आनंद लिया।

समारोह में इंस्टिट्यूट के पदाधिकारियों द्वारा उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया गया और इस अवसर पर होली की शुभकामनाएं दी गईं। कार्यक्रम में सदस्यगण अपने साथी पेशेवरों से मिलने, आपस में बातचीत करने और एक दूसरे के साथ अच्छे संबंध बनाने का अवसर पाकर प्रसन्न थे।

इस आयोजन का उद्देश्य पेशेवरों को एक मंच प्रदान करना था, ताकि वे एक दूसरे के साथ रिश्ते मजबूत कर सकें और साथ ही साथ इस पारंपरिक भारतीय उत्सव का आनंद उठा सकें। इंस्टिट्यूट के रांची शाखा के अध्यक्ष सीए.अभिषेक केडिया ने इस अवसर पर कहा, ₹हमें गर्व है कि हम इस तरह के सामाजिक आयोजनों का हिस्सा बन सकते हैं। यह हमें एकजुट करता है और हमारे पेशेवर संबंधों को और भी मजबूत करता है।

इस होली मिलन समारोह में रंग, उमंग और खुशी का माहौल था, जहां सभी ने एक-दूसरे के साथ मिलकर होली की शुभकामनाएं दीं। इस कार्यक्रम ने पेशेवरों के बीच दोस्ती और सहयोग के एक नए अध्याय की शुरूआत की।

इस कार्यक्रम के आयोजन में इंस्टिट्यूट के रांची शाखा के उपाध्यक्ष सीए अनीश जैन, सचिव सीए बी के ठाकुर, कोषाध्यक्ष सीए विवेक खोवाल, कार्यकारिणी सदस्य सीए दिलीप कुमार, सीए हरेन्दर भारती और सीए निशांत मोदी का महत्वपूर्ण भूमिका थी।

प्रदेश शौंडिक संघ एवं इस्कॉन ग्रुप के संयुक्त तत्वाधान में होली मिलन समारोह आयोजित

बिभा संवाददाता

राँची : झारखंड प्रदेश शौंडिक संघ के प्रदेश मुख्यालय शौंडिक भवन शौंडिक धर्मशाला परिसर में प्रदेश शौंडिक संघ एवं इस्कॉन ग्रुप के संयुक्त तत्वाधान में पुष्प फूलों की होली मिलन समारोह मनाया गया। प्रदेश शौंडिक संघ के अध्यक्ष दिनेश प्रसाद साहु ने बताया कि इस धार्मिक अनुष्ठान जैसे फूलों पुष्पों कि होली कार्यक्रम में इस्कॉन ग्रुप के वृन्दावन धाम से चल कर वरिष्ठ संन्यासी परम पूज्य भक्ति आश्रय वैष्णव स्वामी महाराज जी, साथ ही रांची इस्कॉन मंदिर संचालन के मुख्य संरक्षक मधुसूदन मुकुंद दास जी महाराज का शुभ आगमन अरूणदेव जी जैसे अनुयायि के सहयोग से हुआ महाराज जी द्वारा विशेष कथा एवं वृंदावन से पधारे संन्यासियों ने अपने भक्तिमय कीर्तन मंडली के प्रस्तुति भक्तों माताओं बुजुर्गो बहनों के बीच रखा जहां नाच गान से अति उत्साहित श्रद्धालुओं ने खूब आनंद लिया। कार्यक्रम स्थल पर राष्ट्रीय महिला आयोग भारत सरकार की सदस्य ममता कुमारी बतौर मुख्य अतिथि झारखंड प्रदेश शौंडिक संघ मुख्यालय शौंडिक भवन में शामिल हुई। झारखंड प्रदेश शौंडिक संघ के अध्यक्ष दिनेश प्रसाद साहु, महामंत्री उमेश साहु प्रदेश उपाध्यक्ष सह प्रवक्ता एवं राष्ट्रीय संयोजक मंडली के सदस्य बीरेंद्र साहु, मुख्य संरक्षक उदय शंकर प्रसाद साहु,संरक्षक कुमुद प्रसाद साहु उर्फ मंटू बाबू, अरुण गुप्ता, धीरज प्रसाद साहु, प्रदेश कार्यक्रम प्रभारी उदय साहु, अरुण देव कुमार, ने बताया कि इस्कॉन अंतराष्ट्रीय ग्रुप द्वारा लगातार तीन दिनों तक आज 12 मार्च को झारखंड प्रदेश शौंडिक संघ रांची के मुख्यालय शौंडिक भवन में 13 मार्च दिन गुरुवार को पंच देव मंदिर पहन टोली बढ़गाई रांची, 14 एवं 15 मार्च को इस्कॉन मंदिर लेक एवेन्यू काके रोड में फूलों पुष्पों कि होली मिलन का कार्यक्रम जारी रहेगा। रांची में पहली बार इस्कॉन अंतराष्ट्रीय ग्रुप एवं सामाजिक संगठन प्रदेश शैंडिक संघ द्वारा संयुक्त तत्वाधान सहयोग से आयोजित पुष्प फूलों की होली मिलन समारोह कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान महाप्रसाद एवं झारखंडी व्यंजनों का वितरण किया गया।

कार्यक्रम स्थल पर फूलों पुष्पों कि होली के रंग अपनों के संग में प्रदेश शौंडिक संघ के प्रदेश कार्यसमिति सदस्यों के साथ ही विभिन्न सामाजिक संगठनों से अनेक सामाजिक कार्यकर्ता, माताएं बहने मौजूद होकर पुष्पों फूलों की होली का आनन्द लिए।पुष्पों फूलों के होली के रंग अपनों के संग ।

15 दिवसीय ईद एक्सपो का आयोजन 17 मार्च से 31 मार्च तक

बिभा संवाददाता

रांची : झारखंड की राजधानी राँची में पिछले वर्ष के आयोजन मे सफलता मिलने और स्टॉल धारको एव जनता की जबर्दस्त डिमांड के बाद दुसरी बार लगया जा रहा है. यह ईद एक्सपो रिसालदार शाह बाबा मजार कमिटी और पुलिस पब्लिक रिपोर्टर के सयुंक्त प्रयास से लगाया जा रहा है. प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए दरगाह कमेटी और पुलिस पब्लिक रिपोर्टर की टीम ने सयुक्त रूप से बताया, इस 15 दिवसीय ऐतिहासिक ईद एक्स्पो बाजार, जिसका आयोजन 17 मार्च से 31 मार्च 2025 या ईद चाँद रात तक रांची के डोरण्डा स्थित रिसालदार बाबा उर्स मैदान मे आयोजित किया जा रहा है, जहाँ 100 से ज्यादा सभी तरह के स्टॉल लगाए जा रहे है।

इस अवसर पर दरगाह कमिटी, पुलिस पब्लिक रिपोर्टर टीम और डोरंडा थाना प्रभारी दीपिका प्रसाद द्वारा संयुक्त रूप से ईद एक्सपो के कई प्रचार वाहन को रवाना किया गया।

इस अवसर पर सदर मोहम्मद अयूब गद्दी, सचिव जावेद अनवर, कोषाध्यक्ष जैनुल आबेदीन, उपाध्यक्ष मोहम्मद रिजवान, मोहम्मद बिलाल, सह सचिव जुल्फिकार अली भुट्टो, दरगाह कमेटी के सदस्य आसिफ नईम, नजजू अंसारी, खालिक गद्दी, एजाज गद्दी, शंपा गद्दी, अनिस गद्दी, आजाद गद्दी, अस्सु गद्दी मेला के प्रायोजक पुलिस पब्लिक रिपोर्टर मोहम्मद शाहिद खान, समीर हेजाजी,सरफराज कुरैशी, संदीप कुमार मिश्रा, असगर एजाज, इबरार गद्दी, रोहित पांडे, प्रियंका सिंह आदि उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

रोटरी क्लब चास ने बेसहारा बच्चों के साथ मनाई होली

बोकारो (बिभा): बच्चों के चेहरे पर मुस्कान और हंसी लाना सबसे नेक कार्य है। रोटरी क्लब के सदस्यों ने सहयोग विलेज में बच्चों के साथ होली मनाई। रोटरी क्लब के अध्यक्ष बिनोद चोपड़ा ने कहा सहयोग विलेज के बच्चों के साथ होली मनाना एक बहुत ही नेक और खुशी देने वाला कार्य है। इससे न सिर्फ बच्चों को खुशी मिलती है बल्कि आपके अंदर भी संतोष और आनंद का एहसास होता है। रोटरी क्लब चास के सचिव मुकेश अग्रवाल ने कहा कि गुलाल से बच्चों के साथ रोटरी सदस्यों ने होली खेली तथा बच्चों ने आपस में एक दूसरे को अभी लगाकर उत्साह का प्रदर्शन किया। दीवा बैद के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में बच्चों के लिए स्वादिष्ट खाने एवं मिठाई के पैकेट के साथ कॉपी, पेन, चॉकलेट और बिस्किट के पैकेट वितरित किए गए। कार्यक्रम को सफल बनाने में ललिता चोपड़ा, पूजा बैद, डिंपल कौर, ज्योति अग्रवाल, भाग्यश्री बैद, श्रुति बैद, मनोज सिंह, विजय अग्रवाल, प्रेम शंकर सिंह, अर्चना सिंह, नरेंद्र सिंह, डॉ श्रवण, किरण कुमार, पूर्वी केजरीवाल, रितु अग्रवाल का सराहनीय योगदान रहा।

सुकन्या सामाजिक जन सहयोग फाउंडेशन ट्रस्ट कमेटी ने मनाया होली मिलन समारोह

बोकारो(बिभा) : संस्था के प्रधान कार्यालय में मनाया गया होली मिलन समारोह ₹ महिलाओं को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर एवं शिक्षा, स्वास्थ की दिशा में लगातार कार्य कर रही सामाजिक संस्था सुकन्या सामाजिक जन सहयोग फाउंडेशन ट्रस्ट कमेटी के संस्थापक सह सचिव अमल दास जी के उपस्थिति में हर साल की भाती इस साल भी आज संस्था के प्रधान कार्यालय कुंवर सिंह कॉलोनी चास में संस्था के सभी सदस्यों ने मिल कर होली मिलना समारोह मनाया गया । अमल दास जी सभी को बताया कि होली एक भाई चारा के पर्व है और होली के दिन एक दूसरे को अबीर गुलाल लगा कर मानते है। संस्था के पदाधिकारी भी एक दूसरे को अबीर लगा कर होली मिलन समारोह मनाया गया। वहा उपस्थित सभी को अमल दास जी ने बताया कि संस्था 2019 से चंदनकियारी के एक सुदूर गांव पोलकिरी से सुरु करते हुए आज झारखण्ड के लगभग सभी जिलों में कार्य कर रही है । संस्था के संस्थापक अमल दास ने बताया कि संस्था की मुख्य उद्देश्य गरीब एवं असहाय लोगों को मदद करना और गरीब लड़की के शादी में सहयोग करना है गरीब बच्चो की पढ़ाई में सहयोग कर उनको शिक्षा की रोशनी में जोड़ने का कार्य किया जा रहा है ।मौके में पर जिला प्रभारी अशोक दास, उप जिला प्रभारी श्रीकांत दास, रेणुका बाउरी, अनीता देवी, डिम्पल देवी, अंचल कुमारी, प्रतिमा कुमारी, प्रीति कुमारी, के अलावे जिला के सभी एसोसिएट उपस्थित थे।

होली के पहले बच्चों ने पूल लंच में की मस्ती, शेयरिंग-केयरिंग और एकजुटता का सीखा पाठ

बोकारो(बिभा)। रंगोत्सव होली के पहले डीपीएस बोकारो के नन्हे छात्र-छात्राओं पर मस्ती का रंग खूब चढ़ा। मौका था पूल लंच का, जिसमें विद्यार्थियों ने खेल-खेल में शेयरिंग और केयरिंग के साथ-साथ आपसी एकजुटता बनाए रखने का पाठ सीखा। बुधवार को विद्यालय की प्राथमिक इकाई में आयोजित इस कार्यक्रम में बच्चों ने साथ खेला-कूदा, पूरे उत्साह के साथ अपने-अपने घरों से लाए भांति-भांति के व्यंजनों का आनंद लिया तथा गीत-संगीत पर जमकर धमाल मचाया। इस अवसर पर विद्यालय की सभी कक्षाओं को बच्चों और शिक्षकों ने मिलकर रंग-बिरंगे गुब्बारों और आकर्षक कलाकृतियों से सजाया। गीत-संगीत के बीच पूरा वातावरण उत्सवमय बना रहा। साथ मिलकर बिताए गए खुशियों के इस पल में विद्यार्थियों के शिक्षक भी शरीक हुए। खास तौर से प्राचार्य डॉ. ए. एस. गंगवार ने विभिन्न कक्षाओं में बच्चों संग मिलकर केक काटे और उन्हें इस अवसर की बधाई दी। छात्र-छात्राओं ने भी अपने प्राचार्य का गर्मजोशी से स्वागत किया तथा उन्हें अपने हाथों से तैयार पूल लंच के शुभकामना पत्र भेंट किए। प्राचार्य डॉ. गंगवार ने कहा कि बच्चों में पढ़ाई का तनाव और दबाव न हो तथा उन्हें जीवन में आनंदयुक्त भाव से रहने की प्रेरणा दी जाय, इस दिशा में पूल लंच जैसे आयोजन काफी महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह की गतिविधियां न केवल आनंद और उल्लास लाती हैं, बल्कि आपसी संबंधों को भी मजबूत बनाती हैं। इस आयोजन ने यह गहरी सीख दी कि एकता में ही वास्तविक सार्थकता है और सामूहिकता में जीवन का पूर्ण आनंद मिलता है।

डॉ राजेन्द्र प्रसाद पब्लिक स्कूल में मना होली मिलन समारोह

बोकारो(बिभा) : डॉ राजेन्द्र प्रसाद पब्लिक स्कूल रानीपोखर सेक्टर 9 में होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में प्राचार्य मुकेश कुमार ने कहा रंगो का त्योहार होली को आपसी भाइचारा के साथ खुशीपूर्वक मनाने का संदेश दिया। स्कूल की शिक्षिका व शिक्षक ने एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर खुशी मनाई। मौके पर शिक्षिका स्निग्धा बोस, राखी कुमारी, अनु सिंह, साक्षी कुमारी, प्रीति झा, बबिता कुमारी, ममता कुमारी, माधुरी कुमारी,रीता कुमारी, शुकंतला देवी, संगीता कुमारी, आरती कुमारी, गीता कुमारी शामिल रहे।

उपायुक्त की अध्यक्षता में होली एवं ईद को लेकर बैठक का किया गया आयोजन

सोशल मीडिया पर विशेष निगरानी के साथ चौबीसों घंटे एक्टिव रहेगा कंट्रोल रूम: उपायुक्त

बिभा संवाददाता

देवघर : उपायुक्त-सह-जिला दण्डाधिकारी श्री विशाल सागर की अध्यक्षता में होली एवं ईद के त्यौहार के अवसर पर विधि व्यवस्था व सुरक्षा व्यवस्था को लेकर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक का आयोजन किया गया। इस दौरान उपायुक्त ने जिला, अनुमंडल, प्रखण्ड स्तर के अधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्रों में एक्टिव रहने का निदेश दिया, ताकि सौहार्दपूर्ण वातावरण में त्योहार मनाया जा सके। इसके अलावा उपायुक्त द्वारा अनुमण्डल पदाधिकारी, अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी, सभी थाना प्रभारी, पुलिस निरीक्षक एवं प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, अंचल अधिकारी, को निदेश दिया कि इस वर्ष होली का त्यौहार दिनांक 13.03.2025 से 15.03.2025 तक मनाया जायेगा। ऐसे में होली के मौके पर दण्डाधिकारियों, पुलिस पदाधिकारियों व पुलिस जवानों की तैनाती सादे लिवास में की गयी है, ताकि हुड़दंगियों पर कड़ी निगरानी की जा सके।

इसके अलावे बैठक के दौरान उपायुक्त श्री विशाल सागर ने संबंधित अधिकारी को निदेशित करते हुए कहा कि पर्व त्योहार के अवसर पर विशेष सतर्कता एवं सावधानी बरतने के साथ सभी थाना प्रभारी एवं प्रखण्ड विकास पदाधिकारी व अंचल अधिकारी, अनुमण्डल पदाधिकारी को निदेशित किया गया है कि अपने-अपने क्षेत्रों में होली के अवसर पर शांति व्यवस्था एवं साम्प्रदायिक सद्भावना बनाये रखने हेतु एहतियाति बरतेंगें तथा विशेष निगरानी करेंगें। आगे उपायुक्त ने सभी पदाधिकारियों एवं दंडाधिकारियों को पूरी सतर्कता एवं सजगता के साथ कार्य करने तथा विधि व्यवस्था बिगाड़ने वाले व्यक्तियों को चिन्हित कर उनपर कार्रवाई करने का निर्देश दिया। साथ ही उपायुक्त ने असामाजिक तत्वों पर निगरानी रखने के साथ महिलाओं व बच्चों से छेड़खानी करने वालों को चिन्हित कर कार्रवाई करने का निर्देश दिया। वही पर्व त्यौहार को देखते हुए सिविटीवी कैमरा के माध्यम से निगरानी का निर्देश दिया।

सभी थाना व ओपी में रहेंगे दंडाधिकारी व पुलिस पदाधिकारी

धनबाद (बिभा): होली को शांतिपूर्ण, सौहार्दपूर्ण व हर्षोल्लास के साथ संपन्न कराने के लिए उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी सुश्री माधवी मिश्रा, वरीय पुलिस अधीक्षक श्री हृदीप पी जनार्दनन तथा अपर जिला दंडाधिकारी (विधि व्यवस्था) श्री पीयूष सिन्हा ने संयुक्त आदेश जारी कर जिले को कतरास, धनबाद, चिरकुंडा, तोपचांची, झरिया, गोविंदपुर एवं टुंडी जोन में बांटा है। सभी जोन में जोनल दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी तथा सभी थाना व ओपी में पुलिस पदाधिकारी के साथ दंडाधिकारी मौजूद रहेंगे। साथ ही सभी थाना क्षेत्र में पुलिस का मोटरसाइकिल दस्ता लगातार भ्रमणशील रहेगा। होली के अवसर पर 13 मार्च को दोपहर 2:00 बजे से 16 मार्च की सुबह 6 बजे तक जिला नियंत्रण कक्ष कार्यरत रहेगा। अनुमंडल पदाधिकारी श्री राजेश कुमार जिला नियंत्रण कक्ष के संपूर्ण प्रभार में रहेंगे। जबकि डीएसपी सीसीआर श्री सुमित कुमार पुलिस पदाधिकारी के वरीय प्रभार में रहेंगे। जिला नियंत्रण कक्ष का दूरभाष संख्या 0326 - 2311217, 0326 - 2311807 एवं 112 है। होली के अवसर पर मादक पदार्थ एवं शराब की अवैध बिक्री करने वालों पर कार्रवाई करने के लिए सभी उत्पाद निरीक्षक तथा अवर उत्पाद निरीक्षक कंट्रोल रूम में मौजूद रहेंगे। इससे संबंधित किसी भी प्रकार की शिकायत मिलने पर कंट्रोल रूम से दंडाधिकारी एवं पुलिस के साथ संबंधित स्थल पर पहुंचकर कार्रवाई करेंगे।

अटल बिहारी वाजपेयी की जन्मशताब्दी वर्ष पर भाजपा बोकारो जिला द्वारा सम्मेलन का आयोजन

वाजपेयी के दौर के नेताओं को किया गया सम्मानित

बिभा संवाददाता

बोकारो : भारत रत्न प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य मे आज दीपांजली पैलेस चास में भाजपा बोकारो जिला द्वारा अटल विरासत सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष जयदेव राय व संचालन जिला महामंत्री सह कार्यक्रम के संयोजक संजय त्यागी और धन्यवाद ज्ञापन भाजपा चास दक्षिणी अध्यक्ष विक्की राय ने किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भवनाथपुर के निवर्तमान विधायक सह भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष भानु प्रताप शाही उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी के चित्र पर पुष्पांजलि दीप प्रज्वलित व वन्देमातरम से कार्यक्रम की शुरूआत की।

समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि के रूप में भवनाथपुर के निवर्तमान विधायक सह भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष भानु प्रताप शाही ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी राजनीति के क्षेत्र में अजातशत्रु थे। झारखंड अलग राज्य का निर्माण अटल बिहारी वाजपेयी ने किया। अगर अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री नहीं रहते तो झारखंड अलग राज्य का निर्माण नहीं होता। उन्होंने अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में बोकारो जिले के विभिन्न कार्यकताओं और नेताओं के साथ लगाव रहा उनके साथ में काम करने के अनुभव बोकारो जिले के कई कार्यकताओं घर में उनका भोजन, रात्रि विश्राम व पत्राचार यहां तक अपना 60 वां जन्मदिन करगली गेस्ट हाउस में कार्यकताओं संग मनाए आदि के बारे में बताया। वाजपेयी के दौर के नेताओं को विरासत के तौर पर डॉ प्रहलाद बरनवाल, मधुसूदन सिंह, विनय सिंह, अजीत प्रसाद महतो, श्यामलिका दुबे, आरती राणा, राम प्रवेश सिंह, अरुण वरण सिन्हा, संजय सिंह, सत्यनारायण मोदक, भीगंबर गोराई, संजय सिंह, निमाई महथा, चक्रधर शर्मा, संजय सिंह सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम विनय सिंह, डॉ प्रहलाद बरनवाल ,मधुसूदन सिंह अपने अनुभव को साझा किए। कार्यक्रम में मुख्यरूप से रोहित लाल सिंह, लक्ष्मण नायक, धीरज झा, अर्चना सिंह, शंकर रजक, मुकेश राय, ईशर प्रजापति, अनिल स्वर्णकार, बिक्रम पाण्डेय, चंद्र शेखर महथा, विनोद कुमार रामलाल सोरेन, सुभाष महतो, संजय सिंह, मनोज सिंह, दिलीप श्रीवास्तव, मंटू राय बीरभद्र प्रसाद सिंह, अमर स्वर्णकार, संजय शर्मा, रामाधार यादव, ऋषभ राय, अभिषेक कुमार ध्रुव, माथुर मंडल, ब्रज दुबे, अमर स्वर्णकार, सुजीत चक्रवर्ती, मोहन गोराई, राजू मालाकार, अविनाश सिंह, अशोक महतो, बाटुल प्रामाणिक, अशोक शर्मा विक्रम महतो, सुबोध कुमार, अनीता गुप्ता शंकर सिंह, अरविंद राय, कुलदीप शर्मा, जितेंद्र गोस्वामी , पन्नालाल कांदू, राजेश घोषाल, प्रकाश प्रामाणिक, पंकज सिंह बुद्धेश्वर घोषाल हराधन झरियात, गुलाब महतो, पीयूष गौरव, प्रीति गुप्ता, ममता गोस्वामी, मीनाक्षी देवी, कृष्ण महतो, संदीप महथा, अनिल मुर्मू, आदि लोग मौजूद रहे।

नशीली दवाओं की अवैध बिक्री की सूचना पर प्रशासन हरकत में

बिभा संवाददाता

बोकारो : चास में बाईपास क्षेत्र से भारी मात्रा में कोरेक्स कफ सिरप की अवैध बिक्री की सूचना मिलने पर प्रशासन हरकत में आया। चास एसडीएम प्रांजल डंडा द्वारा की गई जांच के दौरान पाया गया कि विक्रेता की दुकान बंद थी, लेकिन आसपास इस दवा की शीशियाँ बिखरी हुई थीं। यह घटना दशार्ती है कि कोरेक्स जैसी दवाओं का उपयोग नशे के रूप में किया जा रहा है, जिससे यह मामला एक संगठित गिरोह की संलिप्तता की ओर संकेत करता है।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, शराब की बिक्री पर रोक के बाद नशेड़ी अन्य विकल्पों की ओर रुख कर सकते हैं, जिसमें कफ सिरप और अन्य प्रतिबंधित दवाएँ शामिल हैं। प्रशासन इस पर कड़ी नजर रखे हुए है और मेडिकल स्टोर्स को निर्देश दिया गया है कि वे डॉक्टर के लिखे हुए पर्चे पर ही इस दवा की बिक्री करें। इसके साथ ही, सभी दवा विक्रेताओं को रजिस्टर बनाए रखने और समय-समय पर मेडिकल स्टोर्स की जांच करने के निर्देश दिए गए हैं।

हालांकि, कोरेक्स कफ सिरप एक सामान्य दवा है, लेकिन इसका दुरुपयोग समाज के लिए हानिकारक साबित हो सकता है। नशे की बढ़ती प्रवृत्ति युवाओं के भविष्य को खतरे में डाल रही है। प्रशासन और समाज को मिलकर इस समस्या का समाधान निकालना होगा, ताकि अवैध नशे के प्रसार को रोका जा सके और युवाओं को सुरक्षित भविष्य दिया जा सके।

गोल्डी मिश्रा की घर वापसी पर सम्मानः तीरंदाजी एशिया कप में गोल्ड मेडल जीतने पर मिला सम्मान

बिभा संवाददाता

बोकारो : चन्दनकियारी पश्चिमी पंचायत के गोल्डी मिश्रा जी ने थाईलैंड में खेले गए तीरंदाजी एशिया कप में गोल्ड मेडल जीता है, और आज करीब महिने भर बाद घर पहुंचा है, आज जेएलकेएम चन्दनकियारी विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी अर्जुन रजवार जी के नेतृत्व में गोल्डी मिश्रा जी के घर पहुंचकर शाल ओढ़ाकर एवं गुलदस्ता देकर सम्मानित किया गया, एवं उनके पिताजी दुलाल मिश्रा जी को भी माला पहनाकर एवं गुलदस्ता देकर सम्मानित किया गया, अवसर पर श्री रजवार ने कहा कि श्री मिश्रा ने चन्दनकियारी सहित पूरे झारखंड का नाम रोशन किया है, झारखंड सरकार इन्हें सम्मानित कर उचित सम्मान दें ताकि बच्चे खेल के माध्यम से अपने को अपने को निखार सके, खेल से तन मन स्वस्थ रहता है,इस अवसर पर प्रखंड अध्यक्ष बिरु महतो, नाजिर अंसारी, अरूण महतो, शिक्षक दशरथ रजवार, तारिक अजिज, एवं मिश्रा जी के माता-पिता,दादी व अन्य लोग उपस्थित थे।

ओएनजीसी प्रबंधन के खिलाफ विरोध प्रदर्शनः अधिकारी संघ ने चेताया- मांगें पूरी नहीं होने पर आंदोलन तेज होगा

बिभा संवाददाता

बोकारो : ओएनजीसी अधिकारी संघ ने ओएनजीसी प्रबंधन द्वारा जारी एकतरफा आदेश के खिलाफ बड़े पैमाने पर आंदोलन और विरोध प्रदर्शन सफलतापूर्वक किया। इस शांतिपूर्ण प्रदर्शन का आह्वान ओएनजीसी अधिकारी संघ के महासचिव डॉ. पीयूष रंजन दास, महासचिव, और अध्यक्ष श्री जॉर्ज, द्वारा किया गया था।

विरोध प्रदर्शन में सीबीएम परिसंपति बोकारो , दिल्ली, देहरादून, मुम्बई, कोलकाता, राजमुंदरी, चेन्नई, गुजरात, असम, त्रिपुरा, जोधपुर समेत ओएनजीसी के सभी कार्यालयों तथा फील्ड में बड़ी संख्या में कर्मचारियों और हितधारकों ने भाग लिया, जो प्रबंधन के मनमाने निर्णय लेने पर सामूहिक असंतोष का स्पष्ट प्रदर्शन था।

बातचीत और परामर्श के लिए बार-बार अपील के बावजूद, प्रबंधन ने उचित प्रक्रिया को दरकिनार करना चुना, जिससे कर्मचारियों के अधिकारों और हितों को नुकसान पहुंचा। प्रदर्शनकारियों ने इस एकतरफा कार्रवाई पर कड़ी आपत्ति जताई और इसे तुरंत वापस लेने की मांग की।

आंदोलन शांतिपूर्ण रहा, लेकिन अपने रुख पर अडिग रहा, जिसमें प्रतिभागियों ने प्रतीकात्मक प्रदर्शनों के माध्यम से अपनी चिंताओं को व्यक्त किया। शिकायतों और मांगों को उजागर करने वाला एक औपचारिक प्रतिनिधित्व भी संबंधित अधिकारियों को सौंपा गया।

ओएनजीसी अधिकारी संघ ने चेतावनी दी है कि यदि प्रबंधन चिंताओं को दूर करने में विफल रहता है और सार्थक चर्चा शुरू नहीं करता है, तो आने वाले दिनों में विरोध प्रदर्शन की तीव्रता बढ़ जाएगी। परिचालन में किसी भी व्यवधान की जिम्मेदारी पूरी तरह से प्रबंधन की रचनात्मक बातचीत में शामिल होने की अनिच्छा पर होगी।

एसोसिएशन ने ओएनजीसी नेतृत्व से अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करने और सभी हितधारकों के हितों का सम्मान करते हुए निष्पक्ष समाधान की दिशा में काम करने का आग्रह भी किया है।

इससे पूर्व एसोसियेशन के महासचिव डा. पीयूष रंजन दास 4 मार्च को विभिन्न मांगों को लेकर ओएनजीसी के अध्यक्ष एवं सीईओ श्री अरुण सिंह को पत्र भी भेज चुके हैं जिसकी प्रतिलिपि अन्य संबन्धित अधिकारियों को भी प्रेषित की जा चुकी है । लेकिन कोई सकारात्मक हल न निकलने के कारण ओओए का प्रबंधन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करना पड़ा ।

पेट्रोल पंप पर मारपीट का मामला: बोकारो पुलिस ने आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए की छापेमारी, स्थानीय लोगों ने किया प्रदर्शन

बिभा संवाददाता

बोकारो : बोकारो में पेट्रोल पंप पर आपसी विवाद पर हुई झगड़ा। सीसीटीवी में कैद हुई पूरी वारदात। गुस्साए लोगो ने स्थानीय थाना का किया घेराव। पुलिस ने आरोपियों को जल्द गिरफ्तारी करने की मांग की। घटना बोकारो के हरला थाना क्षेत्र के सेक्टर 9 की। पुलिस ने त्वरित करवाई करते हुए आरोपियों की गिरफ्तारी का दिया आश्वासन। पूरी घटना के बारे में बताते चले की बोकारो के हरला थाना क्षेत्र के बसंती मोड स्थित पेट्रोल पंप पर मंगलवार रात एक युवक पर कुछ उपद्रवी तत्वों ने मारपीट की घटना सामने आई। घटना लगभग 9 बजे हुई, जब शराब के नशे में कुछ लोग पेट्रोल भरवाने आए थे। किसी मामूली विवाद के बाद मामला मारपीट तक पहुँच गया। घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई, जिससे पुलिस ने आरोपियों की पहचान कर ली है।

इस घटना के बाद स्थानीय लोग भड़क गए और बुधवार को सैकड़ों की संख्या में हरला थाना सेक्टर 9 में आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर घेराव कर दिया। पुलिस ने मामले की गंभीरता को समझते हुए जगह-जगह छापेमारी शुरू कर दी है और आरोपियों की गिरफ्तारी के प्रयास तेज कर दिए हैं। प्रारंभिक जांच से यह मामला आपसी विवाद प्रतीत हो रहा है। होली के मध्य नजर इस तरह की घटनाएं समाज को अशांत कर देती हैं। स्थानीय लोगो ने आरोपियों को जल्द गिरफ्तारी करने की मांग की। वही पुलिस ने भी जल्द गिरफ्तार करने का दिया आश्वासन।

होली और रमजान आपसी भाईचारे का त्यौहार : टाइगर जयराम महतो

बिभा संवाददाता

बोकारो : रियांश मैरिज हॉल में होली मिलन समारोह जिला कमेटी के द्वारा आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि डुमरी विधायक टाइगर जयराम महतो उपस्थित हुए उन्होंने होली और रमजान की हार्दिक बधाई दी कथा होली और रमजान को भाईचारा के साथ मिलने का संदेश दिया और उन्होंने ज्यादा को चेतावनी दिया कि ज्यादा अगर नियम अनुसार काम नहीं करती है तो सदन में इस विषय को उठाएंगे और जरूरत पड़ने पर अप्रैल माह के किसी भी दिन महा धरना का आयोजन किया जाएगा जिला अध्यक्ष अमरेश कुमार महतो ने कहा की होली और रमजान आपसी भाईचारे का त्यौहार है और ज्यादा की जो भी समस्याएं हैं उसको खत्म करने के लिए कठिन निर्णय लिया जाएगा केंद्रीय प्रवक्ता विजय कुमार सिंह ने कहा कि होली और रमजान की बधाई दी पूर्व चंदनक्यारी प्रत्याशी अर्जुन रजवाल ने भी होली की शुभकामनाएं दी बड़ी उपाध्यक्ष आज हुसैन ने होली को आपसी भाईचारा के साथ मनाने के लिए कहा तथा रीयाडा की समस्याओं पर समाधान करने का निर्णय लिया ।

होली 15 को मनाई जाएगी, आज रात 10.35 मिनट के बाद होगा होलिका दहन

प्रमोद खण्डेलवाल

हजारीबाग : फाल्गुन का महीना आते ही पूरे देश में होली की तैयारियां जोरों पर हैं, और हजारीबाग भी इससे अछूता नहीं है। शहर के बाजारों में होली की रौनक नजर आने लगी है। झंडा चौक,मैन रोड, इंद्रपुरी चौक और अन्य प्रमुख इलाकों करीब 200 से अधिक छोटे बड़े दुकानदारों ने रंग, गुलाल और अबीर की दुकानें सजा ली हैं। इस बार दुकानदारों को उम्मीद है की बीते सालों की तुलना में बिक्री अच्छी होगी, क्योंकि बाजार में ग्राहकों की अच्छी-खासी भीड़ नजर आ रही है.

रंगों से सजा बाजार, ग्राहकों की बढ़ी चहल-पहल

होली का त्योहार नजदीक आते ही शहर के बाजार रंग-बिरंगे गुलाल और अबीर से सज चुके हैं। बाजार में इस बार पारंपरिक गुलाल के अलावा हर्बल और खुशबूदार गुलाल की भी बड़ी वैराइटी उपलब्ध है। इसके अलावा, नेचुरल और स्किन फ्रेंडली रंगों की मांग भी बढ़ रही है, जिससे लोग सुरक्षित और स्वास्थ्यकर तरीके से होली खेल सकें। व्यापारियों का कहना है कि इस बार बाजार में नए और आकर्षक पैकेजिंग वाले गुलाल और रंगों की काफी मांग है। ग्राहक अब केवल सस्ते गुलाल ही नहीं, बल्कि अच्छी क्वालिटी वाले हर्बल गुलाल को भी प्राथमिकता दे रहे हैं। इस बार होली के रंगों की कीमतों में बहुत अधिक वृद्धि नहीं हुई है, जिससे ग्राहकों में उत्साह बना हुआ है। सामान्य गुलाल 35 रु से 100 रु प्रति पैकेट मिल रहा है, जबकि हर्बल और ऑर्गेनिक गुलाल 110 रुपये से 270 रुपये के बीच उपलब्ध है। इसके अलावा, अबीर की कीमत भी 70 रु से 180 रु प्रति किलो के आसपास बनी हुई है। बाजारों में बच्चों और युवाओं के लिए रंग-बिरंगी पिचकारियां भी आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं। दुकानों पर छोटी-बड़ी, प्लास्टिक की विभिन्न डिजाइन की पिचकारियों के अलावा बैकपैक वाटरगन और प्रेशर गन जैसी एडवांस पिचकारियां भी उपलब्ध हैं। इनकी कीमतें 150 रु से शुरू होकर 1000 रु तक जाती हैं। इसके अलावा, होली के थीम पर आधारित रंग-बिरंगी टोपियां, मास्क, चश्मे और विभिन्न प्रकार की होली एक्सेसरीज की भी खूब बिक्री हो रही है।

व्यापारियों को अच्छी बिक्री की उम्मीद

दुकानदारों का मानना है कि इस बार होली की खरीदारी पिछले वर्षों की तुलना में बेहतर रहने वाली है। ग्राहक पहले ही बाजार में उत्साह दिखा रहे हैं,
शहर के प्रमुख दुकानदारों में से एक बंटी जैन ने बताते हैं की पिछले साल की तुलना में इस बार खरीदारी जल्दी शुरू हो गई थी। लोग परिवार के साथ आकर खरीदारी कर रहे थे।

होली 15 मार्च को मनाई जाएगी, आज रात होगा होलिका दहन

शहर के सुप्रसिद्ध आचार्य एवं पुजारी दीपेंद्र नाथ पांडे उर्फ दीपक पांडे ने जानकारी दी की इस वर्ष होलिका दहन आज रात 10:35 बजे के बाद किया जाएगा। उन्होंने बताया कि पूर्णिमा तिथि 14 मार्च को होने के कारण धर्म शास्त्रों के अनुसार होली 15 मार्च को मनाई जाएगी। हिंदू पंचांग के अनुसार कृष्ण पक्ष प्रतिपदा को होली मनाने की परंपरा है, इसी कारण इस बार 15 मार्च को रंगों का त्योहार पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा हजारीबाग में होली की तैयारियां जोरों पर हैं, और बाजारों में रौनक बनी हुई है। रंग, गुलाल, पिचकारियों और अन्य होली सामान की अच्छी मांग देखने को मिल रही है। होलिका दहन के साथ ही होली की मस्ती और उल्लास चरम पर पहुंच जाएगा। इस बार व्यापारियों को उम्मीद है कि खरीदारी बेहतर होगी, और 15 मार्च को पूरा शहर रंगों में सराबोर होगा।

संक्षिप्त खबरें

स्वामी धर्मबंधु कॉलेज ऑफ एजुकेशन मे होली मिलन समारोह का रंगारंग आयोजन

हजारीबाग(बिभा): स्वामी धर्मबंधु कॉलेज ऑफ एजुकेशन में होली मिलन समारोह मनाया गया। इस रंगारंग उत्सव में बीएड सत्र 2024-26 के प्रशिक्षुओं, शिक्षकों और कर्मचारियों ने पूरे उत्साह और उमंग के साथ भाग लिया।कॉलेज की प्राचार्या डॉ. सारिका कुमारी ने इस शुभ अवसर पर सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि ₹होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि यह एकता, सौहार्द, प्रेम और भाईचारे की भावना को बढ़ाता है यह पर्व हमें समाज में आपसी मेल-जोल बढ़ाने और हर तरह की दूरियों को मिटाने की सीख देता है।उप प्राचार्या फौजिया खानम ने प्रशिक्षुओं को प्रेरित करते हुए कहा कि ₹जिस तरह होली के रंग जीवन को आनंदमयी बना देते हैं, उसी तरह शिक्षा और ज्ञान के रंग हमारे भविष्य को उज्ज्वल बना सकते हैं।₹इस उत्सव में छात्रों ने संगीत, नृत्य और हास्य प्रस्तुतियों से समां बाँध दिया। मंच संचालन सहायक प्राध्यापक मनोज कुमार ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्राध्यापिका सुमन कुमारी सहाय के द्वारा दिया गया।इसके बाद सभी ने गुलाल और रंगों से होली खेलकर इस पर्व का आनंद उठाया।कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों के बीच आपसी सौहार्द, प्रेम और एकता को बढ़ावा देना था, जिसे पूरी सफलता के साथ पूरा किया गया। यह आयोजन न केवल रंगों का उत्सव था, बल्कि यह स्नेह, सद्भाव और आपसी मेल-मिलाप का प्रतीक भी बना।

होली पर मिठाइयों की धूम, हजारीबाग के त्रिपाल होटल में उमड़ी भीड़

हजारीबाग(बिभा): होली के शुभ अवसर पर हजारीबाग के प्रसिद्ध त्रिपाल होटल में मिठाइयों को लेकर जबरदस्त क्रेज देखने को मिल रहा है। होटल में ग्राहकों की भारी भीड़ जुट रही है, जिससे मिठाइयों की मांग चरम पर पहुंच रहा है।होटल के संचालक निखिल खंडेलवाल ने बताया कि इस बार होली के लिए गुजिया, चंद्रकला, काजू कतली, ड्राई फ्रूट लड्डू सहित 30 से अधिक प्रकार की मिठाइयाँ विशेष रूप से तैयार की गई हैं। उन्होंने कहा कि शुद्धता और बेहतरीन स्वाद को ध्यान में रखते हुए मिठाइयों को पारंपरिक विधियों से तैयार किया गया है, जिससे ग्राहकों को खास स्वाद का अनुभव हो।इसके अलावा, होली को ध्यान में रखते हुए होटल में मिठाइयों की बुकिंग और बिक्री बढ़ गई है। ग्राहकों की भीड़ को नियंत्रित करने और उन्हें बेहतर सेवा देने के लिए होटल प्रबंधन द्वारा विशेष व्यवस्था की गई है।निखिल खंडेलवाल ने बताया कि इस बार खासतौर पर शुद्ध देसी घी से बनी गुजिया सबसे ज्यादा पसंद की जा रही है। साथ ही, ड्राई फ्रूट लड्डू और चंद्रकला भी ग्राहकों की पसंदीदा मिठाइयों में शामिल हैं।त्रिपाल होटल में होली के इस मिठास भरे माहौल को देखते हुए शहरवासियों में जबरदस्त उत्साह है। होटल प्रबंधन ने ग्राहकों से अनुरोध किया है कि वे समय रहते अपनी पसंदीदा मिठाइयाँ बुक करवा लें, ताकि उन्हें किसी तरह की असुविधा न हो।

ओरिया शिवमंदिर में हनुमान चालीसा पाठ एवं रंगोत्सव होली मिलन समारोह में एकजुटता एवं सामाजिकता का दिया संदेश

हजारीबाग(बिभा): मंगलवार की देर संध्या सदर प्रखण्ड स्थित ओरिया शिवमंदिर प्रांगण में प्रति मंगलवार की तरह सामुहिक हनुमान चालीसा पाठ का आयोजन किया गया। सामुहिक हनुमान चालीसा पाठ में बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित होकर हनुमान चालीसा का पाठ किया। इसके साथ ही हनुमान चालीसा पाठ, संकटमोचन, श्रीराम स्तुति एवं विधिवत आरती किया गया। ग्रामीणों ने सामुहिक हनुमान चालीसा का पाठ कर बल एवं बुद्धि का आशीर्वाद मांगा। साथ ही सुख, समृद्धि एवं खुशहाली की मंगलकामना की। इस दौरान शिवमंदिर प्रांगण में रंगोत्सव होली मिलन समारोह आयोजित हुआ। एक-दुजे को अबीर- गुलाल लगाकर होली की अग्रिम बधाई दी। होली के रंगों की तरह जीवन में खुशियां भरने हेतु प्रार्थना किया। समाज में एकजुटता एवं सामाजिकता का संदेश दिया। आपसी भाईचारगी एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में होली का पर्व मनाने का संकल्प लिया। इस क्रम में भक्ति एवं रंगो की उत्साह का अद्भुत संगम दिखा। वरीष्ठ ग्रामीणों का चरणस्पर्श कर बच्चे एवं युवाओं ने शुभ आशिर्वाद प्राप्त किया। भक्ति एवं उत्साह से ग्रामीण सरोबार रहे। मौके पर विशेष रूप से विनोद कुमार सिन्हा, मोहन साव, बासुदेव साव, अशोक यादव, विजय साव, बबलू यादव, विजय यादव, प्रकाश साव, चंदन कुमार, प्रियांशु कुमार, रवि कुमार, सोनू कुमार, गणेश कुमार, कौलेश्वर यादव, रोहित कुमार, पृथ्वी यदुवंशी, बंटी कुमार, रंजन कुमार, करण कुमार, शिवम कुमार, राज कुमार, मोहित कुमार, रोहित कुमार, मिथलेश कुमार, राहुल कुमार, आकाश कुमार, राहुल कुमार,पीयूष कुमार, नितेश कुमार, ललन कुमार, मोहित कुमार एवं गोलू राणा सहित कई ग्रामीण उपस्थित रहे।

झारखंड कांग्रेस महासचिव विनोद कुशवाहा ने होली का त्योहार प्रेम, सौहार्द और शांति के साथ मनाने की अपील की

हजारीबाग(बिभा): झारखंड कांग्रेस महासचिव विनोद कुशवाहा ने जनता से अपील की है कि वे होली का त्योहार प्रेम, सौहार्द और शांति के साथ मनाएं। उन्होंने कहा कि यह पर्व केवल रंगों का नहीं, बल्कि भाईचारे और आपसी सद्भाव का प्रतीक है। विनोद कुशवाहा ने अपने संदेश में कहा कि होली उत्साह और उमंग का त्योहार है, लेकिन इसे मयार्दा और संयम के साथ मनाना चाहिए। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे किसी भी प्रकार की अफवाहों, भड़काऊ बयानों और असामाजिक तत्वों के बहकावे में न आएं। उन्होंने कहा कि झारखंड सहित पूरे देश में इस समय सामाजिक सौहार्द बनाए रखना बेहद जरूरी है। किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना से बचने के लिए स्थानीय प्रशासन के निदेर्शों का पालन करें और कानून-व्यवस्था में सहयोग दें। कुशवाहा ने कहा कि होली केवल एक धर्म विशेष का नहीं, बल्कि सभी का त्योहार है। इस अवसर पर सभी को एक-दूसरे से मिलकर गिले-शिकवे मिटाने चाहिए और एक नए सिरे से रिश्तों को मजबूत करना चाहिए। उन्होंने खासतौर पर युवाओं से अपील की कि वे होली खेलते समय शालीनता बनाए रखें और किसी भी प्रकार की अनुचित हरकत से बचें।

शांतिप्रिय एवं नशामुक्त होली मानने को लेकर सदर एसडीओ ने लागू की निषेधाज्ञा

सोशल मीडिया में भड़काऊ व सांप्रदायिक मैसेज पर रहेगी प्रतिबंध

बिभा संवाददाता

हजारीबाग: उपायुक्त नैंसी सहाय एवं पुलिस अधीक्षक अरविंद कुमार सिंह, हजारीबाग के आदेश के संयुक्त आदेशानुसार देश के विभिन्न भागों में घटित साम्प्रदायिक घटना एवं पूर्व के वर्षों में जिले में घटित घटना के आलोक में वर्तमान में साम्प्रदायिक स्थिति को देखते हुए होली-2025 को सौहार्दपूर्ण वातावरण में शांतिपूर्वक सम्पन्न कराने हेतु पूरे हजारीबाग अनुमण्डल क्षेत्रान्तर्गत भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा लागू की गई है।अतएव, सदर अनुमंडल पदाधिकारी लोकेश बारंगे ने अपनी प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए हजारीबाग सदर अनुमण्डल क्षेत्रान्तर्गत भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा लागू किया है। होली के दिन किसी भी घातक हथियार, अग्नेयास्त्र, लाठी इत्यादि को लेकर चलने पर प्रतिबंध लागू रहेगा।होली पर्व के अवसर परसोशल नेटवर्किंग जैसे व्हाटसअप, टिवटर, फेसबुक, एवं सोशल मिडिया प्लेटफार्म पर भड़काऊ साम्प्रदायिक मैसेज ऑडियो/विडियो के प्रेषण पर प्रतिबंध। उक्त आदेश का उल्लंघन करने के आलोक में संबंधित व्यक्ति, एडमिन पर सुसंगत धाराओं के अन्तर्गत कार्रवाई की जायगी। होलिका दहन एवं होली कार्यक्रम के दौरान जबरदस्ती न तो किसी को गुलाल रंग लगाया जाय और न ही किसी प्रकार की हुडदंगबाजी की जाय जिससे शांति व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े। होली के दिन शांतिप्रिय और नशामुक्त कार्यक्रम होना चाहिए।दिनांक 13/03/2025 को आयोजित होलिका दहन का कार्यक्रम ऐसे जगह आयोजित हो जो बीजली के पोल, अत्यधिक भीड़-भाड़ वाली जगह से दूर हो।होलिका दहन एवं होली कार्यक्रम को आयोजित करने के दौरान यातायात व्यवस्था को बाधित नहीं किया जाएगा।यह निषेधाज्ञा आदेश सरकारी कार्य हेतु प्रतिनियुक्त पदाधिकारियों/पुलिस चल/सरकारी कर्ममारियों पर लागू नहीं होगा।यह निवेधाज्ञा आदेश शव यात्रा एवं शादी-विवाह में लागू नहीं होगा। यह निषेधाज्ञा आदेश दिनांक 13/03/2025 से 16/03/2025 तक लागू रहेगा। चूंकि नोटिस सभी संबंधित व्यक्तियों को व्यक्तिगत रूप से तामिला करवाना संभव नहीं है। फलस्वरूप एकतरफा आदेश पारित किया जाता है। इसे लागू करने की जिम्मेवारी सभी थाना प्रभारी को होगी। इसे पुलिस उपाधीक्षक/अंचला अधिकारियों/प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं थाना के नोटिस बोर्ड पर प्रदर्शित करना सुनिश्चित करेंगे।

पूर्व सांसद जयंत सिन्हा ने होली मिलन समारोह का किया आयोजन

बिभा संवाददाता

हजारीबाग: हजारीबाग लोकसभा के पूर्व सांसद सह पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री जयंत सिन्हा के द्वारा डेमोटांड स्थित ऋषभ वाटिका के प्रांगण में एक भव्य होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। होली मिलन समारोह के अवसर पर लोकसभा क्षेत्र से सैकड़ो की संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित होकर जयंत सिन्हा को रंग गुलाल लगाकर अपनी खुशी का इजहार करते हुए होली की बधाई दिया। इस समारोह को भव्य तरीके से मनाने के लिए लोकसभा क्षेत्र के स्थानीय कलाकारों के द्वारा होली के सुंदर गीत ढोलक मंजीरे के साथ गाकर उपस्थित कार्यकताओं को भरपूर आनंद दिया। इस अवसर पर हजारीबाग के विशेष पकवान बर्रा, घुसका, कचरी, मालपुआ,दहीबड़ा के साथ स्वादिष्ट भोजन का भरपूर आनंद उठाया। होली मिलन समारोह के अवसर पर जयंत सिन्हा ने उपस्थित कार्यकताओं सहित हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के तमाम देव तुल्य जनता को अपनी शुभकामना संदेश में कहा कि होली रंगों का त्यौहार है, भिन्न-भिन्न रंगों और गुलाल से होली खेली जाती है। सभी की भावना का सम्मान करते हुए अपने खुशी का इजहार करें, किसी की भी भावना को ठेस ना लगे इसका विशेष ध्यान रखें। इस त्यौहार में कोई बड़ा या कोई छोटा नहीं होता है। सारा देश प्यार के रंगों में सारा बोर होता है। हमें भी सबके साथ प्यार से होली मनाना है।

अध्यात्मिक और धार्मिक संस्कार का त्योहार है होली : प्राचार्य

बिभा संवाददाता

हजारीबागः श्री रामकृष्ण शारदा आश्रम शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में होली मिलन समारोह धूमधाम से मनाया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. समाप्ति पॉल ने सभी शिक्षकों एवं छात्राओं के साथ कार्यक्रम की परंपरागत शुरूआत करते हुए स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर दीप प्रज्वलित किया। साथ ही उनके चरणों में अबीर गुलाल लगाए एवं उनकी प्रतिमा पर पुष्प वर्षा की। कार्यक्रम में स्वागत भाषण देते हुए सहायक प्राध्यापक विवेकानन्द पाण्डेय ने चारों युगों का वर्णन करते हुए हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु तथा भक्त प्रहलाद की कथा सुनाई। कार्यक्रम के आरंभ में छात्र-छात्राओं ने श्री सुबोध कुमार दुबे एवं विवेक कुमार के संगत में धमाकेदार होली गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य ने कहा कि अध्यात्मिक और धार्मिक संस्कार का त्योहार है होली । हम अपनी पौराणिक परंपराओं को स्मरण करें और वर्तमान तथा भविष्य को उज्जवल बनाएं। प्राचार्य ने यह संदेश होली के अवसर पर भावी विद्यार्थियों को दिया और होली की ढेर सारी शुभकामनाएं दी।
विधार्थियों में सोनिया परवीन, बादल रंजन, रुबी कुमारी व युगेश कुमार ने एक से बढ़कर एक हास्य व्यंग कविता प्रस्तुत किए। संस्थान के संगीत प्रशिक्षक श्री सुबोध कुमार दुबे ने होली गीत से सबको मंत्र मुग्ध कर दिया। कला एवं शिल्प विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ. तनिमा प्रिया की अगुवाई में चारों हाऊस के छात्र-छात्राओं ने आकर्षक होली कार्यक्रम कार्ड, बुलेटिन बोर्ड, रंगोली तथा मंचीय पोस्टर बनाया। कार्यक्रम संयोजक सहायक प्राध्यापक सुनील कुमार सोनी की देखरेख में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

विश्वकर्मा समाज ने होली मिलन समारोह का किया भव्य आयोजन, सदर विधायक हुए शामिल

हजारीबाग: विश्वकर्मा समाज जिला कमिटी, हजारीबाग द्वारा भाग्यमणि विवाह भवन में होली मिलन समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर समाज के सैकड़ों लोग एकत्र हुए और सौहार्दपूर्ण माहौल में होली की खुशियां बांटी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सदर विधायक प्रदीप प्रसाद शामिल हुए। उन्होंने समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताते हुए कहा कि विश्वकर्मा समाज के लोगों ने हमेशा समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने समाज के हित में हरसंभव सहयोग देने का आश्वासन दिया और सभी को होली की शुभकामनाएं दीं।समारोह में विशेष रूप से उपस्थित प्रदेश अध्यक्ष विकास राणा, जिला अध्यक्ष यदु राणा, जिला सचेतक महावीर राणा, महासचिव बृजलाल लाल राणा, महिला जिला अध्यक्ष मनोरमा राणा सहित समाज के अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे।होली मिलन समारोह के दौरान समाज की उन्नति और संगठन की मजबूती को लेकर विस्तार से चर्चा हुई। वक्ताओं ने कहा कि विश्वकर्मा समाज को संगठित रहकर शिक्षा, रोजगार और सामाजिक उत्थान की दिशा में आगे बढ़ना होगा।
प्रदेश अध्यक्ष विकास राणा ने कहा कि युवा, महिलाओं की भागीदारी पर जोर देते हुए कहा कि शिक्षा और स्वरोजगार के माध्यम से समाज की युवाओं व महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य करना आवश्यक है। वहीं, युवाओं को संगठित करने और उन्हें समाज के विकास से जोड़ने पर जोर दिया। कार्यक्रम के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी हुईं, जिसमें समाज के युवाओं ने होली के पारंपरिक गीतों पर शानदार प्रस्तुतियां दीं। गुलाल और अबीर उड़ाकर सभी ने एक-दूसरे को होली की बधाई दी और भाईचारे का संदेश दिया।समारोह के सफल आयोजन में विश्वकर्मा समाज जिला कमिटी, हजारीबाग के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम का समापन होली की शुभकामनाओं एवं समाज को संगठित रखने के संकल्प के साथ हुआ।

हजारीबाग यूथ विंग ने वृद्धा आश्रम में बुजुर्गों के साथ हर्षोल्लास से मनाया होली महापर्व

बिभा संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग यूथ विंग द्वारा समाज सेवा की अपनी परंपरा को निभाते हुए इस वर्ष भी दीपूगढ़ा स्थित वृद्धा आश्रम में बुजुर्गों के साथ होली महापर्व बड़े ही उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया गया। संगठन के पदाधिकारियों और सदस्यों ने इस अवसर पर बुजुर्गों को केला, सेव, संतरा,जूस, हॉर्लिक्स, बिस्कुट, स्टील थाली, ग्लास, साबुन, सर्फ, दूध, मिक्चर, मूढ़ी सहित आवश्यक वस्तुएं को आकर्षक टोकरी में सजाकर भेंट कीं और उनके साथ स्नेहपूर्वक होली मनाई। इस अवसर पर संस्था के सदस्यों ने होली गीत प्रस्तुत किए, जिससे बुजुर्गों में खुशी की लहर दौड़ गई। सभी ने बुजुर्गों को गुलाल लगाकर उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया बुजुर्गों ने भी सभी उपस्थित लोगों को अपने हाथों से गुलाल लगाया और आशीर्वाद दिया। उनके चेहरे पर खुशी की झलक देखते ही बनती थी। हजारीबाग यूथ विंग के सदस्यों ने संकल्प लिया कि आगे भी ऐसे सेवा कार्यों को निरंतर जारी रखा जाएगा और समाज में बुजुर्गों को उचित सम्मान दिलाने के लिए प्रयास किए जाएंगे।हजारीबाग यूथ विंग के संरक्षक चंद्र प्रकाश जैन ने कहा कि रंगों का यह पर्व तभी सार्थक होता है जब समाज के सभी वर्ग इसमें सम्मिलित हों। बुजुर्गों के आशीर्वाद के बिना यह त्यौहार अधूरा और बेरंग है। उन्होंने समाज के लोगों से अपील करते हुए कहा कि माता-पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ देना एक बेहद दुखद और चिंतनीय स्थिति है। उन्होंने आग्रह किया कि सभी लोग अपने माता-पिता के साथ अधिक समय बिताएं, विशेष रूप से त्योहारों पर, जिससे वे अकेलापन महसूस न करें।हजारीबाग यूथ विंग के अध्यक्ष करण जायसवाल ने कहा की बुजुर्गों की सेवा ही सबसे बड़ा पुण्य कार्य है। हमें उनके अनुभवों से सीखने और उन्हें सम्मान देने की आवश्यकता है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हजारीबाग यूथ विंग ने यह सुनिश्चित किया कि बुजुर्गों को त्यौहार की खुशियों से वंचित न रहना पड़े।इस कार्यक्रम संरक्षक चंद्र प्रकाश जैन, सचिव संजय कुमार, सहसचिव डॉक्टर बी वेंकटेश, उपाध्यक्ष जयप्रकाश खंडेलवाल, कोषाध्यक्ष रितेश खण्डेलवाल, कार्यकारिणी सदस्य विकाश तिवारी,प्रणीत जैन,सत्यनारायण सिंह,सनी देव,शानू सिंह,प्रिंस कसेरा,सिद्धार्थ कुमार उर्फ सिद्धू,नीरज सिन्हा सहित कई लोग मौजूद रहें '.इस कार्यक्रम के माध्यम से हजारीबाग यूथ विंग ने समाज को यह संदेश दिया कि बुजुर्ग हमारे मार्गदर्शक होते हैं और उनकी सेवा करना ही सच्ची समाजसेवा है। हर व्यक्ति को अपने परिवार के बुजुर्गों के प्रति सम्मान और स्नेह प्रकट करना चाहिए और उन्हें कभी अकेला नहीं छोड़ना चाहिए।

रामनवमी संरक्षण समिति ने किया होली मिलन समारोह

आपसी सौहार्द के साथ नशामुक्त होली मनाने का संकल्प लें युवा : प्रशांत कुमार

बिभा संवाददाता

हजारीबाग : रामनवमी संरक्षण समिति हजारीबाग ने बुधवार को मालवीय मार्ग स्थित बड़ा अखाड़ा में भव्य होली मिलन समारोह का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता रामनवमी संरक्षण समिति अध्यक्ष प्रशांत कुमार प्रधान ने किया। होली मिलन समारोह के दौरान होली खेले रघुबीरा अवध में, रंग बरसे, जैसे पारंपरिक गीतों पर संरक्षण समिति सदस्यों ने जम कर मस्ती किया साथ ही साथ एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं दिया वहीं पारंपरिक व्यंजन कचरी, बर्रा, धुस्का, पकौड़ी, मालपुआ का लुफ्त उठाया। होली मिलन समारोह के दौरान रामनवमी संरक्षण समिति अध्यक्ष प्रशांत कुमार प्रधान ने कहा कि हजारीबाग सहित देश के लोगों को होली की शुभकामना देते हुए कहा कि यह त्यौहार आपसी प्रेम का प्रतीक है इसे सौहार्द पूर्वक मनाएं आगे उन्होंने कहा कि हजारीबाग में होली का एक अलग ही उत्साह होता है उसका मुख्य कारण है कि होली के साथ साथ हजारीबाग में राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त रामनवमी का आगाज भी होता है, होली और रामनवमी का त्यौहार आपसी भाईचारे और सौहार्द के साथ मनाएं।इस मौके पर रामनवमी संरक्षण समिति अध्यक्ष प्रशांत कुमार प्रधान, कार्यकारी अध्यक्ष निशांत प्रधान, महंत विजयानंद दास, राजकुमार यादव, पिंटू सिन्हा, राकेश सिन्हा, संजू सिंह, पिंटू पहलवान , भगत कुमार, पवन गुप्ता, कुशल सिन्हा, धर्मेंद्र शुक्ला, राजेश पहलवान , अमरेश सिंह, अनमोल साव, सूरज प्रकाश, ओम प्रकाश गोप, राजेश गोप, बीरू सिंह , अजय दास, शशांक शेखर, संदीप सौरभ, आशीष कुमार सिन्हा ,बबलू गोप सन्नी सिंह, मोहित प्रधान सहित रामनवमी संरक्षण समिति के दर्जनों सदस्यों के साथ साथ पूर्व महासमिति अध्यक्ष सचिव एवं विभिन्न अखाड़ों के अध्यक्ष सचिव व गणमान्य लोग शामिल रहे।

डिजिटल होली में रमती-बसती हमारी युवा पीढ़ी!

सुनील कुमार महला

आज तकनीक का बाजार हमारी संवेदनाओं का अतिक्रमण कर रहा है। आपस में सौहार्द और सद्भावना के साथ मिलकर होली खेलने में जो आनंद है, उस आनंद की अनूभूति वर्चुअल वर्ल्ड में कभी भी संभव नहीं हो सकती है, भले ही तकनीक के क्षेत्र में हम कितनी भी प्रगति और तरक्की क्यों न कर लें। वास्तव में हमें हमारी सनातन संस्कृति, परंपराओं का निर्वहन करते हुए पुनः सात्विक, सादगी भरे त्योहार मनाने की ओर लौटना होगा, तभी हमारी सनातन संस्कृति, संस्कार व त्योहारों को मनाने का सही अर्थ होगा और हम स्वयं को अधिक आनंदित, उल्लास से पूर्ण महसूस कर सकेंगे।

होली रंगों का त्योहार है। इस बार 13-14 मार्च को होली है। हर साल होली का त्योहार चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि को मनाया जाता है। होलिका दहन के दिन को छोटी होली के नाम से भी जाना जाता है। हिंदू पंचांग के अनुसार, फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में होलिका दहन किया जाता है। पाठक जानते होंगे कि हिरण्यकश्यपु के कहने पर होलिका भक्त प्रह्लाद को मारने के लिए अपनी गोद में बैठाकर अग्नि मंय प्रवेश कर गई, लेकिन भगवान विष्णु की कृपा से भक्त प्रह्लाद तो बच गया और होलिका जल गई। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि होली प्राकृतिक व कृत्रिम रंगों से खेली जाती है, समय के साथ होली खेलने के स्वरूप में भी बदलाव आए हैं। समय बदला तो होली त्योहार मनाने का ढंग व स्वरूप भी बदल गया। पहले फाल्गुन के महीना शुरू होते ही चंग, बांसुरी, डफ, ढ़ोल, नगाड़ा, स्वांग निकालना, होली पर धमाल गीत, हुड़दंग बाजी, हंसी-ठिठोली होती थी, आज भी होती है लेकिन पहले की तुलना में काफी कम है। आज का युग सोशल नेटवर्किंग साइट्स का युग है, इंटरनेट, मल्टीप्लेक्स, एंड्रॉयड मोबाइल फोन, लैपटॉप-कंप्यूटर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) या यूं कहें कि सूचना क्रांति, तकनीक और नवाचारों को अपनाने का युग है। ऐसे युग में वर्तमान में हमारी युवा पीढ़ी होली के दिन नशा करने, देर रात्रि तक डीजे पर डांस करने, और फूहड़ तथा पाश्चात्य संस्कृति के गीतों पर एंजॉय करने में ही अपनी वाहवाही समझते है। आज के समय में हमारा देश तेजी से डिजीटलीकरण की ओर अग्रसर हो रहा है। अब होली के दूसरे दिन यानी कि धुलंडी के दिन (रंग खेलने का दिन) भी अपने घरों से बाहर नहीं निकलते हैं। न पहले जैसी हुड़दंग बाजी रही है, न हंसी-ठिठोली और न ही रंग डालने, स्वांग रचने, धमाल गीत गाने जैसी परंपराएं ही अब रहीं हैं। डिजिटल प्रगति के साथ इन सबमें अभूतपूर्व कमी आई है और हमारे तीज-त्योहार भी अब कहीं न कहीं इस अंधी डिजीटलीकरण व्यवस्था में रच-बस से गये हैं। आज सोशल मीडिया जैसे वाटसअप, फेसबुक, एक्स, इंस्टाग्राम पर ही अपने यार-दोस्तोंन, रिश्तेदारों और परिजनों को गुलाल-अबीर (रंग) और रंग-बिरंगी पिचकारी भेज कर होली का डिजिटल आनंद लेते हैं। और तो और किसी मैसेज की भांति ही अब तो तीज-त्योहारों के अवसरों पर मिठाई तक भी सोशल नेटवर्किंग साइट्स के जरिए ही भेज दी जाती है। होली पर भी ऐसा ही कुछ हो रहा है, किया जा रहा है। पाठकों को यह जानकर कोई आश्चर्य नहीं होगा कि अब तो धुलंडी का दिन (रंग खेलने का दिन) बीतने के बाद नहाने तक के लिए साबुन, शैंपू और पानी की बाल्टियां, टब तक भी

डिजीटली ही भेजे जाने लगे हैं। यह बात सुनने में अजीब लग सकती है, लेकिन यह एक कटु सत्य है कि आजकल के सोशल मीडिया और इंटरनेट वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के बढ़ते चलन के साथ, अब ऑनलाइन होली(डिजिटल होली) मनाना आम बात सी हो गई है। आज के समय में रचनात्मक प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया एडिटिंग ऐप रंगों और खुशियों के त्यौहार होली के मौके पर खास स्टिकर्स, ब्रश तथा रिप्ले जारी करने लगे हैं। पिक्स आर्ट अनेक प्रकार के होली स्टीकर्स जारी कर रहा है। आज तो होली खेलने के अनेक एप्स बिखरे पड़े हैं। कोरोना काल में लोग एक दूसरे से दूरी बनाकर मिलने के लिये मजबूर क्या हुए, होली खेलने के अनेक एप्स बाजार में आ गए। आज लोग इन एप्स और स्टिकर्स के जरिये एक दूसरे को डिजिटल अबीर-गुलाल से सराबोर कर रंगों का त्योहार ऐसे मना सकते हैं, जो शायद पहले कभी नहीं मनाया होगा। आज लोग खास मौकों पर डिजिटल माध्यम के जरिये अपने प्रियजनों को बधाई व शुभकामनाएं देने में अपनेपन का एहसास महसूस करने लगे हैं। पिक्सआर्ट के स्टिकर्स, रिप्लेज, मास्क और ब्रश के जरिये रंगों से बिना कोई जोखिम उठाये होली का त्योहार मना सकते हैं। रंगों के इस त्यौहार पर कोई भी अपने प्रियजनों, रिश्तेदारों को अपनी पसंद के रंगीन स्टिकर्स भेजकर, पिचकारी व डिजिटल मिठाई भेजकर होली की बधाई दे सकते हैं। इसका सीधा सा मतलब यह है कि आज के समय में डिजिटल तकनीकों ने सूदूर निवास करने वाले अपने प्रियजनों, रिश्तेदारों के लिए बिना उनसे शारीरिक रूप से(फिजीकली) मिले ही होली के रंग खेलना, शुभकामनाएं व मिठाई भेजना और हंसी-ठिठोली करना संभव बना दिया है। कहना गलत नहीं होगा कि पिक्सआर्ट के साथ आज के इस डिजिटल समय में हम अपनी कल्पनाशीलता से कोई भी तरह का रंगीन डिजाइन बनाकर खुशी, उमंग व पूरे उत्साह व उल्लास के साथ घर बैठे ही होली मना सकते हैं। सच तो यह है कि आज होली ही नहीं हमारे देश के त्योहारों पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स का आक्रमण हो चुका है। आज होली खेलने के लिए न घर से बाहर कहीं मैदान या गली मोहल्लों में जाने की आवश्यकता रही है और न ही कहीं सूदूर क्षेत्र की यात्रा करने की ही आवश्यकता रही है। आज घर पर बैठे-बैठे ही एंड्रॉयड मोबाइल, लैपटॉप हाथ में लेकर होली खेली जा सकती है। सच तो यह है कि डिजिटल क्रांति के इस युग में त्योहार तो क्या हर रिश्ते को एंड्रॉयड मोबाइल, लैपटॉप पर ही निपटा दिया है। डिजिटल क्रांति के इस युग में न तो अब कपड़े धोने का झंझट रहा है और न ही रंगों से स्किन खराब होने का भय। पहले होली के दिन रंग खेलने के लिए लोग सिर्फ अपनी गली मोहल्ले तक ही सीमित थे। आज इंस्टाग्राम, वाट्सएप एवं फेसबुक(सोशल नेटवर्किंग साइट्स) के इस युग में वे घर पर बैठे-बैठे ही मोहल्ला छोड़िए, पूरी दुनिया संग इको फ्रेंडली के साथ-साथ पाकेट फ्रेंडली होली भी मनाने लगे हैं। न हींग लगे और न ही फिटकरी। डिजिटल होली लोगों को असली होली की तुलना में पसंद आने लगी है, लेकिन ऐसा करके हम हमारी त्योहारी संस्कृति, परंपराओं, हमारे सांस्कृतिक विरासत से कहीं न कहीं दूर होते चले जा रहे हैं। आज होली के रंग डिजीटलीकरण में उड़ रहें हैं, वास्तव में धरातल पर नहीं। या यूं कहें कि ग्राउंड में होली कम खेलने को तवज्जो दी जा रही है। बहरहाल, यहां यह कहना बिलकुल भी गलत नहीं होगा कि हमारे आधुनिक जीवन में प्रवेश करने वाली रचनात्मक तकनीक ने हमारे तीज-त्योहारों को मनाने के हमारे तरीकों को भी आज काफी हद तक बदल दिया है। आज डिजिटल रंगोलियां सजाई जाती हैं। वर्चुअली रंग खेले जा रहे हैं, वास्तविक रंगों को स्थान बहुत कम रह गया है। सच तो यह है कि आज के सूचना क्रांति और तकनीक के इस युग में होली के पर्व पर जितनी डिजीटल पिचकारियां चल रही हैं, धरातल पर उसका प्रतिशत बहुत ही कम रह गया है। संक्षेप में कहें तो आज एआई युग में होली जैसे बड़े व पावन त्योहार पर हर कोई असलियत में रंगों से भरी पिचकारी से खेलें या नहीं खेलें, लेकिन सोशल मीडिया पर पिचकारी भर कर अपनों पर खूब रंग बिखेर रहे हैं। अंत में यही कहूंगा कि अगर हमें अपने त्योहारों की पवित्रता बचानी है तो हमें कम से कम इन्हें बाजार पैसे के मकड़जाल, आधुनिकता से बचाकर रखना होगा। त्योहार हमारे देश की संस्कृति और परंपराओं से जुड़े हुए हैं। समय के साथ बदलाव कुछ हद तक ठीक कहें जा सकते हैं लेकिन ये इतने अधिक न हों कि त्योहारों का कोई औचित्य या अर्थ ही न रह जाए। होली के त्योहार पर एक दूसरे के यहां प्रत्यक्ष जाकर आपसी मेलजोल, सौहार्द, सद्भावना, प्रेम, प्यार और रिश्तों की धुरी पर जो रंग लगाए जाते हैं, वे सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर जाकर कभी भी नहीं लगाए जा सकते हैं। वर्चुअल वर्ल्ड, आखिर वर्चुअल वर्ल्ड ही होता है, वहां भावनाएं नहीं होतीं हैं। कहना गलत नहीं होगा कि त्योहार हमारे सांस्कृतिक, पारंपरिक जीवन को हरा-भरा करते हैं। ये हमारी सनातन भारतीय संस्कृति, परंपराओं का अभिन्न हिस्सा ही नहीं, बल्कि हमारी धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय एकता के भी प्रतीक हैं। पर्व किसी भी धर्म या संप्रदाय का क्यों न हो, हम सभी भारतवासी उसे हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। एक-दूसरे को बधाइयां और शुभकामनाएं देते हैं। प्रत्यक्ष बधाई व शुभकामनाएं देना, रंग लगाना एक अलग बात है और वर्चुअली रंग लगाना एक अलग बात है, हमें इस बात को समझना चाहिए। हमें यह याद रखना चाहिए कि घर के बने पकवान और मिष्ठान से जो स्वागत-सत्कार हो सकता है, वह वर्चुअली भेजी गई मिठाई से कभी संभव नहीं हो सकता है। वर्चुअल वर्ल्ड पर बनावटीपन दिखता है, वह वास्तविक वर्ल्ड नहीं है। आज तकनीक का बाजार हमारी संवेदनाओं का अतिक्रमण कर रहा है। आपस में सौहार्द और सद्भावना के साथ मिलकर होली खेलने में जो आनंद है, उस आनंद की अनूभूति वर्चुअल वर्ल्ड में कभी भी संभव नहीं हो सकती है, भले ही तकनीक के क्षेत्र में हम कितनी भी प्रगति और तरक्की क्यों न कर लें। वास्तव में हमें हमारी सनातन संस्कृति, परंपराओं का निर्वहन करते हुए पुनः सात्विक, सादगी भरे त्योहार मनाने की ओर लौटना होगा, तभी हमारी सनातन संस्कृति, संस्कार व त्योहारों को मनाने का सही अर्थ होगा और हम स्वयं को अधिक आनंदित, उल्लास से पूर्ण महसूस कर सकेंगे।

संपादकीय

ठेंगे पर आदेश

सुप्रीम कोर्ट ने दैनिक वेतनभोगियों को नियमित करने के मामले में हाई कोर्ट के आदेश का अनुपालन न करने के मामले में जम्मू-कश्मीर के अधिकारियों की खिंचाई की। इसे हठधर्मिता बताते हुए इस निष्क्रियता को प्रथम दृष्टया अवमाननापूर्ण बताया। अधिकारियों ने मई, 2007 के उच्च न्यायालय के सरल आदेश का अनुपालन करने में 16 साल लगा दिए। पीठ ने हाई कोर्ट की खंड़पीठ द्वारा लगाए गए पच्चीस हजार रुपये के जुमार्ने में हस्तक्षेप करने से भी इंकार करते हुए इसे प्रतीकात्मक ठहराया। ग्रामीण विकास विभाग में 14 से 19 सालों तक काम करने वाले दैनिक वेतनभोगियों को नियमित करने का हाई कोर्ट ने आदेश दिया था। शीर्ष अदालत की पीठ ने कहा- हमें केवल दशकों की देरी की चिंता नहीं है, बल्कि यह निर्विवाद तथ्य भी है कि गरीब प्रतिवादी, दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी होने के कारण याचिकाकताओं द्वारा बारम्बार परेशान किए गए। अदालत ने जुमार्ने को नजीर बताते हुए अधिकारियों पर भारी जुमार्ना लगाने का आदेश दे कर बड़ी चेतावनी दी। कुछ दिन पहले ही श्रीनगर के लाल चौक पर भी दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों ने राज्य सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया था। तमाम नियमों व कानूनों के बावजूद दैनिक वेतनभोगियों व मजदूरों को भुगतान संबंधी दिक्कतों से न केवल जूझना पड़ता है बल्कि उनकी कोई सुनवाई भी नहीं होती। अदालती कार्रवाई में लगने वाले वक्त और धन के कारण भुक्तभोगी आजिज आ जाते हैं। सरकारी लापरवाही और अधिकारियों का रवैया सालों-साल खराब ही होता जा रहा है। बात सिर्फ जम्मू-कश्मीर की नहीं है। इन्हीं हालात से देश भर के दिहाड़ी श्रमिक व कर्मचारी गुजर रहे हैं। केंद्रीय व राज्य श्रम आयोगों के कामकाज व रवैये को लेकर कर्मचारियों में हमेशा रोष नजर आता है, जो अपना कर्त्तव्य निभाने में असफल साबित हो रहे हैं। उस पर अदालतों के आदेशों को लेकर प्रशासन व अधिकारियों की उपेक्षा सरकार के सान्निध्य में आपसी मिली-भगत से जारी रहती है। अधिकारियों पर सरकार का वरदहस्त न हो तो वे अदालत के आदेश को चुनौती देने का साहस नहीं कर सकते। चुनावी भाषणों में दैनिक मजदूरों-कर्मचारियों, बेरोजगारों और रोजगार की तलाश में ठोकरे खाने वालों के पक्ष में घड़ियाली आंसू बहाने वाले राजनेता देश भर के नागरिकों को मात्र दिवास्वप्न दिखाते रहते हैं। यही कारण है कि जनता का विश्वास अब सिर्फ न्याय व्यवस्था पर ही रह गया है।

चिंतन-मनन

जीव परमेश्वर की परा शक्ति

जीव परमेश्वर की परा प्रकृति (शक्ति) है। अपरा शक्ति तो पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि तथा अहंकार जैसे विभिन्न तत्वों के रूप में प्रकट होती है। भौतिक प्रकृति के ये दोनों रूप-स्थूल (पृथ्वी आदि) तथा सूक्ष्म (मन आदि) अपरा शक्ति के ही प्रतिफल हैं। जीव जो अपने विभिन्न कार्य के लिए अपरा शक्तियों का विदोहन करता रहता है, स्वयं परमेश्वर की परा शक्ति है और यह वही शक्ति है जिसके कारण सारा संसार कार्यशील है। इस दृश्य जगत में कार्य करने की तब तक शक्ति नहीं आती, जब तक परा शक्ति अर्थात जीव द्वारा यह गतिशील नहीं बनाया जाता। शक्ति का नियंत्रण सदैव शक्तिमान करता है, अतः जीव सदैव भगवान द्वारा नियंत्रित होते हैं। जीवों का अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। वे कभी भी सम शक्तिमान नहीं, जैसा कि बुद्धिहीन मनुष्य सोचते हैं। श्रीमद्भागवत में जीव तथा भगवान के अन्तर को इस प्रकार बताया गया है- ह्यों परम शात! यदि सारे देहधारी जीव आप ही की तरह शात एवं सर्वव्यापी होते तो वे आपके नियंत्रण में न होते। किन्तु यदि जीवों को आपकी सूक्ष्म शक्ति के रूप में मान लिया जाए, तब वे सभी आपके परम नियंत्रण में आ जाते हैं। अतः वास्तविक मुक्ति आपकी शरण में जाना है और इस शरणागति से वे सुखी होंगे। परमेश्वर कृष्ण एकमात्र नियन्ता हैं और सारे जीव उन्हीं के द्वारा नियंत्रित हैं। सारे जीव उनकी पराशक्ति हैं, क्योंकि उनके गुण परमेश्वर के समान हैं, किन्तु वे शक्ति की मात्रा के विषय में समान नहीं हैं। स्थूल व सूक्ष्म अपरा शक्ति का उपभोग करते हुए परा शक्ति (जीव) को अपने वास्तविक मन तथा बुद्धि की विस्मृति हो जाती है। इसका कारण जीव पर जड़ प्रकृति का प्रभाव है। माया के प्रभाव में अहंकार सोचता है, मैं ही पदार्थ हूं और सारी भौतिक उपलब्धि मेरी है किंतु जब वह सारे भौतिक विचारों से मुक्त हो जाता है, तो उसे वास्तविक स्थिति प्राप्त होती है।

भगवंत मान के लिए जी का जंजाल बनता किसान आंदोलन

पंजाब-हरियाणा के शंभू और खनौरी बॉर्डर पर किसान एक साल से धरने पर हैं और अब पंजाब के सीएम भगवंत मान की टेंशन बढ़ रही है। हालात अब किसान और पंजाब सरकार के बीच टकराव के स्तर पर पहुंच गई है। आम आदमी पार्टी ने किसान आंदोलन को केंद्र की मोदी सरकार के खिलाफ इस्तेमाल किया मगर अब इन्हीं अन्नदाताओं ने पंजाब सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। सीएम भगवंत मान का कहना है कि किसानों ने पंजाब को धरने वाला राज्य बना दिया है। पिछले सोमवार को वह किसान नेताओं की मीटिंग को बीच में ही छोड़कर चले आए। अरविंद केजरीवाल भी इन दिनों पंजाब में विपश्यना कर रहे हैं मगर किसानों की मांगों पर चुप हैं। दिल्ली चुनाव में हार के बाद हालात इतनी तेजी से बदले कि किसानों को दिल्ली में धरने के लिए निमंत्रण देने वाली आम आदमी पार्टी की मान सरकार ने किसानों को चंडीगढ़ में एंट्री नहीं दी।

पंजाब के किसान एमएसपी की गारंटी समेत अन्य मांगों के लिए प्रदर्शन कर रहे हैं। संयुक्त किसान मोर्चा की कई मांगें केंद्र के साथ राज्य सरकार से भी है। शंभू और खनौरी बॉर्डर पर किसानों का धरना एक साल से जारी है। माना जाता है कि पंजाब सरकार आप ने किसानों को दिल्ली का रास्ता दिखाकर आंदोलन को हवा दी थी। आप को उम्मीद थी कि किसान एक बार फिर दिल्ली पहुंचेंगे और केंद्र सरकार की मुसीबत बढ़ जाएगी मगर हरियाणा सरकार ने दोनों बॉर्डर को बंद कर दिया। जानकारों का कहना है कि अगर हरियाणा में सत्ता बदल जाती तो सियासी खेल आसान हो जाता मगर हरियाणा में भाजपा ने हैट्रिक लगा दी और बॉर्डर बंद ही रहा। किसान अभी भी पंजाब की सीमा के भीतर टेंट लगाकर अभी बैठे हैं। अब यह दांव उल्टा पड़ रहा है। किसान कुछ लिए बिना जाना नहीं चाहते, इसलिए किसान केंद्र से पहले पंजाब में किए गए वादों को पूरा करने की मांग कर रहे हैं हालांकि किसानों की केंद्रीय मंत्रियों से भी बातचीत जारी है।

3 मार्च को सीएम भगवंत मान के साथ 40 किसान नेताओं की मीटिंग भी हुई थी जिसमें गन लाइसेंस रिन्यू करना, एग्रीकल्चर पॉलिसी समेत प्रीपेड इलेक्ट्रिक मीटर समेत 18 मांगों पर चर्चा होनी थी। ये सारे मुद्दे पंजाब सरकार से जुड़े हैं। मीटिंग में माहौल इतना तल्ख हो गया कि सीएम भगवंत मान बीच में ही मीटिंग छोड़कर निकल गए। सूत्रों के अनुसार, सीएम मान ने तल्ख अंदाज में कहा कि पहले भी जो मांगे माने गई हैं, वह भी अब रद्द हो गई हैं। बातचीत फेल होने के बाद किसानों ने बुधवार को चंडीगढ़ कूच का ऐलान किया और पंजाब सरकार से चंडीगढ़ के सेक्टर 34 में प्रदर्शन करने की मांग की। दिल्ली में धरने की वकालत करने वाली आम आदमी पार्टी ने किसानों को चंडीगढ़ में एंट्री की इजाजत नहीं दी। प्रदर्शन के दौरान कई किसान नेता गिरफ्तार किए गए। इसके बाद पंजाब में किसानों ने सीएम भगवंत मान के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। किसानों ने आरोप लगाया है कि भगवंत मान सरकार भी वैसा ही व्यवहार कर रही है जैसा केंद्र सरकार करती आ रही है।

सर्व विदित है कि फरवरी 2024 में जब किसानों ने दोबारा दिल्ली मार्च शुरू किया तो अरविंद केजरीवाल ने उनका हर संभव समर्थन किया था। जब उनसे पूछा गया कि किसान दिल्ली ही क्यों जाते हैं तो उन्होंने जवाब दिया था कि किसान दिल्ली नहीं तो क्या लाहौर जाएंगे? उन्होंने दिल्ली कूच के मद्देनजर बवाना स्टेडियम को अस्थायी जेल बनाने के केंद्र सरकार के प्रस्ताव को भी ठुकरा दिया था। इसके बाद केंद्र सरकार ने हरियाणा से दिल्ली तक किलेबंदी की और किसान दिल्ली नहीं आ पाये।

जानकारों का कहना है कि पांच साल पहले जब 2020 में दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल सिंघु बॉर्डर पहुंचे थे। तब उन्होंने कहा था कि वह किसानों के बीच मुख्यमंत्री के तौर पर नहीं बल्कि सेवादार बनकर आए हैं। डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया ने आंदोलन कर रहे किसानों को बिजली, पानी समेत तमाम सुविधाएं दिलाने का वादा किया था और सुविधाएं दी भी थी। राजनीतिक दलों के समर्थन के कारण 2020-21 के बीच किसान 379 दिनों तक दिल्ली में जमे रहे। ट्रैक्टर मार्च निकाला और लाल किले में उपद्रव भी हुए। यह बात अलग है कि इस किसान आन्दोलन से जनता को भारी परेशानियां होने के साथ साथ अरबों रुपयों का नुकसान भी हुआ था। 2022 के पंजाब विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी को दिल्ली में किसानों की सेवा का फल भी मिला। पार्टी शहरी क्षेत्रों के अलावा ग्रामीण इलाकों में विजयी रही हालांकि इस जीत में मुफ्त बिजली, किसानों को लोन माफी और महिलाओं को 1000 रुपये देने जैसे वादों का भी बड़ा रोल रहा था. बताया जा रहा है कि इन वादों को पूरा करने के लिए पंजाब सरकार आज भी बजट का इंतजाम नहीं कर पाई है। अब भगवंत मान सरकार के लिए चुनावी वादे ही गले की हड्डी बन गए हैं। किसानों की मीटिंग से निकलने के बाद भगवंत मान ने कहा कि उनकी सरकार को सिर्फ किसानों का ही नहीं बल्कि सभी 3.5 करोड़ पंजाबियों के हितों का भी ध्यान रखना है। उनका कहना था कि प्रदर्शनों से व्यापारियों, व्यवसायियों, छात्रों, कर्मचारियों एवं आमजन को अत्यधिक परेशानी हो रही है। पंजाब की अर्थव्यवस्था रसातल में जाने के साथ -साथ इसकी पहचान धरने वाले स्टेट की बनकर रह गई है। उनका कहना है कि वे किसानों से बातचीत करने को तैयार है लेकिन उन्हें(किसानों को) अराजकता फैलाने की छूट नहीं दी जा सकती। जानकारों की माने तो दिल्ली में जब अरविंद केजरीवाल की सरकार थी, तब किसान आंदोलन के लिए उन्होंने दिल्ली को केंद्र की भाजपा सरकार के खिलाफ मंच की तरह इस्तेमाल किया था। अब दिल्ली में सरकार बदल चुकी है। हरियाणा सरकार ने भी रास्ता बंद कर दिया है. ऐसे में किसानों के पास चंडीगढ़ में ही आंदोलन का नया स्टेज बनाने की मजबूरी है। अगर चंडीगढ़ में एक बार किसानों का धरना शुरू हो गया तो केंद्र के बजाय भगवंत मान सरकार निशाने पर आ जाएगी। वहां आम लोगों के लिए आंदोलन से होने वाली दिक्कतों का बोझ उठाना भी आसान नहीं है। अब किसान आंदोलन को पहले जैसा राजनेताओं का समर्थन हासिल नहीं है. पंजाब में चुनावी साल होने के कारण किसान आंदोलन का लम्बे समय तक चलना मान सरकार के लिए किसी भी स्तर पर हितकर नहीं है। वैसे भी दिल्ली में आम आदमी की सरकार नहीं रहने से समय - समय पर चिल्लाने वाले नेताओं की आवाज अब बंद हो गई है। यही नहीं, केन्द्र सरकार को कोसने के बहाने जो पार्टियां आप नेताओं को प्रोटेक्शन देती थी, उनके सुरों में भी परिवर्तन देखा जा रहा है। ऐसे में जो कुछ करना होगा, भगवंत मान को ही करना होगा।

- रामस्वरूप रावतसरे

शांत और परोपकारी स्वभाव सुखी जीवन का मूल मंत्र

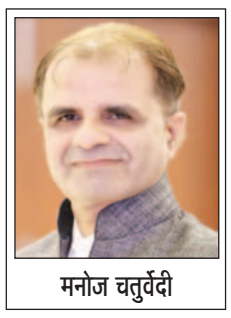

मनोज चतुर्वेदी

भारतीय संस्कृति, सभ्यता के बारे में हमने साहित्य और इतिहास के माध्यम से और भारत माता की गोद में रहकर पारिवारिक संस्कृति, मान सम्मान, रीति- रिवाजों से इसे प्रत्यक्ष महसूस भी कर रहे हैं। परंतु हमारे बड़े बुजुर्गों के माध्यम से हमने कई बार सतयुग का नाम सुने हैं,जिसका वर्णन वेस्वर्गलोक के तुल्य करते हैं। याने इतनी सुखशांति, अपराध मुक्ति, इमानदारी, शांति सरोवर तुल्य, कोई चालाकी चतुराई गलतफहमी या कुटिलता या भ्रष्टाचार नहीं, बस एक ऐसा युग कि कोई अगर कुछ दिन, माह के लिए बाहर गांव जाए तो अपने घरों को ताला तक लगाने की जरूरत नहीं!अब कल्पना कीजिए कि अपराध बोध मुक्त युग!मेरा मानना है कि हमारी पूर्व की पीढ़ियों ने ऐसा युग जिए होंगे तब यह बोध आगे की पीढ़ियों में आया,जिसे सतयुग के नाम से जरूर जाना जाता है।

साथियों बात अगर हम वर्तमान युग पर बड़े बुजुर्गों में चर्चा की करें तो इस इसे कलयुग नाम देते हैं, याने सभी प्रकार के अपराध बोध से युक्त संसार। हर तरह की बेईमानी, भ्रष्टाचार कुटिलता से भरा हुआ युग!आज भी बुजुर्गों का मानना है कि वह सतयुग फिर आएगा,याने आज की तकनीकी भाषा में अपराध मुक्त, भ्रष्टाचार बेईमानी कुटिलता मुक्त पारदर्शिता और अनेकता में एकता वाले भारत की परिकल्पना का युग।

साथियों बात अगर हम अपराध, भ्रष्टाचार, बेईमानी, कुटिलता से भरे जग की करें तो मेरा मानना है कि इसका मुख्य प्रवेश द्वार क्रोध, उत्तेजित स्वभाव व लालच है जिसमें आपराधिक बोध प्रवृत्ति का जन्म होता है और व्यक्ति क्रोध में हिंसा, अपराध, लालच, भ्रष्टाचार, बेईमानी और कुटिलता के अमानवीय कृति और अन्य गलत कार्यों की ओर मुड़ जाता है और आगे बढ़ते ही चले जाता है जब जीवन के असली महत्व का पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। क्रोध की अभिव्यक्ति हमारे अंदर की कुंठा, हिंसा व द्वेष के कारण भी हो सकती है। वर्तमान काल में अपराधों के बढ़ने का एक प्रमुख कारण भीषण क्रोध ही है।क्रोध से उत्पन्न हुएअपराधों के औचित्य को सिद्ध करने के लिए क्रोधी व्यक्ति कुतर्क कर दूसरे को ही दोषी सिद्ध करता है। एक दोष को दूर करने के लिए अनेक कुतर्क पेश करता है। क्रोध में व्यक्ति आपा खो देता है। क्रोध में अंततः बुद्धि निस्तेज हो जाती है और विवेक नष्ट हो जाता है। क्रोध का विकराल रूप जुनून है। आदमी पर जुनून सवार होने पर वह जघन्य से जघन्य अपराध कर बैठता है। जुनून की हालत में उसे मानवीय गुणों का न बोध रह पाता है और न ही ज्ञान। क्रोध मानव का सबसे बड़ा शत्रु है, बहुत बड़ा अभिशाप है।

साथियों बात अगर हम शांत, परोपकारी स्वभाव ही जीवन का मूल मंत्र की करें तोअभिभावकों, शिक्षकों को बच्चों को यह शिक्षा देना है और हम बड़ों को यह स्वतः संज्ञान लेना है कि माचिस की तीली बनने की बजाय शांत सरोवर बनना होगा, जिसमें कोई अंगारा भी फेंके तो स्वयं ही बुझ जाए, बस! यह भाव अगर हम मनीषियों के हृदय में समाहित हो जाए तो यह विश्व फिर सतयुग का रूप धारण करेगा जहां किसी तरह का कोई अपराध बोध या गलत काम का भाव नहीं होगा। सभी मनीषी जीव परोपकारी भाव से युक्त होंगे भाईचारा, प्रेम, सद्भाव की बारिश होगी जहां बिना ताले घरबार छोड़ कहीं भी जाने के भाव जागृत होंगे और हमारे बुजुर्गों का सतयुग रूपी सपना साकार होगा। साथियों बात अगर हम स्वयं को माचिस की तीली याने क्रोधित होने पर विपरीत परिणामों की करें तो, क्रोध मनुष्य को बर्बाद कर देता है और उसे अच्छे बुरे का पता नही चलने देता, जिस कारण मनुष्य का इससे नुक्सान होता है। क्रोध मनुष्य का प्रथम शत्रु होता है। क्रोधी व्यक्ति आवेश में दूसरे का इतना बुरा नहीं जितना स्वयं का करता है। क्रोध व्यक्ति की बुद्धि को समाप्त करके मन को काला बना देता है।

साथियों बात अगर हम क्रोध को नियंत्रित कर समाप्त करने की तकनीकी की करें तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अनुसार क्रोध के नकारात्मक प्रभाव पूरे इतिहास में देखे गए हैं। प्राचीन दार्शनिकों, धर्मपरायण व्यक्तियों और आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतीत होने वाले अनियंत्रित क्रोध का मुकाबला करने की सलाह दी गई है। आधुनिक समय में, क्रोध को नियंत्रित करने की अवधारणा को मनोवैज्ञानिकों के शोध के आधार पर क्रोध प्रबंधन कार्यक्रमों में अनुवादित किया गया है। क्रोध प्रबंधन क्रोध की रोकथाम और नियंत्रण के लिए एक मनो-चिकित्सीय कार्यक्रम है। इसे क्रोध को सफलतापूर्वक तैनात करने के रूप में वर्णित किया गया है। क्रोध अक्सर हताशा का परिणाम होता है,या किसी ऐसी चीज से अवरुद्ध या विफल होने का अनुभव होता है जिसे विषय महत्वपूर्ण लगता है। अपनी भावनाओं को समझना क्रोध से निपटने का तरीका सीखने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है। जिन बच्चों ने अपनी नकारात्मक भावनाओं को क्रोध डायरी में लिखा था, उन्होंने वास्तव में अपनी भावनात्मक समझ में सुधार किया, जिससे बदले में कम आक्रामकता हुई। जब अपनी भावनाओं से निपटने की बात आती है, तो बच्चे ऐसे उदाहरणों के प्रत्यक्ष उदाहरण देखकर सबसे अच्छा सीखने की क्षमता दिखाते हैं, जिनके कारण कुछ निश्चित स्तर पर गुस्सा आया। उनके क्रोधित होने के कारणों को देखकर, वे भविष्य में उन कार्यों से बचने की कोशिश कर सकते हैं या उस भावना के लिए तैयार हो सकते हैं जो वे अनुभव करते हैं यदि वे खुद को कुछ ऐसा करते हुए पाते हैं जिसके परिणामस्वरूप आमतौर पर उन्हें गुस्सा आता है, इसके साथ ही एकांत में जाकर ध्यान के माध्यम से क्रोध के विकारों को नष्ट करने का प्रयास करें तो ऋणात्मक ऊर्जा को मोड़कर हम सकारात्मक ऊर्जा से विवेक सम्मत निर्णय लेने में सक्षम हो सकते हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि शांत, परोपकारी स्वभाव सुखी जीवन का मूल मंत्र है!स्वयं को माचिस की तीली बनने की बजाए शांति सरोवर बनाएं, जिसमें कोई अंगारा भी फेंके तो स्वयं ही बुझ जाए।क्रोध,उत्तेजित स्वभाव,अपराधिक बोध प्रवृत्ति का मुख्य प्रवेशद्वार है अपराध मुक्त भारत के लिए मनीषियों को क्रोध त्यागना प्राथमिक उपाय है।

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

राग-रंग का लोकप्रिय पर्व होली

होली भारत का प्रमुख त्योहार है। होली जहाँ एक ओर सामाजिक एवं धार्मिक त्योहार है, वहीं रंगों का भी त्योहार है। बाल-वृद्ध, नर-नारी सभी इसे बड़े उत्साह से मनाते हैं। इसमें जातिभेद-वर्णभेद का कोई स्थान नहीं होता। इस अवसर पर लकड़ियों तथा कंडों आदि का ढेर लगाकर होलिकापूजन किया जाता है फिर उसमें आग लगायी जाती है। पूजन के समय मंत्र उच्चारण किया जाता है।

होली वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण भारतीय और नेपाली लोगों का त्योहार है। यह पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। रंगों का त्योहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है। यह प्रमुखता से भारत तथा नेपाल में मनाया जाता हैं। यह त्यौहार कई अन्य देशों जिनमें अल्पसंख्यक हिन्दू लोग रहते हैं वहां भी धूम-धाम के साथ मनाया जाता हैं। पहले दिन को होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते है। दूसरे दिन, जिसे प्रमुखत: धुलेंडी व धुरड्डी, धुरखेल या धूलिवंदन इसके अन्य नाम हैं, लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि होली के दिन लोग पुरानी कटुता को भूल कर गले मिलते हैं और फिर से दोस्त बन जाते हैं। एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। इसके बाद स्नान कर के विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं।

राग-रंग का यह लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। राग अर्थात संगीत और रंग तो इसके प्रमुख अंग हैं ही पर इनको उत्कर्ष तक पहुँचाने वाली प्रकृति भी इस समय रंग-बिरंगे यौवन के साथ अपनी चरम अवस्था पर होती है। फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं। होली का त्योहार वसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है। उसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाया जाता है। इस दिन से फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। बच्चे-बूढ़े सभी व्यक्ति सब कुछ संकोच और रूढ़ियाँ भूलकर ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। चारों तरफ़ रंगों की फुहार फूट पड़ती है। होली के दिन आम्र मंजरी तथा चंदन को मिलाकर खाने का बड़ा माहात्म्य है।

विशिष्ट उत्सव

भारत में होली का उत्सव अलग-अलग प्रदेशों में भिन्नता के साथ मनाया जाता है। ब्रज की होली आज भी सारे देश के आकर्षण का बिंदु होती है। बरसाने की लठमार होली काफ़ी प्रसिद्ध है। इसमें पुरुष महिलाओं पर रंग डालते हैं और महिलाएँ उन्हें लाठियों तथा कपड़े के बनाए गए कोड़ों से मारती हैं। इसी प्रकार मथुरा और वृंदावन में भी 15 दिनों तक होली का पर्व मनाया जाता है। कुमाऊँ की गीत बैठकी में शास्त्रीय संगीत की गोष्ठियाँ होती हैं। यह सब होली के कई दिनों पहले शुरू हो जाता है। हरियाणा की धुलंडी में भाभी द्वारा देवर को सताए जाने की प्रथा है। बंगाल की दोल जात्रा चैतन्य महाप्रभु के जन्मदिन के रूप में मनाई जाती है। जलूस निकलते हैं और गाना बजाना भी साथ रहता है। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र की रंग पंचमी में सूखा गुलाल खेलने, गोवा के शिमगो में जलूस निकालने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा पंजाब के होला मोहल्ला में सिक्खों द्वारा शक्ति प्रदर्शन की परंपरा है। तमिलनाडु की कमन पोडिगई मुख्य रूप से कामदेव की कथा पर आधारित वसंतोतसव है जबकि मणिपुर के याओसांग में योंगसांग उस नन्हीं झोंपड़ी का नाम है जो पूर्णिमा के दिन प्रत्येक नगर-ग्राम में नदी अथवा सरोवर के तट पर बनाई जाती है। दक्षिण गुजरात के आदिवासियों के लिए होली सबसे बड़ा पर्व है, छत्तीसगढ़ की होरी में लोक गीतों की अद्भुत परंपरा है और मध्यप्रदेश के मालवा अंचल के आदिवासी इलाकों में बेहद धूमधाम से मनाया जाता है भगोरिया, जो होली का ही एक रूप है। बिहार का फगुआ जम कर मौज मस्ती करने का पर्व है और नेपाल की होली में इस पर धार्मिक व सांस्कृतिक रंग दिखाई देता है। इसी प्रकार विभिन्न देशों में बसे प्रवासियों तथा धार्मिक संस्थाओं जैसे इस्कॉन या वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर में अलग अलग प्रकार से होली के शृंगार व उत्सव मनाने की परंपरा है जिसमें अनेक समानताएँ और भिन्नताएँ हैं।

आधुनिकता का रंग

होली रंगों का त्योहार है, हँसी-खुशी का त्योहार है, लेकिन होली के भी अनेक रूप देखने को मिलते है। प्राकृतिक रंगों के स्थान पर रासायनिक रंगों का प्रचलन, भांग-ठंडाई की जगह नशेबाजी और लोक संगीत की जगह फ़िल्मी गानों का प्रचलन इसके कुछ आधुनिक रूप हैं। लेकिन इससे होली पर गाए-बजाए जाने वाले ढोल, मंजीरों, फाग, धमार, चैती और ठुमरी की शान में कमी नहीं आती। अनेक लोग ऐसे हैं जो पारंपरिक संगीत की समझ रखते हैं और पर्यावरण के प्रति सचेत हैं। इस प्रकार के लोग और संस्थाएँ चंदन, गुलाबजल, टेसू के फूलों से बना हुआ रंग तथा प्राकृतिक रंगों से होली खेलने की परंपरा को बनाए हुए हैं, साथ ही इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान भी दे रहे हैं। रासायनिक रंगों के कुप्रभावों की जानकारी होने के बाद बहुत से लोग स्वयं ही प्राकृतिक रंगों की ओर लौट रहे हैं। होली की लोकप्रियता का विकसित होता हुआ अंतर्राष्ट्रीय रूप भी आकार लेने लगा है। बाज़ार में इसकी उपयोगिता का अंदाज़ इस साल होली के अवसर पर एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठान केन्ज़ोआमूर द्वारा जारी किए गए नए इत्र होली है से लगाया जा सकता है।

होलिका दहन पर भद्रा का साया और होली पर चंद्र ग्रहण, जानिए कब क्या करें?

होलिका दहन के बाद दूसरे दिन होली खेली जाती है जिसे धुलेंडी कहते हैं। धुलेंडी यानी रंगवाली होली। इस बार होलिका दहन और धुलेंडी पर भद्रा के साथ ही चंद्र ग्रहण का योग भी बन रहा है। ऐसे में यह जानना जरूरी है कि होलिका दहन की पूजा कब करें और कब होली खेलें। हिंदू पंचांग अनुसार 13 मार्च 2025 गुरुवार को होलिका दहन होगा और 14 मार्च शुक्रवार को धुलेंडी रहेगी लेकिन क्या है होलिका दहन का मुहूर्त और कब खेलें होली।

पूर्णिमा तिथि प्रारम्भ- 13 मार्च 2025 को सुबह 10:35 बजे से प्रारंभ।

पूर्णिमा तिथि समाप्त- 14 मार्च 2025 को दोपहर 12:23 बजे समाप्त।

भद्रा पूंछ- शाम को 06:57 से रात्रि 08:14 तक।

भद्रा मुख- रात्रि 08:14 से रात्रि 10:22 तक।

दिनांक 14 मार्च 2025 शुक्रवार को सुबह 09:29 बजे से दोपहर 03:29 बजे तक यह पूर्ण चंद्र ग्रहण लगेगा। होलिका दहन और होली पर भारत में चंद्र ग्रहण का प्रभाव नहीं रहेगा क्योंकि यह ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। होली पर चंद्र ग्रहण और सूतक काल का कोई प्रभाव नहीं रहेगा इसलिए धुलेंडी का पर्व मनाया जा सकता है।

13 मार्च 2025 को रात्रि में भद्रा के पूंछ काल में होलिका दहन कर सकते हैं। यदि भद्रा को छोड़ना है तो होलिका दहन श्रेष्ठ मुहूर्त- मध्यरात्रि 11:26 से 12:30 के बीच। इसके बाद दूसरे दिन रंग वाली होली खेल सकते हैं।

होली खेलने से पहले इन बातों का रखें ध्यान!

रंगों और खुशियों के त्योहार होली के रंग में सराबोर होने के लिए घर से निकलने से पहले आपको त्वचा और बालों की सुरक्षा के संबंध में कुछ बातों का ख्याल जरूर रखना चाहिए, जिससे आपको किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़े. त्वचा विशेषज्ञ ने होली खेलने निकलने से पहले त्वचा की देखभाल के संबंध में ये सुझाव दिए हैं -

- कुछ लोग होली खेलने के पहले बाल यह सोचकर नहीं धुलते हैं कि रंग खेलने से बाल गंदे होने ही हैं, लेकिन पहले से गंदे बाल में रंग लगने से आपके बालों को और नुकसान पहुंच सकता है और बाल रुखे हो सकते हैं, इसलिए बाल धुलकर, सुखाने के बाद बालों में अच्छी तरह से तेल लगाकर ही होली खेलने निकलें.
- होली खेलने निकलने से पहले सनस्क्रीन क्रीम लगाना नहीं भूलें, क्योंकि तेज धूप में आपकी त्वचा झुलस सकती हैं और रंग काला पड़ सकता है.
- बाजार में उपलब्ध सिंथेटिक रंगों में हानिकारक केमिकल और शीशा भी हो सकता है, जिससे आपकी त्वचा और आंखों को नुकसान पहुंच सकता है. इसलिए त्वचा और बालों पर अच्छे से तेल लगाएं और हो सके तो प्राकृतिक रंगों या घर पर बने टेसू के फूल वाले रंग से होली खेलें. कानों के पीछे, उंगिलयों के बीच में भी तेल अच्छे से लगाएं और नाखूनों पर नेल पॉलिश लगाना नहीं भूलें. बालों में नारियल तेल डालकर अच्छे से मसाज करें, इससे आपके बाल रूखे भी नहीं होंगे.
- शरीर के अधिकांश हिस्सों को रंगों से बचाने के लिए पूरी आस्तीन के कपड़े पहनें, सूती रंग के ही कपड़े पहनें, क्योंकि भीगने पर सिंथेटिक कपड़े शरीर से चिपक जाते हैं और आपको उलझन महसूस हो सकती है.
- फलों और सब्जियों के छिलकों को सुखाकर उसमें टेल्कम पाउडर और संतरे के सूखे छिलकों के पाउडर को मिलाकर होली खेलना एक अच्छा विकल्प है. इसमें हल्दी पाउडर, जिंजर रूट पाउडर व दालचीनी पाउडर भी मिलाए जा सकते हैं, जो आपकी त्वचा के लिए हानिकारक साबित नहीं होंगे, लेकिन इन पाउडर को जोर से त्वचा पर मले नहीं, क्योंकि इससे लालिमा, खरोंच या दानें पड़ सकते हैं और त्वचा में जलन हो सकती है.
- होली खेलने के बाद सौम्य फेसवॉश या साबुन का ही इस्तेमाल करें, क्योंकि हार्श साबुन से त्वचा रूखी हो सकती है, नहाने के बाद मॉइश्चराइजर और बॉडी लोशन जरूर लगाएं.
- बालों को सौम्य हर्बल शैम्पू से अच्छी तरह से धुलें, ताकि अभ्रक युक्त और केमिकल वाले रंग बालों से अच्छी तरह से निकल जाएं, शैम्पू के बाद बालों का रूखापन दूर करने के लिए एक मग पानी में एक नींबू का रस मिलाकर धुलें या फिर बीयर से भी बाल धुला जा सकता है, इससे आपके बाल मुलायम रहेंगे.

क्या है होली और राधा-कृष्ण का संबंध

होली के पर्व का जिक्र आते ही मन रंगों से खेलने लगता है और प्रेम के इस पर्व में हर कोई राधा व कृष्ण हो जाना चाहता है। आप सोच रहे होगे कि राधा व कृष्ण का होली से क्या नाता है तो आइये जानते हैं। होली और राधा-कृष्ण का क्या संबंध है।

भगवान विष्णु ने जितने भी अवतार धारण किये हैं चित्रों के माध्यम से उन्हें सांवले रंग का दिखाया जाता है और भगवान श्री कृष्ण का तो नाम ही श्याम लिया जाता है। लेकिन उनका यह श्याम रंग बनने की कहानी है। दरअसल जब श्री कृष्ण के मामा कंस ने राक्षसी पुतना को जन्माष्टमी के दिन जन्मे शीशुओं को स्तन से विषपान करवाकर मरवाने के लिये भेजा तो श्री कृष्ण ने विषपान तो किया लेकिन भगवन का क्या बिगड़ना था, पुतना तो मारी गई लेकिन बाल गोपाल विषपान करने से श्याम वर्ण के हो गये। अब उन्हें यह चिंता सताने लगी कि इस श्याम रंग के साथ प्रिय सखी राधा सहित अन्य गोपियां उन्हें भाव नहीं देंगी। गौर वर्णीय राधा को जब भी वे देखते उन्हें स्वयं का श्याम वर्ण होना अखरने लगता। वे इसकी शिकायत अपनी मैया यशोदा से करते हैं वो गीत तो आपने भी सुना होगा यशोमति मैया से बोले नंदलाला, राधा क्यों गौरी मैं क्यूं काला। तो माता उन्हें प्रसन्न करने के लिये सुझाव देती हैं वह भी राधा के मुख पर वैसा ही रंग लगा दे जैसा वे चाहते हैं। बस माता की शय मिलने की देर थी, नटखट श्याम राधा सहित सभी गोपियों को रंगने लग जाते हैं। धीरे-धीरे उनकी यह शरारत फैलने लगती है और ऋतुराज वसंत के इस प्यार भरे मौसम में एक दूसरे पर रंग डालने की यह लीला एक प्रेममयी परंपरा के रूप में हर साल फाल्गुन के महीने में निभायी जाने लगती है। होली के दिनों में मथुरा वृंदावन का नजारा तो आज भी देखते ही बनता है।

क्या है महत्व

वैसे यह श्री राधा व भगवान श्री कृष्ण की होली पर खेली गई यह प्रेम लीला एक प्रतीक भर है कि यह रंग कोई भौतिक रंग नहीं है बल्कि भक्ति का रंग है। भगवान का रंग है, सद्भावना का रंग है, विश्वास का रंग है जिनसे होली खेली जाती है। और जो होली जलाई जाती है वह संदेह की, अंहकार की, वैरभाव की, ईर्ष्या की होली जलाई जाती है जिसके उपरांत ही निष्काम प्रेम की कामना पूर्ण होती है और अपने आराध्य श्री कृष्ण की अपने ठाकुर जी की कृपा प्राप्त होती है।

होली से पहले मुजफ्फरपुर जिले में थाने से गायब हो गई जब्त शराब

मुजफ्फरपुर (एजेंसी)। मुजफ्फरपुर जिले में होली से पहले बड़ा कांड हो गया। बेला थाना में जब्त शराब को गायब करने का मामला सामने आया है। मामले में थाने के निजी मुंशी सहित दो लोगों की गिरफ्तारी हुई है। जांच में थानाध्यक्ष की लापरवाही सामने आने पर उन्हें निलंबित कर दिया है। वहीं अन्य पदाधिकारियों की भूमिका भी जांच के दायरे में है। बता दें कि बेला थाना परिसर में शराब विनिष्टीकरण के दौरान करीब एक दर्जन से अधिक कार्टन शराब गायब कर दी गई। शराब गायब करने के खेल में शामिल थाने के निजी मुंशी सुजीत और इलाके के मो. शहादत को गिरफ्तार किया था। शराब लदी एक कार भी जब्त की गई। गिरफ्तार मो. शहादत थाने के शांति समिति सदस्य बताया गया है। उसके एक राजनीतिक दल से भी जुड़े होने की चर्चा है। विदित हो कि हाल ही में बेला थाना क्षेत्र से भारी मात्रा में शराब जब्त की गई थी। वरीय अधिकारियों के निर्देश पर बेला थाना परिसर में जब्त शराब को विनिष्ट किया जा रहा था। इसी दौरान वहां से शराब के कई कार्टन मजदूरों से गायब करा दिया गया।

दिल्ली पुलिस ने दो दिन में 30 अवैध घुसपैठियों को पकड़कर डिटेंशन सेंटर भेजा

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में अवैध बांग्लादेशी नागरिकों के खिलाफ पुलिस ने पिछले दो दिनों में 30 से ज्यादा अवैध घुसपैठियों को गिरफ्तार किया है। दक्षिणी दिल्ली से 10 से ज्यादा बांग्लादेशी नागरिक पकड़े गए हैं। पुलिस ने बाहरी जिले में अवैध रूप से रह रहे तीन बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार कर डिपोर्ट के लिए भेज दिया है। पकड़े गए इन लोगों की पहचान कुरीग्राम निवासी सफरुद्दीन, इब्राहिम और सोराब के रूप में हुई है। उत्तरी जिला पुलिस ने सदर बाजार इलाके में रहने वाले एक बांग्लादेशी और उसके बेटे को भी गिरफ्तार किया है। उनके पास वोटर कार्ड भी मिला है। इनकी पहचान मोहम्मद बिलाल और बेटे फारूक के रूप में हुई है। पुलिस ने गिरफ्तार बांग्लादेशियों को डिपोर्ट के लिए डिटेंशन सेंटर भेज दिया है। बाहरी जिला पुलिस उपायुक्त ने बताया कि जिले की फॉरेन सेल लगातार दिल्ली में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों की पहचान के लिए सत्यापन अभियान चला रही है। इसके तहत 10 मार्च को फॉरेन सेल को कुछ संदिग्धों के पीरागढ़ी इलाके में घूमने की सूचना मिली थी। पुलिस ने इलाके में गश्त बढ़ा दी। पुलिस को तीन व्यक्ति पीरागढ़ी कैंप की तरफ जाते दिखाई दिए। तीनों बंगाली में बात कर रहे थे। पुलिसकर्मियों ने तीनों को हिरासत में ले लिया। पहले तो संदिग्धों ने बताया कि वे पश्चिम बंगाल के रहने वाले हैं लेकिन सख्ती से पूछताछ करने पर तीनों ने खुद को बांग्लादेशी नागरिक बताया। तीनों ने अपना नाम सफरुद्दीन, इब्राहिम और सोराब बताया। पकड़े गए लोगों ने बताया कि वह सत्यापन के चलते इस इलाके में छिपने के लिए झुग्गी-झोपड़ी की तलाश कर रहे थे। पुलिस ने तीनों को डिपोर्ट करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

लखनऊ के एक होटल के कमरे में मृत मिली उज़्बेकिस्तान की महिला

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में स्थित एक होटल के कमरे में 43 वर्षीय एक विदेशी महिला का शव बरामद हुआ है। पुलिस ने बताया कि उज़्बेकिस्तान की महिला एगंबरडीवा ज़ेबो पिछले दो मार्च को सतनाम नामक युवक के साथ आई और होटल में ठहरी थी। पुलिस अधिकारी ने बताया कि सतनाम बाद में वापस चला गया और उसके बाद महिला ही होटल में रुकी थी। पुलिस ने बताया कि आपातकालीन हेल्पलाइन 112 पर एक कॉल प्राप्त हुई, जिसमें बताया गया कि विजयंतखंड में होटल अतिथि इन के कमरा 109 में एक महिला बेहोश पड़ी है। सूचना मिलने पर, पुलिस की एक टीम होटल पहुंची और अचेत महिला को तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने महिला को मृत घोषित कर दिया। शुरुवाती जांच में सामने आया हैं कि ज़ेबो दो मार्च को दिल्ली के सतनाम सिंह (26) नामक एक व्यक्ति के साथ होटल में रुकी थी। सतनाम कथित तौर पर पांच मार्च को होटल से चला गया और इसके बाद महिला कमरे में अकेली ही रह रही थी। विदेशी महिला ने जब कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, तब होटल के कर्मचारी उसके कमरे में घुसे और महिला को बिस्तर पर बेहोश पाया

मणिपुर में अलग-अलग घटनाओं में 12 उग्रवादी गिरफ्तार, हथियार भी बरामद

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में पिछले 24 घंटों में अलग-अलग घटनाओं में 12 उग्रवादी गिरफ्तार किए गए हैं। पुलिस ने बुधवार को बताया कि गिरफ्तार उग्रवादियों के पास से हथियार भी बरामद हुए हैं। बरामद हथियारों में 7.62 मिमी एसएलआर के साथ मैगजीन, 5.56 मिमी इंसास राइफल, 22 राइफल, 2 बोर डबल बैरल बंदूक, हैंड ग्रेनेड, स्टन ग्रेनेड शामिल हैं। ये हथियार इंफाल पूर्वी जिले के इरिलबुंग-पीएस के अंतर्गत केइराओ वांगखेम से बरामद किए हैं।

पुलिस ने कहा कि मादक पदार्थ के साथ एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया। उसकी पहचान संदीप देसवाल के रूप में हुई है, जो सेनापति जिले के सेनापति-पीएस के अंतर्गत एनएच-2 के टी खुल्लेन में 17.34 किलोग्राम अफीम ले जा रहा था। सुरक्षा बलों ने इंफाल पश्चिम जिले के लामसांग-पीएस के अंतर्गत तेरा उराक स्थित केसीपी के एक फार्म हाउस अस्थायी शिविर से केसीपी (पीडब्ल्यूजी) के सात सक्रिय सदस्यों को गिरफ्तार किया है। मणिपुर पुलिस ने बिष्णुपुर जिले से पीआरईपीएके के एक कैडर को गिरफ्तार किया। एक अन्य घटना में सुरक्षा बलों ने केसीपी (ताइबंगनबा) समूह के एक कैडर को गिरफ्तार किया। एक अन्य संयुक्त अभियान में मणिपुर पुलिस और जीआर ने इंफाल पूर्वी जिले से केवाईकेएल के एक सक्रिय सदस्य को गिरफ्तार किया है। मणिपुर पुलिस ने इंफाल पूर्वी जिले के पोरोमपट-पीएस के अंतर्गत डीडीके इंफाल गेट के पास खुराल चिंगंगबाम लेईकाई से केसीपी (पीडब्ल्यूजी) के दो सक्रिय कैडरों गिरफ्तार किया है।

छत्तीसगढ़ कांग्रेस में बदलाव की आहट के बीच, बैज और मरकाम ने की शीर्ष नेतृत्व से मुलाकात

नई दिल्ली (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ कांग्रेस में बड़े बदलाव की आहट है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मोहन मरकाम के दो दिनों के दिल्ली प्रवास में शीर्ष नेताओं से भेंट मुलाकात यूँ ही अचानक इत्तफ़ाक़ नहीं। बात, मुलाकात की भनक किसी को न लगे इसके लिए दीपक बैज ने कमरा तो बुक कराया छत्तीसगढ़ भवन में, लेकिन ठौर बनाया कहीं और। उन्हें संगठन महामंत्री केसी वेणुगोपाल ने बुलाया था। वेणुगोपाल और प्रभारी सचिन पायलट से लंबी लंबी मुलाकात के बाद पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से उनकी मीटिंग हुई। जाहिर है जब मीटिंग वन टू वन अकेले में हो तो खबरें छन कर ही आती हैं। औपचारिक रूप से कोई बात नहीं करता। सीधे सवालों के सीधे जवाब नहीं मिले तो सूत्र एक्टिव हुए। सूत्रों ने तहकीकात कर जानकारी दी कि आलाकमान दीपक बैज को प्रतिष्ठा पूर्ण तरीके से एडजस्ट कर छत्तीसगढ़ के लिए नये प्रदेश अध्यक्ष को जिम्मेदारी देना चाहता है। जाहिर है पूर्व

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को एआईसीसी का महासचिव बनाने के बाद पूर्व उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव को पीसीसी की जिम्मेदारी देने पर विचार हुआ था। जैसे ही खबर बाहर आई सूत्रों ने बताया की राज्य के पूर्व कैबिनेट मंत्री शिव डहरिया और अमरजीत भगत ने दिल्ली पहुँच कर नेतृत्व के समक्ष इस बात को रखा कि आदिवासी प्रदेश अध्यक्ष को हटा कर राज घराने के टीएस सिंहदेव को कमान सौंपे जाने पर आदिवासी समाज में अच्छा मैसेज नहीं जायेगा। सूत्रों ने बताया कि दीपक बैज को अभी और समय देने के पक्ष में खुद भूपेश बघेल भी हैं। अब गेंद आलाकमान के पाले में है। सूत्रों ने बताया इसी रीति नीति के तहत छत्तीसगढ़ को लेकर सीरियस विमर्श चल रहा है। पार्टी के आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि दीपक बैज को अगर कंटिन्यू करने पर अंतिम निर्णय होता है तो दो कार्यकारी अध्यक्ष बनाये जाने पर भी विचार चल रहा है। साथ ही सिंहदेव और मरकाम को क्या जिम्मेदारी दी जा सकती है इस पर भी मंथन चल रहा है। ज्यादा उम्मीद है कि मरकाम को एआईसीसी में किसी प्रकोष्ठ की कमान सौंपी जा सकती है। सिंहदेव को पीसीसी की कमान देकर आदिवासी और ओबीसी को कार्यकारी अध्यक्ष बनाये जाने पर भी विचार जारी है। बहरहाल, बात मुलाकात कर दीपक बैज और मोहन मरकाम रायपुर रवाना हो गए हैं।

नीतीश भांग पीकर आते हैं विधानपरिषद में : राबड़ी देवी

पटना। बिहार विधानपरिषद में बुधवार को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और प्रतिपक्ष की नेता राबड़ी देवी के बीच तीखी नोकझोंक देखने को मिली। नोकझोंक के बाद अन्य विपक्षी सदस्यों के साथ सदन के मुख्य द्वार पर धरना देने पहुंची पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी ने आरोप लगाया कि नीतीश कुमार भंगेड़ी हैं और भांग पीकर सदन में आते हैं। वहीं, उनके (राबड़ी देवी के) बेटे और बिहार विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता तेजस्वी यादव कुमार को मानसिक रूप से अस्थिर बताते हुए उनके इस्तीफा मांग रहे हैं। विधानपरिषद में यह समस्या तब शुरू हुई जब राजद की सहयोगी भाकपा (माले) की सदस्य शशि यादव सदन के समक्ष यह कहने के लिए अपनी कुर्सी से खड़ी हुईं कि वह अपने प्रश्न का सरकार द्वारा दिये गए उत्तर से संतुष्ट नहीं हैं। विधानपरिषद के सदस्य कुमार ने अपनी सीट बैठे-बैठे ही यह टिप्पणी की कि ''सरकार बहुत कुछ कर रही है। पिछली सरकारों ने कुछ नहीं किया।'' कुमार के जवाब से असंतुष्ट राबड़ी देवी ने हस्तक्षेप करते हुए उनसे कहा कि आप दावा करते हैं कि आपके कार्यभार संभालने से पहले कोई काम नहीं हुआ। उन्होंने कहा, ''कृपया उस अवधि के रिकॉर्ड तलब करें। आप बेहतर तौर पर समझ जाएंगे।

संभल में होली और जुमे की नमाज को लेकर कड़े सुरक्षा इंतजाम

संभल (एजेंसी)। होली और जुमे की नमाज को लेकर संभल में सुरक्षा के कड़े इंतजाम हैं। संभल जिले के पुलिस अधीक्षक (एसपी) केके विश्नोई ने बताया कि कुल 49 अतिसंवेदनशील स्थलों को चिन्हित कर लिया गया है। इन सभी स्थानों पर सुरक्षा बलों की तैनाती है। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि किसी भी प्रकार की जबरदस्ती को बर्दाश्त नहीं होगी। यदि कोई व्यक्ति जबरन किसी को गुलाल लगाता है या किसी के साथ अभद्रता करता है, तब तुरंत पुलिस चौकी में रिपोर्ट करनी चाहिए। पुलिस इसतरह के मामलों में कड़ी कार्रवाई करेगी और दोषियों को किसी भी हाल में बख्शा नहीं जाएगा।

एसपी विश्नोई ने जनता से अपील करते हुए कहा कि सभी लोग त्यौहार को आपसी भाईचारे और सौहार्द के साथ मनाएं। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि होली का उत्सव दोपहर 2.30 बजे तक मनाया जाए और उसके बाद मुस्लिम समुदाय के लोग जुम्मे की नमाज अदा करें। इससे कोई भी धार्मिक आयोजन प्रभावित नहीं होगा और समाज में शांति व सद्भाव बना रहेगा।

एसपी विश्नाई ने बताया कि सीसीटीवी कैमरों और ड्रोन की मदद से भीड़भाड़ वाले इलाकों पर नजर रखी जाएगी। इसके अलावा, प्रमुख चौक-चौराहों और बाजारों में पुलिस बल की उपस्थिति सुनिश्चित की गई है ताकि किसी भी अप्रिय घटना को रोका जा सके।

एसपी ने जिले के दोनों समुदायों से अपील की कि वे एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करें और किसी भी प्रकार की अफवाहों पर ध्यान न दें। अगर किसी को कोई भी शंका या समस्या होती है, तब वे तुरंत पुलिस से संपर्क करें।

संभल प्रशासन की ओर से सुनिश्चित किया जा रहा है कि त्यौहारों के दौरान सभी आवश्यक कदम उठाए जाए। फायर ब्रिगेड, एंबुलेंस, और अन्य आपातकालीन सेवाओं को भी अलर्ट पर रखा गया है ताकि किसी भी स्थिति में त्वरित सहायता उपलब्ध कर सके। पुलिस अधिकारियों की पेट्रोलिंग लगातार जारी रहेगी और हर छोटी-बड़ी गतिविधि पर नजर रखी जाएगी। एसपी विश्नोई ने सभी नागरिकों से अनुरोध कर कहा कि वे प्रशासन का सहयोग करें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की जानकारी तुरंत पुलिस को दें।

वन नेशन वन इलेक्शन कराने के मोदी की सरकार के खिलाफ हुए पूर्व सीजेआई गोगोई

नई दिल्ली (एजेंसी)। राज्यसभा सांसद एवं पूर्व सीजेआई रंजन गोगोई वन नेशन वन इलेक्शन कराने के प्रधानमंत्री मोदी की सरकार के रुख के खिलाफ है। दरअसल, वन नेशन वन इलेक्शन को लेकर बनाए जाने वाले कानून से पहले जस्टिस गोगोई ने यह राय दी है। इस प्रस्तावित कानून से संबंधित विधेयक संसद की संयुक्त संसदीय समिति के पास है। इसको लेकर हुई संसदीय समिति की बैठक में रंजन गोगोई ने अपनी राय रखी है, जो सरकार के रुख से अलग है।

जस्टिस गोगोई ने कहा कि चुनाव आयोग को किसी राज्य के विधानसभा के कार्यकाल का निर्णय करने के लिए अनियंत्रित शक्तियां नहीं दी जा सकतीं। गोगोई ने संसद की संयुक्त समिति के साथ तीन घंटे की चर्चा में एक साथ चुनावों पर बिल में खामियों की ओर इशारा किया। उन्होंने चेतावनी दी कि चुनाव आयोग (ईसी) को शेड्यूल तय करने के लिए अनियंत्रित शक्तियां देना उचित नहीं होगा। रिपोर्ट के मुताबिक भाजपा सांसद पीपी चौधरी की अध्यक्षता वाली संसदीय संयुक्त समिति संविधान (129वां संशोधन) विधेयक, 2024 की समीक्षा कर रही है, जिसे 17 दिसंबर, 2024 को लोकसभा में पेश किया गया था। यह विधेयक चुनाव आयोग को लोकसभा और सभी राज्य विधानसभाओं के लिए एक साथ चुनाव कराने का अधिकार देने का प्रयास करता है।

सूत्रों के अनुसार, डीएमके राज्यसभा सदस्य पी। विल्सन ने बताया कि नए बिल की धारा 82 ए(5) में कहा गया है कि यदि ईसी की राय है कि किसी विधानसभा के चुनाव लोकसभा के आम चुनाव के साथ नहीं कराए जा सकते, तो वह राष्ट्रपति को सिफारिश कर सकता है कि उस विधानसभा के चुनाव बाद में कराए जाएं। चुनाव आयोग के लिए समय सीमा निर्दिष्ट न करके, क्या यह कानून उसे मनमानी और अनियंत्रित शक्तियां नहीं दे रहा है। जस्टिस गोगोई ने इस तर्क को स्वीकार किया और कहा कि यह उचित नहीं होगा और इस धारा को संशोधित करने की आवश्यकता है ताकि खामियों को दूर किया जा सके और यह कानूनी रूप से टिकाऊ नहीं है। उन्होंने कहा कि ईसी को राज्य विधानसभा के कार्यकाल को बढ़ाने या घटाने के लिए अनियंत्रित शक्तियां नहीं दी जा सकतीं। चर्चा के दौरान कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी ने 1991 के आम चुनावों का उदाहरण भी दिया, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री चंद्रशेखर ने पंजाब में कानून और व्यवस्था की स्थिति का हवाला देते हुए राज्य में आम चुनाव रोक दिए

थे। पंजाब की लोकसभा सीटों के चुनाव 1992 में विधानसभा चुनाव के साथ हुए थे। चुनाव आयोग के पास केंद्र सरकार के विपरीत ऐसे निर्णय लेने के लिए मशीनरी नहीं है। पिछली बैठक में भारत के पूर्व मुख्य जस्टिस यूयू ललित ने भी बिल में कई खामियों की ओर इशारा किया था और कहा था कि यह कानूनी चुनौती का सामना नहीं कर सकता।

अमेरिकी उप राष्ट्रपति वेंस और खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड आएंगे भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। नई अमेरिकी सरकार के दो बड़े अधिकारी भारत की यात्रा पर आने वाले हैं। अगले हफ्ते अमेरिकी खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड भारत आएंगी। इसके बाद मार्च के आखिरी सप्ताह में उप राष्ट्रपति जेडी वेंस पत्नी उषा वेंस के संग भारत आएंगे। अमेरिका की राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड एशिया की यात्रा पर जा रही हैं। अगले सप्ताह भारत में एक सुरक्षा सम्मेलन में वह शामिल होंगी। सोमवार को एक सोशल मीडिया पोस्ट में गबार्ड ने घोषणा की कि वह जापान, थाईलैंड और भारत की यात्रा कर रही हैं और वापस अमेरिका लौटते समय फ्रांस जाएंगी। ट्रंप प्रशासन में शामिल होने के बाद यह उनकी दूसरी यात्रा है।

नेशनल इंटेलिजेंस की डायरेक्टर बनने के बाद उन्होंने जर्मनी के म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में हिस्सा लिया था। नई दिल्ली में रायसीना डायलॉग में तुलसी का भाषण भी होगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक ब्रिटेन के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) जोनाथन पॉवेल और कनाडाई सुरक्षा खुफिया सेवा सीएसआईएस के डायरेक्टर डेनियल रॉर्स के भी सुरक्षा सम्मेलन में हिस्सा लेने की उम्मीद है। भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय ने 2022 से भू-राजनीति और भू-अर्थशास्त्र पर देश के प्रमुख सम्मेलन रायसीना डायलॉग के मौके पर सुरक्षा सम्मेलन की मेजबानी की है। उनके अलावा अमेरिका में ट्रंप के नंबर दो यानी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस भी इसी महीने के अंत में भारत की यात्रा करेंगे। अमेरिका का उपराष्ट्रपति बनने के बाद जेडी वेंस की यह दूसरी विदेश यात्रा होगी। पोलिटिको की एक रिपोर्ट के मुताबिक जेडी वेंस के साथ उनकी पत्नी उषा वेंस भी होंगी। वेंस ने पिछले महीने फ्रांस और जर्मनी की अपनी पहली विदेश यात्रा की थी। अपनी पहली विदेश यात्रा के दौरान जर्मनी के म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में एक उग्र भाषण दिया था, जहां उन्होंने अवैध प्रवासन से निपटने, धार्मिक स्वतंत्रता की अनदेखी करने और चुनावों को पलटने के लिए यूरोपीय सरकारों की आलोचना की।

शुभेंदु के बयान पर ममता का पलटवार, मैं एक हिंदू हूं और मुझे भाजपा से सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने विधानसभा में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी की टिप्पणी की आलोचना की। सीएम ममता ने भाजपा पर आरोप लगाया कि वह रमजान के पवित्र महीने में मुसलमानों को निशाना बनाया जा रहा हैं ताकि आर्थिक और व्यापारिक मुद्दों से ध्यान भटकाया जा सके। विधानसभा में सीएम बनर्जी ने कहा, लोकतंत्र स्थायी है, लेकिन कुर्सी नहीं। कुर्सी का सम्मान करें। वे सांप्रदायिक बयान देकर देश का ध्यान आर्थिक और व्यापारिक पतन से भटकाने की कोशिश कर रहे हैं। मैं एक हिंदू हूं और मुझे भाजपा से सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं है।

बीजेपी नेता अधिकारी के बयान पर प्रतिक्रिया देकर कहा, हमें संकल्प लेना चाहिए और एक धर्म को नीचा दिखाने वाले बयान की निंदा करनी चाहिए। ममता ने कहा, हिंदुओं की सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी है, सिर्फ आपकी नहीं। यह इस कुर्सी की जिम्मेदारी है। यह टिप्पणी राज्य में चल रहे राजनीतिक तनाव के बीच आई है, जिसमें भाजपा

और टीएमसी धार्मिक और शासन के मुद्दों पर तीखी नोकझोंक कर रहे हैं। भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी ने कहा था, सबसे पहले मैं बिमान बंधोपाध्याय (स्पीकर) को हराऊंगा, फिर ममता को। इसके बाद, जब बंगाल में भाजपा सरकार आएगी तब टीएमसी के उन मुस्लिम विधायकों को सड़क पर फेंक दिया जाएगा।'

ममता सरकार के खिलाफ प्रदर्शन करते हुए बीजेपी अधिकारी ने कहा, ममता ने समाज को बांट दिया है... राम मंदिर उद्घाटन के दिन ममता ने बंगाल में मार्च निकाला... टीएमसी हिंदू विरोधी सरकार है। हिंदू हितों के लिए जो भी जरूरी होगा, मैं करूंगा। ममता हटाओ... चोर ममता हटाओ! इससे पहले मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल के हर जिले में मतदाता सूची में कथित अनियमितताओं की जांच के लिए एक समिति बनाई थी।

फसल पर फिर मंडराया संकट, कई राज्यों में बारिश के अलर्ट ने किसानों की बढ़ाई चिंता

नई दिल्ली (एजेंसी)। साल पर तक कठिन परिश्रम करने के बाद तैयार हुई फसल पर संकट के बादल घिरते नजर आ रहे हैं। इसी बीच मौसम ने ऐसी करवट बदली है, जिसने किसानों की टेंशन बढ़ा दी है। मौसम विभाग के मुताबिक एक पश्चिमी विक्षोभ यानी वेस्टर्न डिस्टर्बेंस का छोटा स्पेल इस वक्त उत्तर भारत में सक्रिय हो चुका है। पंजाब-हरियाणा सहित राजस्थान-यूपी में गुरुवार से बारिश का दौर शुरू होने वाला है। बारिश के साथ ओले पड़ने की भी आशंका जताई जा रही है, जिसे लेकर किसान चिंतित हैं। बताया गया कि 13 से 15 मार्च तक मौजूदा वेस्टर्न डिस्टर्बेंस का यह स्पेल सक्रिय रहेगा। इसके कारण पहाड़ी क्षेत्र जैसे जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में बर्फबारी हो सकती है। उधर, पाकिस्तान के अलावा उत्तर पश्चिमी राजस्थान सहित पंजाब, दिल्ली-एनसीआर, हरियाणा व उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों

में में चक्रवाती परिसंचरण के कारण बारिश हो सकती है। दावा किया जा रहा है कि कुछ स्थानों पर बारिश के साथ-साथ ओले भी पड़ने की संभावना है। पिछले साल भी इस मौसम में देश के कुछ हिस्सों में ओलावृष्टि के कारण किसानों को नुकसान उठाना पड़ा था। कहा गया कि एक और इस बारिश और ओलावृष्टि से हिमालयी राज्यों में बर्फबारी की कमी दूर होगी। वहीं दूसरी ओर उत्तर भारत के किसान आसमान से आ रही आफत को देखते हुए सावधान रहने की जरूरत है। फसल कटने के वक्त से ठीक पहले तेज बारिश और ओले पड़ने के कारण गेहूं की फसल पर इसका भारी नुकसान होने की आशंका जताई जा रही है। किसानों को उम्मीद है कि इस साल अच्छी फसल होगी। लेकिन कटाई के वक्त मौसम में यह बदलाव देश के अन्नदाताओं पर कहर ढहा सकता है। स्काईमेट वेदर की रिपोर्ट के अनुसार पश्चिमी विक्षोभ भूमध्यसागर से उठने वाले तूफान हैं, जो सर्दियों में पश्चिमी हिमालय में बारिश और बर्फबारी का कारण बनते हैं। मार्च आते-आते इनकी सक्रियता अमूमन कम होने लगती है लेकिन इस बार मौसम का मिजाज कुछ अलग है।

भारत के बड़े मंदिर करते हैं जमकर कमाई, सरकार को देते हैं भारी भरकम टैक्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में लाखों मंदिर हैं और इनसे होने वाले करोड़ों की कमाई और उस पर टैक्स को लेकर इन दिनों एक बहस छिड़ी हुई है। कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि बीजेपी सरकार मंदिरों को जीएसटी बकाया का नोटिस भेज रही है। उधर, बीजेपी ने इस मामले में कांग्रेस पर हमला बोला है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक एक विश्लेषण के बाद पता चला है कि भारत का सबसे अमीर मंदिर ट्रस्ट तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम है, जो वित्त वर्ष 2025 में अपनी 4,774 करोड़ रुपए की वार्षिक आय पर 1.5 फीसदी से कम जीएसटी का भुगतान करेगा। नवंबर 2024 में, देश के सबसे धनी मंदिरों में से एक तिरुवनंतपुरम के श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर को बकाया टैक्स भुगतान के लिए नोटिस भेजा था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक साल साल की अवधि के लिए मांग केवल 1.57 करोड़ रुपए की थी, जबकि मंदिर ने अकेले 2014 में 700 करोड़ रुपए कमाए थे।

वहीं वैष्णो देवी मंदिर ने वित्त वर्ष 2024 में 683 करोड़ रुपए कमाए, जिसमें से 255 करोड़ रुपए चढ़ावे से आए, जो टैक्स-फ्री हैं और 133.3 करोड़ रुपए ब्याज से आए। टीटीडी के मामले में 4,800 करोड़ रुपए की कमाई में से एक तिहाई से ज्यादा हुंडी संग्रह से आए हैं। इस मामले में जीएसटी के तहत टैक्स लायबिलिटी वित्त वर्ष 2021 से पांच सालों में करीब 130 करोड़ रुपए रही है। हालांकि, इस मामले में मंदिरों के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन भारत के दो सबसे बड़े मंदिर ट्रस्टों की आय पिछले सात सालों में दोगुनी हो गई है।

साल दर साल मंदिरों की आय बढ़ रही है जिसमें तिरुपति ट्रस्ट का वित्त वर्ष 2017 में बजट 2,678 करोड़ था, जो इसकी वेबसाइट के मुताबिक वित्त वर्ष 2025 में बढ़कर 5,145 करोड़ रुपए हो गया। वैष्णो देवी ट्रस्ट की आय वित्त वर्ष 2017 में 380 करोड़ रुपए से बढ़कर वित्त वर्ष 2024 में 683 करोड़ रुपए हो गई है। संसद में दी गई जानकारी के मुताबिक तिरुपति मंदिर ने वित्त वर्ष 2017 में 14.7 करोड़ रुपए, वित्त वर्ष 2022 में 15.58 करोड़ रुपए, वित्त वर्ष 2023 में 32.15 करोड़ रुपए और वित्त वर्ष 2024 में 32.95 करोड़ रुपए का जीएसटी भुगतान किया गया।

वहीं प्रसाद और धार्मिक समारोह जीएसटी संग्रह से मुक्त होते हैं। टीटीडी और वैष्णो देवी के मामले में यह आय एक तिहाई से ज्यादा थी। वित्त वर्ष 2024 में वैष्णो देवी मंदिर ट्रस्ट ने अपनी आय का 37 फीसदी दान से अर्जित किया। वहीं, वित्त वर्ष 2025 में टीटीडी को दान से करीब 4,800 करोड़ रुपए अर्जित करने की उम्मीद है। यदि कमरे का शुल्क एक हजार रुपए से ज्यादा है और यदि सामुदायिक हॉल या खुले क्षेत्र का शुल्क 10 हजार रुपए से ज्यादा है, तो परिसर के किराए पर जीएसटी

लगाया जाता है। व्यवसाय के लिए किराए पर दी गई दुकानों और अन्य स्थानों पर भी जीएसटी नहीं लगता है, यदि मासिक किराया 10 हजार रुपए से कम है।

दुनिया भर के अमीरों के लिए पनौती बने ट्रंप

नई दिल्ली ।

डोनाल्ड ट्रंप का नाम राजनीति और विवादों में वैश्विक स्तर पर जुड़ा रहा है। वह दुनिया भर के अमीरों और गरीबों के लिए भी पनौती साबित हो रहे हैं। हाल ही में अमेरिकी शेयर बाजार में आए भारी उतार-चढ़ाव, कानूनी मामलों में बढ़ती परेशानियां और उनके बयानों से उपजे आर्थिक संकट ने कई अरबपतियों को बड़ा नुकसान पहुंचाया है।

कई देशों की अर्थव्यवस्था गड़बड़ा गई है। ट्रंप के खिलाफ चल रहे कानूनी मुकदमों ने न केवल उनके निजी साम्राज्य को प्रभावित किया है, बल्कि दुनियाभर के निवेशकों का भरोसा भी डगमगाया है। विशेषज्ञों का मानना है कि अमेरिकी बाजारों में वित्तीय अस्थिरता और बढ़ेगी। कई बिजनेस लीडर्स ने इस स्थिति से निपटने के लिए अपनी निवेश रणनीतियों में बदलाव किया है।

ट्रंप के विवादास्पद बयानों और नीतियों का असर अमेरिका तक सीमित नहीं है।

हाल ही में उनकी कुछ टिप्पणियों के चलते यूरोप और एशिया के कई देशों और अरबपतियों को बड़ा झटका लगा। वैश्विक व्यापारिक रिश्तों पर उनके बयान कई देशों की अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव डाल चुके हैं। उदाहरण के तौर पर, चीन और अमेरिका के बीच व्यापार युद्ध में कई बड़े उद्योगपतियों को अरबों डॉलर का नुकसान उठाना पड़ा। विश्लेषकों का कहना है कि ट्रंप की अनिश्चित नीतियां और विवादास्पद फैसले बाजार की स्थिरता के लिए लगातार खतरा बने हुए हैं। निवेशकों के लिए यह समझना मुश्किल हो रहा है। ट्रंप के कारण उन्हें लाभ होगा या भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। यही कारण है कि कई वैश्विक निवेशक अब अमेरिकी बाजारों में सतर्कता बरत रहे हैं। बड़े निवेशक अपने निवेश कहीं और स्थानांतरित करने पर विचार कर रहे हैं।

अमेरिकी डॉलर, स्टॉक मार्केट और अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक रिश्तों पर ट्रंप की खराब नीतियों का असर पहले कार्यकाल में भी देखा गया था। उनके नेतृत्व में अमेरिका की 'अमेरिका फर्स्ट' नीति ने कई अंतरराष्ट्रीय कंपनियों और अरबपतियों की संपत्ति को बुरी तरह से प्रभावित किया है। ट्रंप की बढ़ती कानूनी और राजनीतिक चुनौतियों के बीच कारोबारियों के लिए यह समय काफी मुश्किल भरा हो गया है। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि आने वाले महीनों में आर्थिक मंदी, मंहगाई, बेरोजगारी एवं वित्तीय चुनौतियों की स्थिति क्या मोड़ लेती हैं। क्या वह सच में दुनिया भर की अर्थव्यवस्था एवं वैश्विक युद्ध के लिए 'पनौती' बनने जा रही है।

इंडसइंड बैंक का शेयर 27 फीसदी गिरा, निवेशकों के पैसे डूबने की चिंता

मुंबई । डेरिवेटिव पोर्टफोलियो में विसंगतियां के कारण इंडसइंड बैंक का शेयर 27 फीसदी नीचे आ गया। इससे बैंक ने 1,577 करोड़ या अपनी कुल नेटवर्थ का करीब 2.35 फीसदी नुकसान होने की आशंका जताई है। इंडसइंड बैंक शेयर के गिरने का असर हिन्दुजा ग्रुप के दूसरे शेयरों पर पड़ा और समूह के 6 में से 5 स्टॉक्स मंगलवार को गिरावट के साथ बंद हुए। इससे समूह का बाजार पूंजीकरण में 21000 करोड़ की गिरावट आई। हिंदुजा ने समस्या को ÷रूटीन÷ बताकर माना कि निवेशकों की चिंता सही है कि उन्हें पहले क्यों नहीं बताया गया। इंडसइंड बैंक में 27 फीसदी गिरावट के बाद अशोक हिंदुजा ने कहा था कि शेयरधारकों से घबराने की जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि बैंक के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो में विसंगतियां को न ऑडिटर और न ही रेगुलेटर ने पकड़ा है, बल्कि खुद इंडसइंड बैंक प्रबंधन ने इस उजागर किया है। उन्होंने कहा कि प्रमोटर आरबीआई से अपनी हिस्सेदारी 15 फीसदी से बढ़ाकर 26 फीसदी करने की मंजूरी का इंतजार कर रहे हैं और जैसे ही आरबीआई मंजूरी देगा, बैंक में तुरंत पूंजी निवेश किया जाएगा।

इंडसइंड बैंक शेयर मंगलवार को 27.02 फीसदी की गिरावट के साथ बीएसई पर 657.25 पर बंद हुए। इससे पहले ऐसे ही इंडसइंड बैंक नवंबर 2020 की शुरुआत में कारोबार कर रहा था। अशोक लीलैंड 200 पर बंद हुआ, जो 3.24 फीसदी नीचे था। हिंदुजा ग्लोबल सॉल्यूशंस लिमिटेड 3.68 फीसदी गिरकर 500 पर बंद हुआ। गोओसीएल कॉर्पोरेशन लिमिटेड 3.48 फीसदी गिरकर 281.10 पर आ गया। केवल गल्फ ऑयल लुब्रिकेंट्स इंडिया लिमिटेड ही समूह का एकमात्र स्टॉक था जिसने बढ़त दर्ज की। यह 2.29 फीसदी बढ़कर 1216 पर बंद हुआ।

इंडसइंड बैंक के शेयरों में आई भारी गिरावट से म्यूचुअल फंड निवेशकों को 6 हजार करोड़ से ज्यादा का नुकसान हुआ है। फरवरी तक 35 म्यूचुअल फंड्स के पास इंडसइंड बैंक के 20.88 करोड़ शेयर थे। इनकी कुल वैल्यू 20,670 करोड़ थी, लेकिन हालिया गिरावट के बाद यह घटकर 14,600 करोड़ रुपए रह गई। इंडसइंड बैंक में सबसे बड़ी हिस्सेदारी आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड की है, जिसका मूल्य फरवरी के अंत 3,778.55 करोड़ रुपए था जो अब घटकर 2671.54 करोड़ रुपए रह गया है।

स्मॉलकैप और मिडकैप इक्विटी म्युचुअल फंड्स पर कायम है निवेशकों का भरोसा

इन फंड्स में एसआईपी के द्वारा निवेश आ रहा

मुंबई।

बाजार में उतार-चढ़ाव के बावजूद, स्मॉलकैप और मिडकैप इक्विटी म्युचुअल फंड्स खुदरा निवेशकों की पहली पसंद बनाकर उभरे हैं। इन फंड्स में सिस्टमैटिक इंवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के द्वारा सबसे अधिक निवेश आ रहा है। हाल ही में जारी रिपोर्ट के अनुसार, स्मॉलकैप फंड्स के कुल एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) में एसआईपी निवेश की हिस्सेदारी 50 प्रतिशत से ज्यादा हो चुकी है, जबकि मिडकैप फंड्स भी ट्रेंड के करीब हैं। मार्च 2024 तक, स्मॉलकैप फंड्स में एसआईपी की हिस्सेदारी बढ़कर 53 प्रतिशत हो गई, जो मार्च 2019 में 43 प्रतिशत थी। मिडकैप फंड्स में एसआईपी का योगदान 46 प्रतिशत तक पहुंच गया, जबकि लार्जकैप फंड्स में यह 43 प्रतिशत और फ्लेक्सीकैप फंड्स में 38 प्रतिशत दर्ज हुआ। ये आंकड़े दिखाते हैं कि मिडकैप और स्मॉलकैप स्कीम खुदरा निवेशकों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रही हैं। पिछले तीन कैलेंडर वर्षों में, इन फंड्स ने एक्टिव इक्विटी स्कीम्स में 30 प्रतिशत से ज्यादा नेट फोलियो एडिशन का योगदान दिया है।

म्युचुअल फंड अधिकारियों और निवेश विशेषज्ञों का मानना है कि स्मॉलकैप और मिडकैप फंड्स में निवेश के लिए एसआईपी सबसे बेहतर तरीका है, क्योंकि यह फंड्स हाई वोलैटिलिटी के कारण जोखिम से भरे हो सकते हैं। बाजार जानकार ने कहा, 'एसआईपी निवेशकों को उनके खरीद मूल्य को औसत करने में मदद करता है, इससे गलत समय पर निवेश करने का जोखिम कम हो जाता है। स्मॉलकैप और मिडकैप फंड्स के मजबूत प्रदर्शन ने भी एसआईपी में भारी निवेश को बढ़ावा दिया है। हाल के समय में स्मॉलकैप फंड्स में एसआईपी एसेट्स की हिस्सेदारी और बढ़ी है, क्योंकि कई बड़ी स्कीम्स अब लंपसम इनफ्लो (एकमुश्त निवेश) स्वीकार नहीं कर रही हैं। मार्च 2024 में भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने स्मॉलकैप वैल्यूएशन को लेकर चिंता जाहिर की थी, जिसके बाद फंड हाउस ने निवेशकों को सुरक्षित रखने के लिए जरूरी कदम उठाए। इन चिंताओं के बावजूद, स्मॉलकैप और मिडकैप फंड्स खुदरा निवेशकों के लिए पहली पसंद बने हुए हैं।

अमेरिका ने कनाडा से आयात स्टील और एल्युमिनियम पर शुल्क किया दोगुना

-ट्रंप का दावा टैरिफ से अमेरिकी कंपनियों को होगा फायदा

नई दिल्ली।

अमेरिका और कनाडा के बीच व्यापारिक तनाव बढ़ गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ऐलान किया है कि कनाडा से आयातित स्टील और एल्युमिनियम पर शुल्क दोगुना यानी 50 फीसदी कर दिया जाएगा। यह फैसला ऐसे समय में आया है जब कनाडा ने अमेरिका से बिजली आयात पर लेवी लगा दी है। यह नया शुल्क बुधवार से लागू हो गया है। ट्रंप ने 'ट्रुथ सोशल' पर लिखा- मैंने अपने वाणिज्य सचिव को निर्देश दिया है कि कनाडा से अमेरिका में आने वाले सभी स्टील और एल्युमिनियम पर अतिरिक्त 25 फीसदी शुल्क लगाया जाए, जिससे कुल शुल्क 50 फीसदी हो जाएगा। संभव है कि इससे अमेरिका में स्टील के दाम में उछाल आएगा।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक ट्रंप की इस घोषणा के बाद शेयर बाजार में भारी गिरावट देखने को मिली। इससे ट्रंप पर यह दबाव बढ़ गया है कि वह अपनी आर्थिक विकास योजनाओं को स्पष्ट करें। बता दें ट्रंप ने चुनाव प्रचार के दौरान घरेलू निर्माताओं के लिए कम कॉर्पोरेट टैक्स का वादा किया था। हालांकि, ट्रंप के कनाडा, मैक्सिको, चीन, यूरोप, ब्राजील, दक्षिण कोरिया समेत कई देशों पर लगने वाले शुल्कों की योजना को एक बड़ी टैक्स वृद्धि के रूप में देखा जा रहा है। इन शुल्कों का असर स्टील, एल्युमिनियम, दवाइयों, तांबे, लकड़ी और कंप्यूटर चिप्स पर भी पड़ सकता है। इन फैसलों के चलते गोल्डमैन सैक्स ने अमेरिका की विकास दर का पूर्वानुमान 2.2 फीसदी से घटाकर 1.7 फीसदी कर दी है और मंदी की संभावना को 20 फीसदी तक बढ़ा दिया है। हालांकि, व्हाइट हाउस को उम्मीद है कि अगर हालात बिगड़ते हैं तो नीतियों में बदलाव किया जा सकता है।

बिजनेसवुमैन के तौर पर सुपरहिट साबित हो रही लेडी सिंघम काजोल

मुंबई।

अभिनेत्री काजोल अब भले ही फिल्मों में उतना नहीं आती, लेकिन एक समय में काजोल ने बॉलीवुड पर राज किया था, उसी तरह अब वे बिजनेसवुमैन के तौर पर सुपरहिट निवेश कर रहीं हैं। रिपोर्ट के मुताबिक काजोल ने मुंबई के उपनगरों में एक और कमर्शियल प्रॉपर्टी खरीदी है। दस्तावेजों के अनुसार, काजोल ने 28.78 करोड़ रुपये की खुदरा संपत्ति खरीदी है। दस्तावेजों के मुताबिक काजोल विशाल देवगन ने मुंबई के गोरेगांव वेस्ट के प्रमुख इलाके में 28.78 करोड़ रुपये की कमर्शियल प्रॉपर्टी खरीदी है। यह सौदा 6 मार्च 2025 को अंतिम रूप दिया गया था और यह खरीद भारत एराइज, लिंकिंग रोड, बांगुर नगर, गोरेगांव वेस्ट, मुंबई के ग्राउंड फ्लोर की शॉप नंबर 2 के रूप में दर्ज हुई है।

इस डील को भारत रियल्टी वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड के साथ फाइनल किया गया, जिसमें अभिनेत्री ने 4,365 वर्ग फुट का बड़ा कमर्शियल स्पेस हासिल किया। इस प्रॉपर्टी की कुल कीमत 28.78 करोड़ रुपये है, इसमें 1.72 करोड़ रुपये की स्टांप ड्यूटी भी शामिल है। इस संपत्ति की प्रति वर्ग फुट कीमत 65,940 रुपये है, जो इस लोकेशन की प्रीमियम नेचर और हाई डिमांड को दिखाती है।

बात दें कि जुलाई 2023 में, काजोल ने अंधेरी वेस्ट के वीरा देसाई रोड पर स्थित ओशिवारा में 7.64 करोड़ रुपये की ऑफिस स्पेस भी खरीदी थी। दस्तावेजों के अनुसार, यह ऑफिस स्पेस 194.67 वर्ग मीटर में फैली हुई है और इस रियल एस्टेट रेगुलेटरी अथॉरिटी (रेरा) के तहत पंजीकृत किया गया था। इस क्षेत्र में कई बॉलीवुड सितारों और फिल्म निर्माताओं के ऑफिस स्थित हैं।

एसयूवी एलएक्स 500डी का अपडेटेड मॉडल लॉन्च

नई दिल्ली । भारतीय बाजार में कार निर्माता लेक्सस कंपनी ने अपनी फ्लैगशिप एसयूवी एलएक्स 500डी का अपडेटेड मॉडल लॉन्च कर दिया है। नई लेक्सस एलएक्स 500डी में दमदार 3.3-लीटर वी6 डीजल इंजन दिया गया है, जो 8 सेकंड में 0 से 100 किमी/घंटा की रफ्तार पकड़ सकता है। इसकी टॉप स्पीड 210 किमी/घंटा है।इसे दो वैरिएंट्स–अर्बन और ओवरटेल में पेश किया गया है। इसकी शुरुआती कीमत रुपए 3 करोड़ रखी गई है, जबकि ओवरटेल वैरिएंट की कीमत रुपए 3.12 करोड़ तय की गई है। इससे पहले इसकी कीमत रुपए 2.83 करोड़ थी, लेकिन अपडेट के बाद इसमें रुपए 17 लाख की बढ़ोतरी हो गई है। अर्बन वैरिएंट को शहरों में बेहतरीन ड्राइविंग अनुभव के लिए डिजाइन किया गया है, जबकि ओवरटेल वैरिएंट को ऑफ-रोडिंग के लिए तैयार किया गया है। ग्रिल, अलॉय व्हील्स और टायर डिजाइन में हल्के बदलाव किए गए हैं, जिससे एसयूवी को नया लुक मिलता है। सेफ्टी फीचर्स की बात करें तो इसमें अत्याधुनिक सेफ्टी सिस्टम 3.0 दिया गया है, जिसमें प्री-कोलिजन सिस्टम, अडेप्टिव क्रूज कंट्रोल, ब्लाइंड स्पॉट मॉनिटरिंग और सेफ्टी एग्जिट असिस्ट शामिल हैं। इसके अलावा, लंबी यात्राओं को और आरामदायक बनाने के लिए सीट मसाजर को भी अपग्रेड किया गया है।

आयात में नहीं हुई बढ़ोत्तरी....खाने के तेल के बढ़ सकते हैं दाम

नई दिल्ली । भारत में खाने के तेल का आयात फरवरी में चार साल के निचले स्तर पर पहुंच गया है। रिपोर्ट के मुताबिक सोयाबीन और सूरजमुखी तेल के आयात में कमी की वजह से ऐसा हुआ है। इंडस्ट्री के एक प्रमुख संगठन सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) ने इसकी जानकारी दी। इससे देश में खाने के तेल का स्टॉक तीन साल के सबसे कम स्तर पर पहुंच गया है। भारत दुनिया में खाने के तेल का सबसे बड़ा खरीदार है। लगातार दूसरे महीने कम आयात होने से देश में इसका स्टॉक कम हुआ है। इससे भारत को आने वाले महीनों में और ज्यादा तेल खरीदना पड़ सकता है। इससे मलेशियाई पाम तेल और अमेरिकी सोया तेल की कीमतों में बढ़ोतरी हो सकती है। एसईए के मुताबिक फरवरी में भारत का पाम तेल आयात जनवरी की तुलना में 35.7 प्रतिशत बढ़कर 373,549 मीट्रिक टन हो गया। अक्टूबर 2024 में खत्म हुए मार्केटिंग वर्ष में भारत ने हर महीने औसतन 750,000 टन से ज्यादा पाम तेल आयात किया। फरवरी में सोया तेल का आयात 36 प्रतिशत घटकर 283,737 टन और सूरजमुखी तेल का आयात 20.8 प्रतिशत घटकर 228,275 टन रह गया। सोया और सूरजमुखी तेल की कम खेप की वजह से पिछले महीने देश का कुल खाने के तेल का इंपोर्ट 12 प्रतिशत घटकर 899,565 टन रह गया। यह फरवरी 2021 के बाद से सबसे कम है। भारत में खाने के तेल का स्टॉक एक महीने पहले की तुलना में 14 प्रतिशत घटकर 1 मार्च को 1.87 मिलियन टन रह गया जो तीन साल से भी ज्यादा समय में सबसे कम है। अगर आयात में बढ़ोतरी नहीं होने पर आने वाले दिनों में खाने के तेल की कीमत में तेजी आ सकती है। भारत ज्यादातर पाम तेल इंडोनेशिया, मलेशिया और थाईलैंड से खरीदता है। वहीं सोया और सूरजमुखी तेल अर्जेंटीना, ब्राजील, रूस और यूक्रेन से आता है।

रिलायंस ने स्पेसएक्स से किया समझौता, जियो यूजर्स को मिलेगी स्टारलिंक की सुविधा

नई दिल्ली।

देश में स्टारलिंक की सैटेलाइट इंटरनेट सर्विस के लिए रिलायंस जियो ने एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स से हाथ मिलाया है। रिलायंस जियो ने बुधवार को ऐलान किया है कि कंपनी ने भारत में स्टारलिंक की सैटेलाइट इंटरनेट सेवाएं शुरू करने के लिए एलन मस्क की स्पेसएक्स के साथ साझेदारी के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इससे पहले भारती एयरटेल ने स्पेसएक्स के साथ यह करार किया था। जियो और स्पेसएक्स के बीच यह समझौता, दोनों कंपनियों को सैटेलाइट इंटरनेट सर्विस प्रदान करने की इजाजत देता है। जियो अपने रिटेल आउटलेट और ऑनलाइन स्टोरफ्रंट दोनों के जरिए से स्टारलिंक सर्विस और सॉल्युशन उपलब्ध कराएगा। कंपनी अपने फिजिकल स्टोर में स्टारलिंक उपकरण पेश करने और कस्टमर केयर स्थापित करने की योजना बना रही है। जियो और स्पेसएक्स इस पार्टनरशिप के जरिए, भारत के ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में भरोसेमंद ब्रॉडबैंड सेवाएं देने के लिए प्रतिबद्ध है। डेटा ट्रैफिक के मामले में दुनिया में सबसे बड़े मोबाइल ऑपरेटर के रूप में जियो अब स्टारलिंक की बेहतर सैटेलाइट इंटरनेट सर्विस का फायदा उठाएगी और इसका लाभ जियो के करोड़ों यूजर्स को मिलेगा। स्पेसएक्स के साथ इस समझौते से रिलायंस जियो देशभर में सभी बिजनेस वेंचर, छोटे और मध्यम व्यवसायों व समुदायों को विश्वसनीय इंटरनेट उपलब्ध कराने की दिशा में काम कर रही है। स्टारलिंक सबसे चुनौतीपूर्ण स्थानों पर भी तेज और किफायती इंटरनेट उपलब्ध कराकर जियो एयरफाइबर और जियोफाइबर का पूरक बनेगा।

शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद

मुम्बई ।

भारतीय शेयर बाजार बुधवार को गिरावट पर बंद हुआ। बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले-जुले संकेतों के साथ ही आईटी शेयरों में बिकवाली हावी रहने से आई हैं हालांकि निजी बैंकिंग शेयरों में बढ़त रही जिससे गिरावट पर कुछ हद तक अंकुश लगा। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स अंत में 73 अंक करीब 0.1 फीसदी की हल्की गिरावट के साथ ही 74,030 पर बंद हुआ। वहीं 50 शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 27 अंकों की गिरावट के साथ 22,470 पर बंद हुआ। वहीं आज सुबह बाजार की शुरुआत बढ़त के साथ हुई। सुबह सेंसेक्स 168 अंक की बढ़त लेकर 74,270.81 पर खुला। वहींनिफ्टी 39 अंक की चढ़कर 22,536 पर खुला। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टैरिफ नीतियों को लेकर जारी अनिश्चितता और विदेशी संस्थागत निवेशकों के पैसा निकालने से भी बाजार पर दबाव आया। वहीं एशियाई बाजारों में आज बढ़त दर्ज की गई, जबकि वॉल स्ट्रीट अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टैरिफ योजनाओं और संभावित मंदी की चिंताओं के बीच उतार-चढ़ाव भरा रहा।

जापान का निक्की इंडेक्स सपाट रहा पर हल्की गिरावट के संकेत दिखे, जबकि टॉपिक्स इंडेक्स 0.69 फीसदी बढ़ा। दक्षिण कोरिया का कोस्पी 1.18 फीसदी जबकि ऑस्ट्रेलिया का एएसएक्स 200 इंडेक्स 1.6 फीसदी नीचे आया। दूसरी ओर अमेरिकी बाजारों में बिकवाली का दौर जारी है। अमेरिकी की अस्थिर व्यापार नीति का नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। डाउ जोंस लगभग 500 अंक गिरा, जिससे दो दिनों में इसकी कुल गिरावट 1,400 अंकों तक पहुंच गई जबकि एसएंडपी में 0.8 फीसदी की गिरावट आई। नैस्डैक हालांकि बेहतर प्रदर्शन करते हुए सिर्फ 0.2 फीसदी नीचे बंद हुआ।

वहीं गत दिवस बाजार सपाट बंद हुआ था।

रुपया बढ़त के साथ बंद

मुंबई । अमेरिकी डॉलर के मुकाबले बुधवार को भारतीय रुपया तीन पैसे की हल्की बढ़त के साथ ही 87.20 पर बंद हुआ। इससे पहले आज सुबह रुपया 87.23 पर खुला। वहीं गत दिवस रुपया 10 पैसे की बढ़त के साथ ही 87.21 रुपये पर बंद हुआ। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि अमेरिका में मंदी के डर और व्यापार संबंधी अनिश्चितताओं के बीच अस्थिर घरेलू शेयर बाजारों ने निवेशकों की धारणा को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया। वहीं गत दिवस अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 87.37 पर खुला और फिर शुरुआती सौदों में डॉलर के मुकाबले थोड़ा मजबूत होकर 87.30 पर पहुंच गया, जो पिछले बंद भाव से एक पैसे की बढ़त है। रुपया सोमवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 36 पैसे गिरकर 87.31 पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.20 प्रतिशत की गिरावट के साथ 103.75 पर था। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड का भाव वायदा कारोबार में 0.01 प्रतिशत बढ़कर 69.29 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया।

वारी रिन्यूएबल टेक्नोलॉजीज लिमिटेड को मिला बड़ा प्रोजेक्ट, कंपनी जल्द शुरु करेगी काम

-लागत 740 करोड़ रुपए, प्रोजेक्ट 18 महीनों के अंदर करना होगा पूरा

नई दिल्ली। वारी रिन्यूएबल टेक्नोलॉजीज लिमिटेड ने बड़ी सफलता हासिल की है। मंगलवार को कंपनी ने बताया कि उसे एक 125 एमडब्ल्यूएसी (181.3 एमडब्ल्यूवी डीसी) सोलर पावर प्रोजेक्ट के इंजीनियरिंग, प्रोक्योरमेंट और कंस्ट्रक्शन (ईपीसी) कॉन्ट्रैक्ट के लिए लेटर ऑफ अवार्ड (एलओए) मिला है। यह परियोजना तीन कंपनियों के एक संयुक्त समूह को सौंपी गई है, जिसमें वारी रिन्यूएबल टेक्नोलॉजीज भी शामिल है। कंपनी ने स्टॉक एक्सचेंज को दी फाइलिंग में बताया कि यह प्रोजेक्ट टर्नकी बेसिस पर तैयार किया जाएगा, जिसका मतलब है कि इसे पूरी तरह से तैयार करके सौंपा जाएगा। इसके साथ ही ऑपरेशन और मेंटेनेंस का काम भी कॉन्ट्रैक्ट का हिस्सा होगी। कंपनी को यह ठेका एक प्रमुख पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी की ओर से मिला है। इस परियोजना की कुल लागत करीब 740.06 करोड़ रुपए होगी, जिसमें टैक्स भी शामिल है। यह प्रोजेक्ट संविदा साइन होने के 18 महीनों के अंदर पूरा करना होगा। कंपनी ने यह भी बताया कि समूह में शामिल कंपनियों के बीच जिम्मेदारियों का विस्तृत बंटवारा आगे तय किया जाएगा। फिलहाल वारी रिन्यूएबल इस प्रोजेक्ट को जल्द से जल्द शुरू करने की तैयारी कर रही है। यह पहली बार नहीं है जब वारी रिन्यूएबल टेक्नोलॉजीज को इतना बड़ा ऑर्डर मिला है। पिछले साल भी कंपनी को 2012.47 एमडब्ल्यूपी डीसी क्षमता के ग्राउंड माउंट सोलर पीवी प्रोजेक्ट के ईपीसी ठेके के लिए एक 'टर्म शीट' मिली थी। इस परियोजना की अनुमानित लागत करीब 12,333.5 करोड़ रुपए टैक्स को छोड़कर थी। यह ऑर्डर एक बड़े नवीकरणीय ऊर्जा प्रोजेक्ट के विकास और क्रियान्वयन के लिए दिया गया था। उस समय कंपनी ने बताया था कि इस परियोजना की समय-सीमा दोनों पक्षों के आपसी सहमति से तय की जाएगी। इस घोषणा के बाद भी मंगलवार को वारी रिन्यूएबल टेक्नोलॉजीज के शेयरों में गिरावट देखने को मिली। बीएसई पर कंपनी का शेयर 27 रुपए की गिरावट के साथ 802.85 पर बंद हुआ।

अंबानी देखते रह गए... एयरटेल और स्पेसएक्स ने कर ली साझेदारी

लो-अर्थ ऑर्बिट सैटेलाइट लेने की तैयारी में स्टारलिंक और अमेजॉन

मुंबई ।

एयरटेल ने एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स के साथ एक समझौता किया है, जिसके तहत स्टारलिंक सैटेलाइट इंटरनेट को भारत में लाने की योजना है, हालांकि यह डील तभी लागू होगी जब स्पेसएक्स को भारतीय सरकार से स्टारलिंक सेवाएं बेचने की अनुमति मिलेगी।

एयरटेल और स्पेसएक्स की साझेदारी के मुख्य बिंदुओं के अनुसार एयरटेल, अपने स्टोर्स में स्टारलिंक उपकरण बेच सकता है और इसे बिजनेस ग्राहकों को ऑफर कर सकता है। यह साझेदारी ग्रामीण स्कूलों, स्वास्थ्य केंद्रों और दूरदराज के इलाकों में इंटरनेट सेवा पहुंचाने का काम करेगी। स्टारलिंक, एयरटेल के नेटवर्क को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है, और स्पेसएक्स, भारत में एयरटेल के बुनियादी ढांचे का उपयोग कर सकता है।

एयरटेल पहले से ही सैटेलाइट इंटरनेट दे रहा है। एयरटेल पहले से ही यूटेलसैट वनवेब के साथ मिलकर सैटेलाइट इंटरनेट सेवाएं प्रदान कर रहा है। स्टारलिंक के जुड़ने से दूरदराज के क्षेत्रों में इंटरनेट कवरेज बढ़ेगा और बिजनेस व ग्रामीण समुदायों को तेज गति वाली कनेक्टिविटी के अधिक विकल्प मिलेंगे। भारती एयरटेल के प्रबंध निदेशक और उपाध्यक्ष गोपाल विट्टल ने कहा कि स्पेसएक्स के साथ मिलकर भारत में एयरटेल ग्राहकों के लिए स्टारलिंक सेवाएं प्रदान करना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह एयरटेल की अगली पीढ़ी की सैटेलाइट कनेक्टिविटी के प्रति प्रतिबद्धता को और मजबूत करता है।

स्टारलिंक अब तक करीब 100 देशों में अपनी सेवाएं शुरू कर चुका है। हाल में उसने भूटान में सैटेलाइट के जरिए इंटरनेट सर्विस शुरू की थी और अब बांग्लादेश में भी इसकी तैयारी की जा रही है। लेकिन भारत अब तक इससे अछूता रहा था। अमेरिका में हाल में हुए

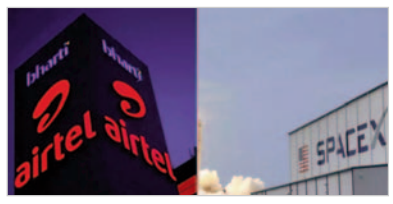

राष्ट्रपति चुनावों में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद माना जा रहा था कि स्टारलिंक को भारत में बैकडोर एंट्री मिल सकती है। इसकी वजह यह है कि मस्क को ट्रंप का करीबी माना जाता है। लेकिन संचारमंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने साफ किया था कि स्टारलिंक को भारत में लाइसेंस हासिल करने के लिए सभी नियमों का पालन करना होगा। इतना ही नहीं स्टारलिंक और अमेजॉन भारत में सैटेलाइट से ब्रॉडबैंड सेवाएं लाने के लिए अपने लो-अर्थ ऑर्बिट सैटेलाइट का उपयोग करने की योजना बना रहे हैं। भारत में सैटेलाइट ब्रॉडबैंड सेवाएं अभी तक शुरू नहीं हुई हैं।

अल्ट्रावायलेट टेसरेक्ट स्कूटर को मिली 20 हजार बुकिंग

नई दिल्ली । अल्ट्रावायलेट टेसरेक्ट कंपनी के इलेक्ट्रिक स्कूटर को लॉन्च के महज 48 घंटों में इसे 20,000 से अधिक बुकिंग मिल चुकी हैं। यह इलेक्ट्रिक स्कूटर एक बार फुल चार्ज करने पर 261 किलोमीटर तक चल सकता है। इसमें 20 एचपी की इलेक्ट्रिक मोटर दी गई है, जो इसे सिर्फ 2.9 सेकंड में 0 से 60 केएमपीएच की रफ्तार तक पहुंचाने में सक्षम बनाती है। स्कूटर की टॉप स्पीड 125 केएमपीएच है और कंपनी का दावा है कि यह केवल रुपए100 में 500 किलोमीटर तक चल सकता है। टेसरेक्ट में 7-इंच टीएफटी टचस्क्रीन, 34 लीटर अंडरसीट स्टोरेज, फ्रंट और रियर रडार तकनीक, ब्लाइंड स्पॉट मॉनिटरिंग, ओवरटेक अलर्ट, लेन चेंज असिस्ट और 14 इंच के बड़े व्हील्स जैसे एडवांस फीचर्स दिए गए हैं। इससे पहले कंपनी ने अपनी इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल एफ 77 लॉन्च की थी, जिसे भी शानदार प्रतिक्रिया मिली थी। अल्ट्रावायलेट के इस नए स्कूटर से इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर बाजार में बड़ा बदलाव आने की उम्मीद है।स्कूटर की शुरुआती कीमत रुपए1.20 लाख रखी गई है, जो पहले 10,000 ग्राहकों के लिए लागू होगी। भारी डिमांड को देखते हुए कंपनी ने इस ऑफर को 50,000 बुकिंग तक बढ़ाने का फैसला किया है। इसके बाद एक्स-शोरूम कीमत रुपए1.45 लाख से शुरू होगी।

संन्यास लेने से पहले रोहित की नजर वनडे विश्व कप खिताब पर होगी : दिग्गज ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर

दुबई (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज खिलाड़ी रिकी पोंटिंग का मानना है कि रोहित शर्मा अब भी दमदार खिलाड़ी हैं तथा वह 2027 में दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया की संयुक्त मेजबानी में होने वाले वनडे विश्व कप तक भारतीय टीम का नेतृत्व करना जारी रख सकते हैं। रोहित की कप्तानी में भारत ने वनडे विश्व कप को छोड़कर आईसीसी के बाकी टूर्नामेंट जीते हैं। उनकी अगुवाई में भारतीय टीम 2023 में घरेलू धरती पर खेले गए वनडे विश्व कप को जीतने के करीब पहुंची थी लेकिन फाइनल में उसे आस्ट्रेलिया से हार का सामना करना पड़ा था।

पोंटिंग ने आईसीसी रिव्यू में कहा कि रोहित अपने भविष्य के लक्ष्यों को लेकर काफी हद तक स्पष्ट हैं। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान ने कहा, 'जब आप अपने करियर के इस पड़ाव के करीब पहुंचते हैं तो हर कोई आपके संन्यास लेने का इंतजार कर रहा होता है। मैं नहीं जानता कि ऐसा क्यों होता है। वह भी तब जबकि आप अच्छा खेल रहे हो जैसा कि उन्होंने (चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में) अच्छी पारी खेली थी।'

पोंटिंग ने कहा, 'मुझे लगता है कि वह उन सवालों को हमेशा के लिए खत्म करने की कोशिश कर रहे थे और कह रहे थे, नहीं, मैं अब भी काफी अच्छा खेल रहा हूं। मुझे इस टीम में खेलना पसंद है। मुझे इस टीम का नेतृत्व करना पसंद है।' पोंटिंग ने कहा, 'मेरे लिए इसका मतलब यह है कि उनके मन में 2027 में होने वाले अगले वनडे विश्व कप में खेलना लक्ष्य होना चाहिए।'

रोहित ने 2021 में 34 वर्ष की उम्र में भारतीय टीम की कमान संभाली थी। उनके नेतृत्व में भारत ने रविवार को यहां खेले गए फाइनल में न्यूजीलैंड को 4 विकेट से हराकर चैंपियंस ट्रॉफी जीती थी। इससे पहले भारत ने पिछले साल रोहित की कप्तानी में ही वेस्टइंडीज में टी20 विश्व कप का खिताब जीता था। भारत ने चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में 252 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए रोहित की 83 गेंद पर खेली गई 76 रन की पारी की मदद से आसन जीत हासिल की।

रोहित ने संवाददाता सम्मेलन में संन्यास लेने की खबरों को सिरे से खारिज करते हुए कहा था, 'एक और बात, मैं इस प्रारूप से संन्यास नहीं लेने जा रहा हूं, बस यह सुनिश्चित करना चाहता हूं कि कोई और अफवाह न फैले।' पोंटिंग ने कहा कि रोहित के दिमाग में अपने करियर को जारी रखने के पीछे वनडे विश्व कप जीतने की चाहत हो सकती है। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि उनके दिमाग में यह बात होगी कि भारत उनकी

कप्तानी में पिछले वनडे विश्व कप के फाइनल में हार गया था। वह वनडे विश्व कप जीतने के लिए एक और कोशिश करना चाहते होंगे। जिस तरह से उन्होंने चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में शानदार पारी खेली उससे आप यह नहीं कह सकते हैं कि वह चुक गए हैं।'

150 वीं सालगिरह पर होगा एमसीजी में ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड का मुकाबला

सिडनी (एजेंसी)। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने कहा है कि टेस्ट क्रिकेट के 150 साल पूरे होने पर आज से ठीक दो साल बाद 11 मार्च 2027 को मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) में एक महामुकाबला होगा। ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड की टीमें इस अवसर पर 11 से 15 मार्च 2027 तक एमसीजी में दिन-रात का एक टेस्ट मैच गुलाबी गेंद से खेलेंगी। सीए ने कहा है कि यह ऐतिहासिक मैच एमसीजी में दोनों टीमों के बीच होने वाला पहला दिन-रात का टेस्ट मैच होगा।

इस ऐतिहासिक स्टेडियम में ही साल 1877 में ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच पहला टेस्ट मैच खेला गया था। इन दोनों टीमों के बीच 1977 में शताब्दी टेस्ट मैच भी एमसीजी पर ही हुआ था। तब ऑस्ट्रेलिया ने इन दोनों मैच में 45 रन से जीत हासिल की थी। सीए के मुख्य कार्यकारी टॉड ग्रीनबर्ग ने कहा, ''एमसीजी में टेस्ट क्रिकेट की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक बड़े मैच का आयोजन किया जाएगा। इसका आयोजन क्राित्रम रोशनी में होगा जो खेल की समृद्ध विरासत और टेस्ट क्रिकेट के आधुनिक विकास दोनों का जश्न मनाने का एक शानदार तरीका होगा।'' उन्होंने आगे कहा, ''इससे अधिक से अधिक दर्शकों की उपस्थिति तय करने में भी मदद मिलेगी साथ ही इस मैच का आनंद लेना भी एक अच्छा अनुभव होगा।'' ऑस्ट्रेलियाई टीम नवंबर में इंग्लैंड के खिलाफ शुरू होने वाली 2025-26 एशेज सीरीज की मेजबानी करेगी। इसी सीरीज का अंतिम टेस्ट मैच दिन-रात का टेस्ट होगा, जो टेस्ट क्रिकेट की 150वीं सालगिरह पर खेला जाएगा। ऑस्ट्रेलिया ने अभी तक 13 दिन-रात के टेस्ट मैच खेले हैं, जिसमें से 12 मैचों में उसने जीत हासिल की थी। इनमें से आठ मैचों का आयोजन एडिलेड में किया गया था।

शुभमन गिल फरवरी महीने के लिए आईसीसी के सर्वश्रेष्ठ पुरुष खिलाड़ी चुने गए

दुबई (एजेंसी)। भारत के स्टार सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल को फरवरी महीने के लिए आईसीसी (अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद) का महीने का सर्वश्रेष्ठ पुरुष खिलाड़ी चुना गया। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी और इंग्लैंड के खिलाफ सीमित ओवरों की घरेलू श्रृंखला के मैचों में बल्ले से यादगार प्रदर्शन करने वाले गिल ने ऑस्ट्रेलिया के स्टीव स्मिथ और न्यूजीलैंड के ग्लेन फिलिप्स को पछाड़ते हुए बुधवार को यह पुरस्कार जीता।

गिल ने फरवरी में पांच वनडे मैचों में 101.50 की औसत और 94.19 के स्ट्राइक रेट से 406 रन बनाए। उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की वनडे श्रृंखला में दो अर्धशतक और एक शतक जड़कर भारत को 3-0 से जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने नागपुर में खेले गये पहले एकदिवसीय में 87, कटक में खेले गये दूसरे एकदिवसीय में 60 और फिर अहमदाबाद में खेले गये तीसरे वनडे में 112 रन बनाए।

अहमदाबाद में 102 गेंद की पारी में 14 चौके और तीन छक्के जड़कर वह प्लेयर ऑफ द मैच के साथ श्रृंखला के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार जीतने में सफल रहे। उन्होंने इस शानदार लय को चैंपियंस ट्रॉफी में भी जारी रखा। दुबई में भारत के पहले मैच में बांग्लादेश के खिलाफ 101 रन की पारी खेलने के बाद उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ 46 रन बनाए। भारत यह दोनों मैच आसानी से जीतने में सफल रहा। गिल के लिए यह तीसरा आईसीसी महीने का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का सम्मान है। उन्होंने इससे पहले 2023 में दो बार (जनवरी और सितंबर) में इसे जीता था।

अगर मेरे पास पावर होती तो आईपीएल का यह नियम बदल देता : संजू सैमसन

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 सीजन से पहले राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन ने कहा कि अपने करीबी दोस्त विकेटकीपर-ओपनर जोस बटलर को जाने देना उनके लिए सबसे मुश्किल काम था और अगर उनके पास आईपीएल में कोई नियम बदलने की शक्ति होती तो वह खिलाड़ियों को कभी रिलीज न करने का होता।

राजस्थान रॉयल्स ने आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी से पहले सैमसन, रियान पराग, ध्रुव जुरेल, यशस्वी जायसवाल और शिमरोन हेटमायर को रिटेन किया जिसका मतलब था कि उनके पास बटलर को रिटेन करने के लिए कोई स्लॉट नहीं था, जो अब 22 मार्च से शुरू होने वाले आगामी सीजन में गुजरात टाइटन्स के लिए खेलेंगे।

सैमसन ने कहा, 'आईपीएल आपको एक टीम का नेतृत्व करने और उच्चतम स्तर पर खेलने का अवसर देता है, लेकिन यह आपको घनिष्ठ मित्रता बनाने की भी अनुमति देता है। जोस बटलर मेरे सबसे करीबी दोस्तों में से एक हैं। हमने सात साल तक एक साथ खेला, एक लंबी बल्लेबाजी साझेदारी बनाई। हम एक-दूसरे को बहुत अच्छी तरह से जानते थे और हमेशा संपर्क में रहते थे। वह मेरे लिए बड़े भाई की तरह थे।'

उन्होंने कहा, 'जब मैं कप्तान बना, तो वह मेरे उप-कप्तान थे और उन्होंने टीम का नेतृत्व करने में मेरी बहुत

बड़ी भूमिका निभाई। उन्हें जाने देना मेरे लिए सबसे चुनौतीपूर्ण चीजों में से एक रहा है। यहां तक कि इंग्लैंड श्रृंखला के दौरान मैंने उन्हें रात के खाने पर बताया कि मैं अभी भी इससे उबर नहीं पाया हूं। अगर मैं आईपीएल में एक चीज बदल सकता, तो मैं खिलाड़ियों को रिलीज करने का नियम बदलूंगा।'

सैमसन ने कहा, 'हालांकि इसके अपने सकारात्मक पहलू हैं, व्यक्तिगत स्तर पर आप वर्षों से बनाए गए कनेक्शन और रिश्ते खो देते हैं। यह मेरे लिए पूरी फ्रैंचाइजी, मालिकों, कोचों और राजस्थान से जुड़े सभी लोगों के लिए कठिन रहा है। जोस हमारे लिए परिवार था।'

साथ ही, सैमसन ने जुरेल, पराग और हेटमायर जैसे प्रमुख खिलाड़ियों को बनाए रखने के प्रभाव पर भी बात की। उन्होंने कहा, 'बेशक, यह एक बड़ी भूमिका निभाता है। पहले से ही टीम का हिस्सा रहे खिलाड़ियों का होना एक बेहतरीन कनेक्शन बनाता है। यह मेरा काम आसान बनाता है क्योंकि हम मैदान पर और बाहर दोनों जगह एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते हैं और इससे टीम के बेहतर समन्वय में मदद मिलती है।'

आईपीए की तैयारियों के लिए कोलकाता पहुंची केकेआर

कोलकाता। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) टीम 22 मार्च से शुरु हो रहे इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की तैयारियों के लिए कोलकाता पहुंच गयी है। टीम को यहां 12 मार्च से ईडन गार्डन्स में एक अभ्यास सत्र में भाग लेना है। इस कैंप से टीम को तैयारी का अंतिम अवसर मिलेगा। इस प्री-सीजन कैंप में नए कप्तान और मजबूत कोचिंग स्टाफ के नेतृत्व में रणनीति को बेहतर बनाने और टीम के तालमेल को मजबूत करने पर ध्यान दिया जाएगा। इस बार मुख्य कोच चंद्रकांत पंडित, सहायक कोच ओटिस गिब्सन और टीम मेंटर डवेन ब्रावो के मार्गदर्शन में टीम आईपीएल नये उत्साह से उतरेगी। गत विजेता टीम 22 मार्च को ईडन गार्डन्स में टूर्नामेंट के उद्घाटन मैच में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) का मुकाबला करेगी। केकेआर ने आईपीएल फाइनल में चार बार भाग लिया है, जिसमें से तीन बार (2012, 2014, 2024) चैंपियनशिप जीती है। वह 2021 सत्र में उपविजेता रही थी। केकेआर ने इस सत्र के जिए जहां अजिंक्य रहाणे को कप्तान बनाया है। वहीं आरसीबी ने रजत पाटीदार को कप्तानी सौंपी है।

आईसीसी रैंकिंग में रोहित तीसरे नंबर पर पहुंचे

दुबई । अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की ताजा एकदिवसीय बल्लेबाजी रैंकिंग में भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा तीसरे नंबर पर पहुंच गए हैं जबकि भारत के ही शुभमन गिल शीर्ष पर बने हुए हैं। रोहित ने न्यूजीलैंड के खिलाफ फाइनल में 76 रन की पारी खेली थी इससे उन्हें दो स्थानों का लाभ मिला है। वहीं टूर्नामेंट में 218 रन बनाने वाले अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली पांचवें स्थान पर हैं। वहीं उपन्यूजीलैंड के बल्लेबाजों को भी रैंकिंग में लाभ मिला है। डेरिल मिशेल एक स्थान के लाभ के साथ ही छठे स्थान पर पहुंच गए हैं, जबकि रचिन रविंद्र 14 पायदान की छलांग लागाकर 14वें स्थान पर पहुंच गए हैं। ग्लेन फिलिप्स भी छह पायदान ऊपर चढ़कर 24वें स्थान पर पहुंच गए हैं। कप्तान मिशेल सेंटनर को टूर्नामेंट में नौ विकेट लेने के कारण छह स्थान का लाभ मिला है वह चौथे स्थान पर पहुंच गए हैं। वह गेंदबाजी रैंकिंग में दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। वहीं माइकल ब्रेसवेल 10 पायदान ऊपर चढ़कर 18वें स्थान पर पहुंच गए हैं। भारतीय स्पिनरों कुलदीप यादव और रवींद्र जडेजा की रैंकिंग भी बेहतर हुई है। किया है। कुलदीप तीसरे स्थान पर पहुंच गए हैं, जबकि जडेजा पांच विकेट लेने के बाद 10वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

स्टोक्स को सीमित ओवरों के लिए भी कप्तान बना सकता है ईसीबी

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) टेस्ट टीम के कप्तान बेन स्टोक्स को एकदिवसीय और टी20 टीम की कप्तानी भी दे सकता है। चैम्पियंस ट्रॉफी में टीम के खराब प्रदर्शन के बाद जोस बटलर ने इंग्लैंड की टीम की सीमित ओवरों की टीम की कप्तानी छोड़ दी थी। ऐसे में अब बोर्ड नए विकल्पों पर विचार कर रहा है। वहीं ब्रेंडन मैकुलम टीम के कोच बने रहेंगे। मैकुलम टेस्ट के साथ ही सीमित ओवरों प्रारुप में भी कोच हैं और स्टोक्स से उनका अच्छा समन्वय है। ऐसे में माना जा रहा है कि ये जोड़ी इंग्लैंड क्रिकेट को आगे ले जाने का प्रयास करेगी।

इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड के मैनेजिंग डायरेक्टर रॉब की के अनुसार, स्टोक्स ने संकेत दिया है कि वह इंग्लैंड की सीमित ओवरों के प्रारुप की भी कप्तानी संभाल सकते

हैं। ईसीबी के अधिकारी ने हालांकि कहा कि इस बारे में कोई भी फैसला जल्दबाजी में नहीं लिया जाना चाहिए। पिछले 11 में से 10 मैच हारने के बाद बटलर को कप्तानी छोड़नी पड़ी। ऐसे में माना जा रहा था कि यदि अगली पीढ़ी को कमान मिलती है तो हैरी ब्रूक टीम के उपकप्तान होने के कारण सबसे बड़े दावेदार रहेंगे। रॉब की अभी सभी विकल्पों पर विचार कर रहे हैं। स्टोक्स ने जो रूट से टेस्ट टीम की कमान संभालने के बाद से ही एक अच्छे कप्तान के तौर पर अपने को साबित किया है पर बढ़ती उम्र और खराब फिटनेस उनका कमजोर पक्ष है। अभी भी वह हैमस्ट्रिंग समस्या से परेशान हैं। कुछ ही समय पहले घुटने की बड़ी सर्जरी भी उनको करानी पड़ी थी। स्टोक्स को लेकर रॉब की ने कहा है कि ये मूर्खतापूर्ण बात होगी अगर हम टेस्ट कप्तान पर विचार नहीं करते। वहीं जब स्टोक्स को लेकर पूछा गया कि इस प्रस्ताव पर उनकी क्या प्रतिक्रिया होगी, तो इस रॉब की ने कहा, ईमानदारी से कहूं तो मैंने उनसे इस बारे में बात नहीं की है। मैंने उनसे दूसरे दिन कहा था कि आप व्हाइट-बॉल कप्तानी के लिए विचाराधीन हैं। इस पर उनका रुख संकेतों में सकारात्मक दिखा।

ऋषभ की बहन की शादी में पहुंचे धोनी, रैना सहित कई क्रिकेटर

मसूरी । भारतीय क्रिकेट टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत की बहन साक्षी पंत की शादी में यहां पूर्व कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी सहित कई क्रिकेट खिलाड़ी पहुंचे। इस दौरान धोनी और सुरेश रैना ने जमकर डांस किया। इसका एक वीडियो भी सोशल मीडिया में आया है। ऋषभ की बहन की पिछले साल सगाई हुई थी। ऋषभ चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का फाइनल जीतने वाली भारतीय टीम का हिस्सा थे और वह सोमवार को ही भारत पहुंचे थे। इसके बाद वह परिवार के सदस्यों के साथ शादी समारोह में शामिल हुए। वहीं धोनी भी ऋषभ को काफी पसंद करते हैं। इसी कारण वह अपनी पत्नी के साथ मंगलवार को ही देहरादून पहुंचे थे। धोनी इससे पहले जनवरी 2024 में लंदन में हुए सगाई समारोह में भी शामिल हुए थे। इसके अलावा भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा और बल्लेबाजी सुपरस्टार विराट कोहली के भी शादी समारोह में शामिल होने की संभावना है। ऋषभ की बहन साक्षी की शादी कारोबारी अंकित चौधरी से हो रही है। शादी समारोह में देहरादून जाने से पहले धोनी ने चेन्नई में सीएसके कैंप में हिस्सा लिया और आईपीएल 2025 के लिए अपनी तैयारियां शुरू कीं। वहीं ऋषभ आईपीएल 2025 में लखनऊ सुपर जायंट्स की कप्तानी करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। उन्हें जनवरी में लखनऊ स्थित फ्रेंचाइजी का नया कप्तान बनाया गया था।

टीम इंडिया को आगे का सत्र है बेहद व्यस्त आईपीएल के बाद इंग्लैंड से खेलेगी टीम

मुम्बई । आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी जीतने के बाद अब भारतीय टीम का आगे का कार्यक्रम बेहद व्यस्त है। कुछ दिनों के आराम के बाद टीम के अधिकतर खिलाड़ी 22 मार्च से शुरू होने वाले आईपीएल के 18 वें सत्र में खेलते दिखेंगे।वहीं इसके बाद टीम को इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेलनी है। इसेस 2025-27 विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की शुरुआत होगी। भारतीय टीम इस बार विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल में नहीं पहुंच पाई है इसलिए उसका लक्ष्य नये सत्र की अच्छी शुरुआत करना रहेगा। भारत 18 साल के अंतराल के बाद पटौदी ट्रॉफी जीतना भी चाहेगा क्योंकि 2021-22 में वे इसे बहुत कम अंतर से हार गए थे। यह सीरीज रेड-बॉल क्रिकेट में देश के लिए नई शुरुआत भी कर सकती है क्योंकि 2024-25 सीजन में निराशाजनक प्रदर्शन के बाद इसमें एक नया कप्तान टीम की कमान संभाल सकता है।वहीं सफेद गेंद क्रिकेट में ध्यान टी20आई क्रिकेट पर रहेगा क्योंकि 2026 टी20 विश्व कप अगला आईसीसी टूर्नामेंट है। भारत का लक्ष्य इसमें अपने घरेलू मैदान पर अपने खिताब की रक्षा करना होगा। इस प्रतियोगिता की सहमेजबानी श्रीलंका भी करेगा। अगले 12 महीनों में, भारत नौ टेस्ट मैच और 12 वनडे मैच खेलेगा। सूर्यकुमार यादव की अगुवाई वाली टीम एशिया कप और टी20 विश्व कप के मैचों के अलावा 18 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच भी खेलेगी। भारतीय टीम इंग्लैंड दौरे पर 21 जून से 4 अगस्त 2025 के बीच 5 टेस्ट मैच खेलेगी। अगस्त में ही भारत को बांग्लादेश के दौरे पर 3 वनडे और इतने ही मुकाबलों की टी20 सीरीज खेलनी है। वहीं सितंबर 2025 में एशिया कप का आयोजन किया जाना है। वेस्टइंडीज की टीम 2 टेस्ट मैच खेलने अक्टूबर में भारत दौरा करेगी।

शेन बॉन्ड की जसप्रीत बुमराह को चेतावनी, यह करियर खत्म करने वाला हो सकता है

नई दिल्ली (एजेंसी)। न्यूजीलैंड के पूर्व तेज गेंदबाज और मुंबई इंडियंस (एमआई) के पूर्व गेंदबाजी कोच शेन बॉन्ड ने कहा कि भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की सर्जरी जिस जगह हुई थी, उसी जगह पर एक और चोट लगने से उनका करियर खत्म हो सकता है और उन्होंने कहा कि भविष्य में वह उन्हें एक बार में दो से ज़्यादा टेस्ट मैच खेलते हुए नहीं देखना चाहेंगे।

बुमराह पीठ के निचले हिस्से में चोट से जूझ रहे हैं, जिसकी वजह से वह रविवार को चैंपियंस ट्रॉफी में भारत की जीत के लिए मशहूर अभियान से बाहर हो गए। स्टार बल्लेबाज विराट कोहली द्वारा 'राष्ट्रीय खजाना' कहे जाने वाले इस गेंदबाज ने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2024-25 के दौरान भारत के लिए अकेले संघर्ष किया, जिसमें उन्होंने पांच मैचों में 32 विकेट लिए, इससे पहले इस साल जनवरी में सिडनी में अंतिम टेस्ट मैच में वह तनाव से संबंधित चोट से पीड़ित हो गए थे। उन्होंने तब से कोई प्रतिस्पर्धी क्रिकेट नहीं खेला है और भारत के विजयी ICC चैंपियंस ट्रॉफी अभियान को भी मिस किया है।

बुमराह बेंगलुरु में भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (BCCI) सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में अपना रिहैब पूरा कर रहे हैं और 22 मार्च से शुरू होने वाले आगामी इंडियन प्रीमियर लीग (IPL) के दौरान मुंबई इंडियंस (MI) के लिए उनकी उपलब्धता पर कोई स्पष्टता नहीं है। बुमराह को पहली बार पीठ में चोट नहीं लगी है, क्योंकि मार्च 2023 में उनकी इसके लिए सर्जरी हुई थी। शेन बॉन्ड ने पहले MI के साथ गेंदबाजी कोच के रूप में काम किया था और वर्तमान में राजस्थान रॉयल्स के गेंदबाजी कोच हैं। उन्होंने कहा कि बुमराह के कार्यभार को एक और चोट से बचने के लिए सावधानीपूर्वक प्रबंधन की आवश्यकता है।

बुमराह के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, 'जब वह स्कैन के लिए सिडनी गए थे, तो कुछ संदेश आ रहे थे कि उन्हें मोच और इस तरह की अन्य चीजें हैं। मुझे चिंता थी कि यह मोच नहीं होगी, यह उस क्षेत्र (पीठ) के आसपास की हड्डी की चोट हो सकती है। मुझे लगा कि अगर ऐसा था तो वह चैंपियंस ट्रॉफी में जगह बनाने के लिए संघर्ष कर सकते हैं।'

बॉन्ड ने इस बात पर प्रकाश डाला कि टी20 से टेस्ट क्रिकेट में तेजी से बदलाव में खतरे का क्षेत्र है। पूर्व तेज गेंदबाज ने इसे एक चुनौती के रूप में उजागर किया क्योंकि भारत 25 मई को आईपीएल समाप्त होने के बमुश्किल एक महीने बाद पांच टेस्ट मैचों के लिए इंग्लैंड दौरे की तैयारी कर रहा है। बॉन्ड ने कहा, 'देखिए, मुझे लगता है कि बूम ठीक हो जाएगे, लेकिन यह सिर्फ (कार्यभार) प्रबंधन (मायने रखता है)। दौरों और आगे के कार्यक्रम को देखते हुए उन्हें आराम देने के अवसर कहां हैं, लेकिन वास्तव में खतरे की अवधि कहां है? और अक्सर ऐसा होता है कि आईपीएल से टेस्ट चैंपियनशिप में बदलाव एक जोखिम होगा।'

उन्होंने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, 'आप जहां भी जाते हैं, खासकर टी20 से टेस्ट मैच में, यह चुनौतीपूर्ण होता है। अगर आप एकदिवसीय श्रृंखला खेल रहे हैं, तो यह आम तौर पर बहुत बुरा नहीं होता है। आप सप्ताह में तीन मैच खेलेंगे, आपको अभ्यास करना होगा, आप लगभग 40 ओवर (रेंज) में होंगे, यह वैसे भी टेस्ट मैच के सप्ताह के काफी करीब है। लेकिन टी20 में खासकर आईपीएल में जब आप सप्ताह में तीन मैच खेल रहे होते हैं, तो दो दिन की यात्रा

होती है, आपको एक प्रशिक्षण सत्र मिल सकता है, अगर आप भाग्यशाली हैं तो आप 20 ओवर गेंदबाजी कर सकते हैं। यह टेस्ट मैच के आधे या आधे से भी कम लोड के बराबर है, जो तब एक बड़ी छलांग है और आप लगातार दो दिन गेंदबाजी नहीं कर रहे हैं। जब आप इससे बाहर निकलते हैं तो यह एक बड़ी छलांग है।'

भारत का इंग्लैंड दौरा काफी कड़ा होगा जिसमें 28 जून से 3 अगस्त के बीच पांच टेस्ट मैच खेले जाएंगे। बॉन्ड ने कहा कि भारत को बुमराह पर उतना काम का बोझ नहीं डालना चाहिए, जितना उन्होंने ऑस्ट्रेलिया दौरे पर डाला था, उन्होंने कुल 151.2 ओवर गेंदबाजी की थी, जिसमें मेलबर्न में बॉक्सिंग डे पर खेले गए चौथे टेस्ट के दौरान 52 ओवर शामिल हैं, जो टेस्ट मैच में उनका सबसे अधिक ओवर था।

चैम्पियंस ट्रॉफी के बाद पाकिस्तानी क्रिकेटरों को झटका, मैच फीस में भारी कटौती, सुविधाओं में भी कमी

स्पोर्ट्स डेस्क । पाकिस्तान ने चैम्पियंस ट्रॉफी को सफल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी और हाईब्रिड मॉडल के तहत (भारत के सभी मैचों सहित फाइनल दुबई में) टूर्नामेंट सफल भी रहा। लेकिन अब घरेलू क्रिकेटरों पर पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने गाज गिराई है और खिलाड़ियों की मैच फीस में भारी कटौती व सुविधाओं में कटौती कर रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार पीसीबी ने आगामी राष्ट्रीय टी20 चैंपियनशिप में भाग लेने वाले क्रिकेटरों की मैच फीस 100,000 पाकिस्तानी रुपए प्रति मैच से घटाकर 10,000 प्रति मैच कर दी है जबकि रिजर्व खिलाड़ियों को प्रति मैच 5000 रुपए मिलेंगे। टूर्नामेंट 14 मार्च से शुरू हो रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक पीसीबी में घरेलू क्रिकेट के प्रमुख अब्दुल्ला खुर्रम नियाज़ी पिछले कुछ महीनों में घरेलू खिलाड़ियों के लिए 'सुविधाओं में कटौती' कर रहे हैं। एक सूत्र के हवाले से रिपोर्ट में कहा गया है, 'जिन खिलाड़ियों को पहले पांच और चार सितारा होटलों में रहने की सुविधा दी जा रही थी, उन्हें अब सस्ते आवास की सुविधा दी जा रही है। फीस के अलावा उनके लिए हवाई यात्रा भी कम कर दी गई है।' इतना ही नहीं खिलाड़ियों और अंपायरों को पिछले सीजन का बकाया भुगतान अभी तक नहीं मिला है। बोर्ड ने बोर्ड की नीति के अनुसार पूर्व टेस्ट क्रिकेटरों के लिए वार्षिक पेंशन वृद्धि भी लागू नहीं की है। हालांकि बोर्ड के भीतर प्रशासक उच्च वेतन प्राप्त करना जारी है। राष्ट्रीय चयनकर्ताओं और यहां तक कि हाल ही में संपन्न चैंपियंस कप के लिए 5 टीमों के साथ नियुक्त किए गए मेंटरों मिस्बाह उल हक, वकार यूनिस, शोएब मलिक, सरफराज अहमद और सकलैन मुश्ताक को प्रति माह लगभग 5 मिलियन रुपये का भुगतान किया जा रहा है।

तेजस्वी बोले- लॉ-एंड-ऑर्डर फेल, मुख्यमंत्री इस्तीफा दें

सदन में नीतीश और राबड़ी में बहस, पूर्व CM बोलीं- दूसरों के कहने पर महिलाओं का अपमान करते हैं

पटना। बिहार विधानमंडल के बजट सत्र के 9वें दिन सदन में खूब हंगामा हुआ। विधानसभा के अंदर और बाहर लॉ-एंड-ऑर्डर को लेकर आज सरकार और विपक्ष में जमकर बयानबाजी हुई। विधान परिषद में सी.एम नीतीश कुमार और राबड़ी देवी के बीच बहस हुई। राबड़ी ने लॉ-एंड-ऑर्डर को लेकर सवाल उठाया तो सी.एमअपनी सीट पर खड़े हो गए और RJD के शासन काल पर हमला बोला। सी.एम नीतीश ने कहा- 'पहले क्या होता था, महिलाओं की क्या स्थिति थी, महिलाएं कितनी पढ़ी लिखी थी, हमने महिलाओं के लिए काफी काम किया है।'सदन में विपक्ष से महिलाएं बोल रही थीं कि हमारा

हमेशा अपमान होता है, ये गलत बात है। कहीं से उचित नहीं है। इस पर सी.एम ने कहा- 'महिलाओं के लिए पहले कोई काम हुआ था। हमने कितना काम किया है। पहले महिलाओं को कोई पढ़ाता था? अब महिलाएं आगे हैं। पांचवीं क्लास तक महिलाएं पढ़ती थीं। आज महिलाएं कितनी आगे हैं। इन लोगों के चक्कर में चली गई हो तो कुछ नहीं जानती हो। पहले पूरी बात जानिए।' नीतीश बोले- इसलिए मैंने इन लोगों का साथ छोड़ा 'पति हट गए तो पत्नी को बना दिया, ये लोग गड़बड़ कर रहे थे। इसलिए इनका साथ छोड़ दिया हमने। आप लोग छपवा दीजिए कि हम अब इधर-उधर नहीं होंगे। यह लोग पहले मुसलमान को कितना पीटते थे और फिर वोट लेते रहते हैं। हम लोगों ने मुसलमान के लिए काफी काम किया है। हम अब जिसके साथ हैं,उसी के साथ रहेंगे कहीं इधर-उधर नहीं जाएंगे।' तेजस्वी ने मांगा सी.एम नीतीश का इस्तीफा वहीं सदन से बाहर निकले नेता तेजस्वी यादव ने भी जमकर सीएम नीतीश पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि बिहार में लॉ एंड ऑर्डर खत्म हो चुका है। सरकार कानून बदलवाकर अपराधियों को जेल से बाहर निकाल रही है। नीतीश कुमार ने अपराधियों के आगे सरेंडर कर दिया है। राबड़ी देवी और नीतीश कुमार की नोक-झोंक पर तेजस्वी बोले- 'नीतीश कुमार सिर्फ महिलाओं पर बोल सकते हैं। वे राज्य की पहली महिला सीएम पर बोल रहे हैं। लालू यादव और नीतीश कुमार में कोई तुलना नहीं है। नीतीश कुमार के पास कोई नीति और विचारधारा नहीं है । लालू यादव ने विचारधारा से समझौता नहीं किया विधानसभा परिसर में राजद विधायक अख्तरुल इस्लाम शाहीन ने कहा कि, हमारी एकता और संविधान को तोड़ता है, उसे उल्टा टांग देना चाहिए। चाहे वह बचौल हो या फिर कोई और हो। उन्होंने कहा कि, चुनाव से पहले तमाम बाबाओं को भेजा जा रहा है। केंद्र से मंत्री आ रहे हैं। सब घबराहट है। अब सब आएंगे। विजय चौधरी के जवाब पर ठहाके
जल संसाधन मंत्री विजय चौधरी के बयान पर सदन में ठहाका लगा। दरअसल, बेगूसराय विधायक कुंदन कुमार ने सवाल पूछा था कि बेगूसराय के बरौनी और अन्य प्रखंड में कृषि योग्य भूमि पर जल जमाव है। इसका जवाब देते हुए मंत्री विजय चौधरी ने कहा कि, बाढ़ के पानी से खेत की उत्पादकता बढ़ती है। विजय चौधरी के बयान के बाद सदन में बैठे विधायक हंसने लगे।

हाजीपुर में दो किशोरों की डूबने से मौत

वैशाली। में दो किशोर की मौत हुई है। सहदेई थाना क्षेत्र के बाजीतपुर चकस्तूरी में एक पोखर में नहाते समय दो किशोरों की डूबने से मौत हो गई। मृतकों की पहचान शिवम कुमार (13) और आदित्य कुमार (17) के रूप में हुई है। घटना उस समय हुई जब चार दोस्त पशुओं के लिए चारा लेने गए थे। इसके बाद वे पोखर में नहाने चले गए। नहाते समय चारों दोस्त डूबने लगे। स्थानीय लोगों की मदद से दो युवकों - शिवा कुमार और संजीव कुमार को बचा लिया गया। लेकिन शिवम और आदित्य गहरे पानी में चले गए और डूब गए। स्थानीय

लोगों ने तुरंत खोजबीन शुरू की, लेकिन दोनों के शव नहीं मिले। अगले दिन SDRF की टीम ने शवों को बाहर निकाला। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल हाजीपुर भेज दिया है।
शिवम कुमार देसरी स्थित एक निजी स्कूल में पढ़ता था और दो भाइयों में सबसे छोटा था।

अफेयर के शक में पत्नी और 3 बेटियों को मार-डाला

छत्तीसगढ़। के जांजगीर-चांपा जिले में पति ने अपनी पत्नी और 3 बेटियों को फावड़े से मार डाला। कोर्ट के मुताबिक हत्यारे ने अफेयर के शक में वारदात को अंजाम दिया। अब कोर्ट ने हत्यारे को चारों हत्याओं के केस में 4 बार उम्र कैद की सजा सुनाई है। वारदात बलौदा थाना क्षेत्र के देवरी गांव की है। जानकारी के मुताबिक, हत्यारे का नाम देशराज कश्यप (49) है। मरने वालों में पत्नी मोंगरा बाई (40) और 3 बेटियां पूजा (16), भाग्य लक्ष्मी (10) और याचना (6) शामिल है। हत्यारा पिछले 10 साल से मानसिक बीमारी का इलाज करवा रहा था। घटना वाले दिन

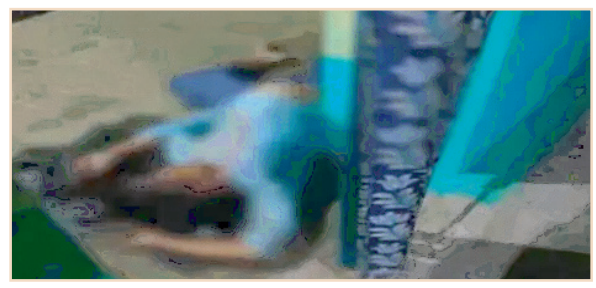

यानी 31 जुलाई 2023 को वह घर लौटा था।दरअसल, 31 जुलाई 2023 की रात खाना खाने के बाद मां और तीनों बेटियां कमरे में सो रही थी। आधीरात में हत्यारा देशराज उठा। घर में रखे फावड़े से पत्नी और तीनों बेटियों पर वार कर दिया, जिससे चारों ने मौके पर दम तोड़ दिया।1 और 2 अगस्त को दिनभर लोगों ने परिवार के किसी भी सदस्य को नहीं देखा। ऐसे में उन्हें अनहोनी की आशंका हुई। पड़ोसियों ने सरपंच को मामले की जानकारी दी। सरपंच ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और घर का दरवाजा खुलवाया। घर के अंदर पत्नी मोंगरा बाई और तीनों बेटियों की लाश लहूलुहान हालत में पड़ी थी। कमरे और घर में खून ही खून फैला हुआ था। एक लाश दरवाजे के पास पड़ी थी। बेटी की लाश जमीन पर थी। पुलिस 2 अगस्त को ही आरोपी को बलौदा बस स्टैंड से गिरफ्तार किया था।
लोक अभियोजक संदीप सिंह बनाफर के अनुसार, जांच में सामने आया था कि हत्या का कारण पत्नी पर चरित्र शंका थी। मामला कोर्ट में चल रहा था। जिला एवं सत्र न्यायाधीश शक्ति सिंह राजपूत ने चारों हत्याओं के लिए अलग-अलग 4 बार आजीवन कारावास और 1-1 हजार जुमार्ना लगाया है।

पिता ने नाच-गाकर पैसा कमाने बेटी को बिहार भेजा

दुर्ग । 6 दिन पहले बिहार के रोहतास जिले में स्थित रेड लाइट एरिया में छापेमारी के दौरान छत्तीसगढ़ की 41 नाबालिग लड़कियां देह व्यापार के धंधे में लिप्त मिलीं। इनमें तीन दुर्ग जिले की हैं। दुर्ग पुलिस की टीम रोहतास जाकर बच्चियों से मिल चुकी है। पूछताछ में बच्चियों ने बताया कि उनके साथ कोई देह व्यापार नहीं कराया जा रहा था। वे नाचने गाने का काम करते हैं। पैसा कमाने के लालच में उनके माता पिता ने बिहार नाचने के लिए भेजा था। पुलिस ने सभी लड़कियों अपने कब्जे में लेकर उन्हें वहां एक NGO के पास रखवाया है। इनके साथ एक नाबालिग लड़का भी है। इन सभी लड़कियों को लेने के लिए छत्तीसगढ़ के अलग-अलग थानों से पुलिस की

टीम गई है।दुर्ग पुलिस की टीम अभी शासापुर पहुंची हैं। कल टीम रोहतास पहुंचेगी। वहां वो लोग रोहतास पुलिस औ महिला बालविकास विभाग की टीम की मदद से तीनों बच्चियों को अपनी सुपुर्दगी में लेकर दुर्ग लाएगी। ऐसा कहा जा रहा है कि टीम बच्चियों को लेकर 13 मार्च की रात तक पहुंच जाएगी। डांस ग्रुप के ठिकानों पर रेड के दौरान मिली बच्चियां 9 मार्च को रोहतास जिले के नटवार थाना पुलिस ने नटवार बाजार में 2 डांसर ग्रुपों के ठिकाने पर छापेमारी की थी। दोनों ठिकानों से छत्तीसगढ़ से आई 41 नाबालिग लड़कियों को बरामद किया गया। इनके साथ चार लड़कों को भी बरामद किया गया। पुलिस ने इस कार्रवाई में पांच लोगों को हिरासत में लेकर मामला दर्ज किया है। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक रोहतास जिले की बाल कल्याण समिति ने सभी लड़कियों को बरामद किया। समिति ने बताया कि ज्यादातर लड़कियां गरीब परिवारों से हैं। इन लड़कियों के माता-पिता ने 30 से 50 हजार रुपए में अपनी बेटी का सौदा कर दिया था। पहले इन्हें ऑर्केस्ट्रा में डांस करने के लिए लाया गया, फिर जबरन गलत काम करवाया जाने लगा। इससे होने वाली कमाई का कुछ हिस्सा लड़कियों के माता-पिता को भी भेजा जाता था। छत्तीसगढ़ के इन जिलों की लड़कियां हुई बरामद बिहार के रेड लाइट इलाके से रेस्क्यू की गई लड़कियां छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चांपा, बलौदाबाजार, रायपुर, राजनांदगांव, बिलासपुर, दुर्ग समेत अन्य जिलों की हैं। छत्तीसगढ़ पुलिस की कई टीमें रोहतास भेजी गई हैं।

बारात से लौट रहे ऑर्केस्ट्रा संचालक की पीट-पीटकर हत्या

छपरा। के दाउदपुर थाना क्षेत्र में मंगलवार रात एक ऑर्केस्ट्रा संचालक की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। मृतक की पहचान एकमा थाना क्षेत्र के कोहारगर गांव निवासी शनिदेव राम के रूप में हुई है। शनिदेव अपने भाई ब्रजेश राम के साथ मांझी थाना क्षेत्र के मेहंदीगंज गांव में एक बारात से लौट रहे थे। रास्ते में बदमाशों ने स्कॉर्पियो से उनकी बाइक को टक्कर मार दी। मृतक के भाई ने बताया कि टक्कर के बाद शनि कुमार गिर गए। आरोपियों ने लाठी-डंडे और रॉड से हमला कर उनकी हत्या कर दी। बता दें कि मृतक युवक के परिजनों ने एक साल पहले भगवा झंडे का अपमान किया था। इनके खिलाफ एफआईआर भी दर्ज हुई थी। कांड का मुख्य कारण पुराना विवाद बताया जा रहा है। जिसमें अयोध्या राम मंदिर स्थापना को लेकर प्राण प्रतिष्ठा के लिए झंडा लगाए गए थे। दंगा भड़काने का मामला हुआ था दर्ज मृतक के भाई ब्रजेश और गांव के कई लोगों ने झंडे का विरोध और अपमान किया था। जिसके खिलाफ कोहरगड गांव के ग्रामीणों ने दंगा भड़काने का मामला दर्ज कराया था। जिसमें चार लोगों को नामजद अभियुक्त बनाया गया था। जिसकी

प्राथमिकी संख्या 28/24 एकमा थाना में दर्ज है। झंडा वाले विवाद पर जानकारी देते हुए एकमा थानाध्यक्ष ने बताया कि 20 जनवरी 2024 को कोहरगड दलित बस्ती में राम का धार्मिक झंडा लगाने को लेकर विवाद हुआ था। जिसमें 4 लोगों को नामजद अभियुक्त बनाया गया था। प्राथमिकी दर्ज किए जाने के बाद मामले के जांच के बाद सत्यता पाए जाने के बाद केस को चार्जशीट कर दिया गया है।परिजनों ने किया सड़क जाम
घटना की जानकारी मिलते ही परिजनों ने बुधवार को माझी-एकमा मुख्य मार्ग पर शव रखकर विरोध प्रदर्शन किया। इससे सड़क पर वाहनों की लंबी कतार लग गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए छपरा सदर अस्पताल भेज दिया है। दाऊदपुर थानाध्यक्ष नवलेश कुमार ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। आवेदन मिलने के बाद आगे की कार्रवाई की जा रही है।

भूपेश के घर छापा प्रदेश भर में ED का पुतला दहन

छत्तीसगढ़ के पूर्व CM भूपेश बघेल के घर पर ED रेड के खिलाफ कांग्रेस कार्यकताओं ने प्रदेशभर में पुतला दहन किया। रायपुर में भी कार्यकताओं ने ED के पुतले फूंके। इस दौरान कांग्रेस कार्यकताओं और पुलिस के झड़प भी हुई। कांग्रेस ने इसे बदले की कार्रवाई बताया है।कांग्रेस ने कहा कि मोदी सरकार विपक्षी दलों को दबाने के लिए केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है। वहीं भूपेश बघेल ने कहा कि ये सब बदनाम करने के लिए किया जा रहा है।

जब-जब मैं चुनाव को लेकर दूसरे राज्य गया, तब-तब मेरे यहां छापा पड़ा। उत्तर प्रदेश, असम, झारखंड इसके उदाहरण हैं, अब पंजाब गया तो छापा पड़ा। बघेल ने कहा कि कथित सीसी कांड को लेकर 7 साल लगे, कोर्ट ने बरी कर दिया। 5 साल से केवल जांच कर रहे हैं, पता नहीं कब तक जांच करेंगे। बिरनपुर, महादेव सट्टा घोटाला जैसे कई मामले हैं, जांच चल रही है, लेकिन अभी तक बताया नहीं गया कि किस मामले में जांच कर रहे हैं।रायपुर, धमतरी और कोंडागांव समेत कई जिलों में ED की कार्रवाई के खिलाफ पुतले फूंके गए। कांग्रेस कार्यकताओं ने बड़ी संख्या में विरोध जताया। पुतला दहन के दौरान पुलिस और कांग्रेसियों की कई जगहों पर झड़प भी हुई। दरअसल, सोमवार को छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री और AICC महासचिव भूपेश बघेल के घर एऊ ने छापेमारी की। यह जांच करीब 10 घंटे तक चली। टीम के जाने के बाद भूपेश बघेल ने कहा कि, 32-33 लाख रुपए और दस्तावेज टीम ले गई है। इसमें मंतूराम केस की पेनड्राइव भी है। करीब सुबह 8 बजे भूपेश और उनके बेटे चैतन्य के भिलाई-3 पदुमनगर स्थित घर पर चार गाड़ियों में ED की टीम पहुंची थी। दोपहर में कार्रवाई के बीच नोट गिनने और सोना जांचने की मशीनें भी मंगाई गई।

पटना में श्रीकृष्ण सिंह की स्मृति में जनसभा का आयोजन

पटना। के रविंद्र भवन में पहले मुख्यमंत्री और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बिहार केसरी श्रीकृष्ण सिंह की स्मृति में जनसभा की गई है। इस कार्यक्रम में जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद हैं। उनके साथ मंत्री जीवेश मिश्रा और अशोक चौधरी भी हैं। उप राज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा कि मेरे बड़े पिता में श्रीकृष्ण सिंह के निजी सचिव रहे हैं। मैं मानता हूं कि बिहार में कई महान व्यक्तियों का जन्म हुआ है। कांग्रेस के नेतृत्व में देवघर के मंदिर में दलितों का प्रवेश वर्जित हुआ था, लेकिन उन्होंने दलितों के लिए लाठी खाकर प्रवेश दिलाया था। वह एक ऐसे महान व्यक्ति हैं, जिनको शब्दों में नहीं बांधा जा सकता है। मैं समझता हूं कि उन्होंने संपूर्ण बिहार का नेतृत्व बिना जात पात के किया है। हमारे पिता के बेहद करीबी थे- अशोक चौधरी अशोक चौधरी ने कहा कि हम महापुरुषों को तब ही याद करते हैं, जब वह समाज में कोई छाप छोड़कर जाते हैं। हमारे पिताजी के बेहद करीबी थे। श्रीकृष्ण सिंह और रामधारी सिंह दिनकर पर हम जितनी चर्चा करें वह कम है। हमारे बिहार का डीएनए मजबूत है। हम पूरे देश दुनिया पर राज करने की क्षमता रखते हैं। उन्होंने बैद्यनाथ धाम में पीठ पर लाठी खाकर दलितों को अंदर प्रवेश करने का अधिकार दिलाया था। हम लोग आज संकल्प लें कि सभी जाति एक साथ मिलकर बिहार की परंपरा को वापस लौटाने का काम करेंगे।श्रीकृष्ण सिंह का योगदान और विरासत पर चर्चा कार्यक्रम में श्रीकृष्ण सिंह के योगदान की चर्चा की जा रही है। श्रीकृष्ण सिंह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी योद्धाओं में से एक थे और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बिहार के पहले मुख्यमंत्री बने। उन्होंने राज्य के औद्योगिक, सामाजिक और शैक्षणिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके नेतृत्व में बिहार में भाखड़ा-नंगल बांध, हेवी इंजीनियरिंग कॉपोरेशन, हिंदुस्तान स्टील लिमिटेड (अब सेल), आईआईटी खड़गपुर जैसे संस्थानों की नींव पड़ी, जिससे बिहार और देश के विकास को नई गति मिली। उनकी नीतियों और प्रशासनिक क्षमता के कारण ही उन्हें 'बिहार केसरी' की उपाधि दी गई। इस समारोह का मुख्य उद्देश्य श्रीकृष्ण सिंह के योगदान को याद करना और नई पीढ़ी को उनके आदर्शों से प्रेरित करना है। यह आयोजन उनके विचारों, उनके द्वारा किए गए कार्यों और उनकी नेतृत्व क्षमता को सम्मान देने का एक महत्वपूर्ण अवसर होगा।

संक्षिप्त डायरी

असली होली नवंबर में होगी जब फिर NDA सरकार आएगी

पटना। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के पार्टी कार्यालय में बुधवार को होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें केंद्रीय मंत्री और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि इस बार होली के रंग बिहार में नया इतिहास लिखने जा रहे हैं। यह तो खुशियों के रंगों की बस शुरूआत भर है, असली होली तो नवंबर के महीने में होगी, जब बिहार में एक बार फिर से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की सरकार बनेगी। इस मौके पर पार्टी के तमाम वरिष्ठ नेता, कार्यकर्ता और समर्थक भी शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान पारंपरिक अंदाज में रंग-गुलाल उड़ाए गए और एक-दूसरे को होली की बधाइयां दी गईं। पूरे माहौल में उत्साह और उल्लास देखने को मिला। होली मिलन समारोह में पार्टी कार्यकताओं और नेताओं का भारी उत्साह देखने को मिला। हर कोई एक-दूसरे को अबीर-गुलाल लगाकर शुभकामनाएं दे रहा था। मंच पर चिराग पासवान के आते ही कार्यकताओं ने जोरदार नारेबाजी की और पूरे माहौल को जोशीला बना दिया। चिराग पासवान ने सभी बिहारवासियों को होली की ढेर सारी शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि यह त्योहार आपसी भाईचारे और प्रेम का प्रतीक है। उन्होंने बिहार की जनता से अपील की कि वे मिल-जुलकर इस पर्व को मनाएं और प्रदेश की तरक्की के लिए एकजुट रहें।

जमीन के लिए दामाद ने ससुराल में चलाई गोली, गिरफ्तार

पटना। में एक दामाद ने अपनी ससुराल में जमीन हथियाने के लिए फायरिंग कर दी। घटना मंगलवार देर रात ही है। इसका सीसीटीवी बुधवार को सामने आया है। फुटेज में आरोपी को कमर से पिस्टल निकालकर फायरिंग करते हुए दिख रहा है। वहीं, पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोपी दामाद को गिरफ्तार कर लिया है। सास शकुंतला देवी ने बताया कि आरोपी दामाद रात में घर आया और दरवाजा खटखटाने लगा। जब दरवाजा नहीं खोला गया तो उसने फायरिंग कर दी। उन्होंने कहा कि आरोपी अकबरपुर नया टोला स्थित उनके घर को अपने नाम करवाने का दबाव बनाता है। वह पहले भी कई बार मारपीट कर चुका है।आरोपी की पत्नी प्राइमरी स्कूल में शिक्षिका है। उन्होंने बताया कि उन्हें और उनकी मां को जान से मारने की नीयत से गोली चलाई गई। उन्होंने कहा कि पति अक्सर जान से मारने की धमकी देता है। इस घटना के बाद पूरा परिवार दहशत में है। पहले भी आरोपी ने सास का गला दबाने का प्रयास किया था। पड़ोसी सौरव कुमार ने बताया कि यह पहली बार नहीं है। इससे पहले भी आरोपी ईंट-पत्थर से घर पर हमला कर चुका है। बाढ़ थाना अध्यक्ष अरुण कुमार सिंह ने कहा कि आरोपी की पहचान कर ली गई है और मामले की जांच की जा रही है। पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार एएसपी राकेश कुमार ने बताया कि पुलिस ने मौके पर पहुंचकर सीसीटीवी फुटेज की जांच की। इसके बाद आरोपी की पहचान कर छापेमारी की गई। फायरिंग करने वाले व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। उसके पास से एक देसी कट्टा और एक जिंदा कारतूस बरामद किया गया है। जांच में पता चला कि दोनों साढ़ू हैं। आपस में इनका पारिवारिक विवाद चल रहा है, जिसके कारण इस घटना को अंजाम दिया गया है।

दरभंगा में वर्दी में शराब पीते चौकीदार का वीडियो

दरभंगा। जिले के बहेड़ी थाना के एक चौकीदार का वर्दी में शराब पीते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में चौकीदार विजय पासवान झोपड़ी में बैठकर शराब पीते नजर आ रहा है। थानाध्यक्ष वरुण कुमार गोस्वामी ने बताया कि बहेड़ी थाना के दो चौकीदारों का शराब पीते वीडियो सामने आया है, जिसकी जांच की जा रही है। उन्होंने पुष्टि की कि वीडियो में दिख रहा व्यक्ति विजय पासवान है, लेकिन दूसरे व्यक्ति की पहचान की जा रही है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। वायरल हुए वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि वर्दी में चखना के साथ चौकीदार एक झोपड़ी में शराब पी रहा है। उसे साथ देने में कई और लोग है। वीडियो में कहा जा रहा है कि एक दूसरा चौकीदार भी है।शराबबंदी कानून लागू होने के बाद चौकीदारों को भी इसकी निगरानी की जिम्मेदारी दी गई थी, लेकिन इस घटना ने कानून व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि कुछ चौकीदारों की मिलीभगत से शराब तस्करी को बढ़ावा मिल रहा है।

'नमाज का समय नहीं बदल सकता, होली रोकी जाए

दरभंगा। की मेयर अंजुम आरा ने जिला प्रशासन से शुक्रवार को जुम्मे की नमाज को देखते हुए होली खेलने पर रोक लगाने की अपील की है। उन्होंने मंगलवार को कहा कि जुम्मे की नमाज का टाइम आगे जा नहीं सकता है, इसलिए होली पर डेढ़ घंटे का ब्रेक होना चाहिए। मेयर ने ये भी कहा, 'डेढ़ घंटा मस्जिद और नमाज पढ़ने की जगहों से होली खेलने वाले दूरी बना कर रखें।' दरअसल, दरभंगा में जिला प्रशासन की ओर से मंगलवार को होली को देखते हुए शांति समिति की बैठक बुलाई गई थी। बैठक के बाद मेयर ने कहा, 'मैं लोगों से और जिला प्रशासन से अपील करती हूं कि शुक्रवार को दोपहर 12:30 से 2 बजे तक होली को रोका जाए।मेयर का बयान ऐसे समय में आया जब बीजेपी विधायक हरिभूषण बचौल ने दो दिन पहले होली में मुसलमानों को घर से बाहर न निकलने की नसीहत दी थी। बता दें कि अंजुम आरा 2023 में जेडीयू में शामिल हुई थीं। उनके इस बयान के बाद अब पार्टी के नेता ही उनपर निशाना साधा रहे हैं। जदयू नेता और मंत्री अशोक चौधरी ने कहा, 'दरभंगा मेयर को पार्टी से निकाल देना चाहिए। ऐसे बयान बर्दाश्त नहीं किए जाएंगे।' वहीं, मंत्री श्रवण कुमार ने मेयर को ऐसे बयान न देने की नसीहत दी है। मेयर ने कहा, 'त्योहारों पर कोई झगड़ा नहीं चाहता, लेकिन कुछ असामाजिक तत्व माहौल बिगाड़ने की कोशिश करते हैं। पहले भी कई बार होली और रमजान एक ही दिन पड़े हैं। तब भी दोनों त्योहार शांतिपूर्ण तरीके से मनाए गए थे।'

संक्षिप्त खबरें

ग्वालियर-पुरी होली स्पेशल ट्रेन का परिचालन 14 से

धनबाद(बिभा) : होली के अवसर पर यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ के मद्देनजर उनकी सुविधा हेतु गया-कोडरमा-पारसनाथ-ने.सु.च.बोस गोमो स्टेशन के रास्ते होली स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जाएगा। 01929 ग्वालियर-पुरी होली स्पेशल 14.03.25 से 28.03.25 तक (03फेरा) शुक्रवार। 01930 पुरी - ग्वालियर होली स्पेशल 15.03.25 से 29.03.25 तक (03फेरा) शनिवार। वहीं बोकारो स्टील सिटी झचंद्रपुरा झने.सु.च.बोस गोमो झकोडरमा झगया स्टेशन के रास्ते होली स्पेशल ट्रेनों का परिचालन 08537 विशाखपट्टणम-पटना होली स्पेशल16.03.25,23.03.25 एवं 30.03.25 रविवार 08538 पटना - विशाखपट्टणम होली स्पेशल 7.03.25, 24.03.25 एवं 31.03.25सोमवार से चलेगी।

होली की पूर्व संध्या पर मुख्यालय हाजीपुर में हास्य कवि-सम्मेलन का आयोजन

हाजीपुर(बिभा) : महाप्रबंधक की अध्यक्षता में पूर्व मध्य रेल, मुख्यालय हाजीपुर द्वारा हास्य कवि-सम्मेलन का आयोजन महाप्रबंधक, अपर महाप्रबंधक व प्रधान विभागाध्यक्षों व आमंत्रित कवियों द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलित कर किया गया. महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह ने कवि सम्मेलन में आमंत्रित कवियों का स्वागत किया और कहा कि इनकी कविताओं में अबीर होगा, गुलाल होगा और रंगों का संसार होगा, साथ ही उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को होली की शुभकामनाएं दीं- अपर महाप्रबंधक ने आमंत्रित कवियों का स्वागत करते हुए कहा कि हास्य कवि सम्मेलन होली और हास्य का अद्भुत मिलन होता है. मुख्य राजभाषा अधिकारी सह प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक ने कहा कि जिस प्रकार भारतीय रेल हमारे देश को भौगोलिक रूप से एक सूत्र में जोड़ती है उसी प्रकार हिंदी हमारे देश के करोड़ों लोगों के हृदय को एक विराट हृदय में पिरोती है.इस कवि-सम्मेलन में नामचीन शायरा आराधना प्रसाद, शायर समीर परिमल, कमल किशोर वर्मा, सीमा रानी, अमीर हमजा उन्होंने अपनी लाजबाव शायरी और प्रस्तुति से महफिल को जीत लिया.

होली स्पेशल ट्रेनों का परिचालन 13 से

हाजीपुर(बिभा): होली के अवसर पर यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ के मद्देनजर रेलवे द्वारा कई स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है । इसी कड़ी में निम्नलिखित होली स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जाएगा। गाड़ी सं. 08537/08538 विशाखपट्टणम-पटना-विशाखपट्टणम स्पेशल (गया-कोडरमा- बोकारो-रांची-सम्बलपुर के रास्ते) - गाड़ी सं. 08537 विशाखपट्टणम-पटना स्पेशल 16, 23 एवं 30 मार्च, 2025 को विशाखपट्टणम से 19.30 बजे खुलकर अगले दिन 21.00 बजे पटना पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी सं. 08538 पटना-विशाखपट्टणम स्पेशल 17, 24 एवं 31 मार्च, 2025 को पटना से 22.30 बजे खुलकर तीसरे दिन 03.50 बजे विशाखपट्टणम पहुंचेगी । गाड़ी सं. 04078/04077 नई दिल्ली-कटिहार-नई दिल्ली स्पेशल (डीडीयू-पाटलिपुत्र- हाजीपुर-बरौनी के रास्ते) - गाड़ी सं 04078 नई दिल्ली-कटिहार स्पेशल 13 मार्च, 2025 को नई दिल्ली से 14.45 बजे खुलकर अगले दिन 07.20 बजे पाटलिपुत्र रूकते हुए 14.00 बजे कटिहार पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी सं. 04077 कटिहार-नई दिल्ली स्पेशल 14 मार्च, 2025 को कटिहार से 18.45 बजे खुलकर अगले दिन 00.55 बजे पाटलिपुत्र रूकते हुए 18.00 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी । गाड़ी सं. 04084/04083 नई दिल्ली-कामाख्या-नई दिल्ली स्पेशल (डीडीयू-पाटलिपुत्र- हाजीपुर-बरौनी-कटिहार के रास्ते) - गाड़ी सं 04084 नई दिल्ली-कामाख्या स्पेशल 13 मार्च, 2025 को नई दिल्ली से 19.15 बजे खुलकर अगले दिन 11.13 बजे पाटलिपुत्र रूकते हुए तीसरे दिन 08.30 बजे कामाख्या पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी सं. 04083 कामाख्या-नई दिल्ली स्पेशल 15 मार्च, 2025 को कामाख्या से 16.00 बजे खुलकर अगले दिन 10.03 बजे पाटलिपुत्र रूकते हुए तीसरे दिन 03.30 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी । गाड़ी सं. 04080/04079 आनंद विहार-जोगबनी-आनंद विहार स्पेशल (डीडीयू-पाटलिपुत्र-हाजीपुर-बरौनी-कटिहार के रास्ते) - गाड़ी सं 04080 आनंद विहार-जोगबनी स्पेशल 13 मार्च, 2025 को आनंद विहार से 19.00 बजे खुलकर अगले दिन 11.53 बजे पाटलिपुत्र रूकते हुए 23.00 बजे जोगबनी पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी सं. 04079 जोगबनी-आनंद विहार स्पेशल 15 मार्च, 2025 को जोगबनी से 06.40 बजे खुलकर 15.03 बजे पाटलिपुत्र रूकते हुए अगले दिन 08.25 बजे आनंद विहार पहुंचेगी । गाड़ी सं. 01929/01930 ग्वालियर-पुरी-ग्वालियर स्पेशल (डीडीयू-गया-कोडरमा- गोमो-आद्रा-कटक के रास्ते) - गाड़ी सं. 01929 ग्वालियर-पुरी स्पेशल 14, 21 एवं 28 मार्च, 2025 को ग्वालियर से 13.00 बजे खुलकर अगले दिन 00.10 बजे डीडीयू रूकते हुए 20.15 बजे पुरी पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी सं. 01930 पुरी-ग्वालियर स्पेशल 15, 22 एवं 29 मार्च, 2025 को पुरी से 23.45 बजे खुलकर अगले दिन 19.00 बजे डीडीयू रूकते हुए तीसरे दिन 09.25 बजे ग्वालियर पहुंचेगी । गाड़ी सं. 09012 बरौनी-उधना स्पेशल (हाजीपुर-पाटलिपुत्र-डीडीयू-प्रयागराज छिवकी-इटारसी-भुसावल के रास्ते) - गाड़ी सं. 09012 बरौनी-उधना स्पेशल 16 मार्च, 2025 को बरौनी से 22.30 बजे खुलकर अगले दिन 01.35 बजे पाटलिपुत्र, 06.20 बजे डीडीयू रूकते हुए तीसरे दिन 09.00 बजे उधना पहुंचेगी । गाड़ी सं. 07316 मुजफ्फरपुर-हुब्बल्लि स्पेशल (हाजीपुर-पाटलिपुत्र-डीडीयू-प्रयागराज छिवकी-जबलपुर-इटारसी-भुसावल-पुणे के रास्ते) - गाड़ी सं. 07316 मुजफ्फरपुर- हुब्बल्लि स्पेशल 15 मार्च, 2025 को मुजफ्फरपुर से 14.15 बजे खुलकर 16.00 बजे पाटलिपुत्र, 19.25 बजे डीडीयू रूकते हुए तीसरे दिन 10.30 बजे हुब्बल्लि पहुंचेगी । गाड़ी सं. 07312 पटना-वास्को डी गामा स्पेशल (डीडीयू-प्रयागराज छिवकी-जबलपुर-इटारसी-भुसावल-कल्याण के रास्ते) - गाड़ी सं. 07312 पटना-वास्को डी गामा स्पेशल 16 मार्च, 2025 को पटना से 17.40 बजे खुलकर 20.50 बजे डीडीयू रूकते हुए तीसरे दिन 10.30 बजे वास्को डी गामा पहुंचेगी । गाड़ी सं. 06212 दानापुर-मैसूर स्पेशल (डीडीयू-प्रयागराज छिवकी-जबलपुर- इटारसी-भुसावल-पुणे के रास्ते) - गाड़ी सं. 06212 दानापुर-मैसूर स्पेशल 16 मार्च, 2025 को दानापुर से 01.05 बजे खुलकर 05.00 बजे डीडीयू रूकते हुए तीसरे दिन 03.40 बजे मैसूर पहुंचेगी । यात्रीगण रेल परिचालन से जुड़ी किसी भी प्रकार की अद्यतन जानकारी रेलवे हेल्पलाइन नंबर 139 डायल कर अथवा नेशनल ट्रेन इंक्वायरी सिस्टम (एन.टी.ई.एस) वेब पोर्टल या मोबाइल एप से प्राप्त कर सकते हैं ।

महिला और बाल कल्याण के लिए प्रतिबद्धता को सुदृढ़ बनाना हमारी प्राथमिकता : अन्नपूर्णा

बिभा संवाददाता

रांची : केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी के नेतृत्व में भारत सरकार के एक प्रतिनिधिमंडल ने महिलाओं की स्थिति पर आयोग के 69वें सत्र में भाग लिया। इस सत्र का शुभारंभ 10 मार्च 2025 को न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में हुआ।

अन्नपूर्णा देवी ने कल अमेरिका के न्यूयॉर्क में मंत्रिस्तरीय फोरम में भारत की ओर से अपना राष्ट्रीय वक्तव्य दिया। उन्होंने लैंगिक समानता पर भारत की प्रगति का उल?लेख करते हुए कहा कि भारत ने जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए परिवर्तनकारी 'संपूर्ण-सरकार' और 'संपूर्ण-समाज दृष्टिकोण' के साथ उनसे जुड़ी चिंता के 12 महत्वपूर्ण क्षेत्रों को संबोधित किया है।

उन्होंने प्रमुख योजनाओं के परिवर्तनकारी प्रभावों का भी उल?लेख किया, जिन्होंने महिलाओं और बच्चों के लिए स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा तथा आर्थिक अवसरों को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

केंद्रीय मंत्री ने भारत सरकार की निरंतर रूप से जारी प्रतिबद्धता की पुष्टि की और मंत्रिस्तरीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया। इस सम?मेलन में लैंगिक समानता और महिलाओं एवं बालिकाओं के सशक्तीकरण के लिए राष्ट्रीय स?तर पर प्राथमिकता वाले विषय-सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में योगदान देने के उद्देश्य से बीजिंग प्लेटफॉर्म फॉर एक्शन के कार्यान्वयन के लिए पुनः प्रतिबद्धता, संसाधन उपलब्ध कराना और इसमें तेजी लाने पर चर्चा की गई।

मजबूत कार्यान्वयन और पहुंच की आवश्यकता पर बल देते हुए मंत्री महोदया ने यह सुनिश्चित करने के लिए सरकार के संकल्प को दोहराया कि प्रत्येक महिला और लड़की को उनके अधिकारों तक पहुंच सुनिश्चित हो।

मंत्री महोदया ने कहा कि महिलाओं और बच्चों का कल्याण हमारे देश की प्रगति का मूल है।

बहुआयामी दृष्टिकोण के माध्यम से, हम एक ऐसे भविष्य की दिशा में कार्य कर रहे हैं जहां हर महिला सशक्त हो और हर बच्चे का पालन-पोषण सुरक्षित और सहायक वातावरण में हो।

इस सत्र में सभी संयुक्त राष्ट्र सदस्य देशों, अंतर-सरकारी संगठनों, निजी क्षेत्र, हितधारकों, शिक्षाविदों, नागरिक समाज, महिला समूहों और संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों की व?यापक स?तर पर भागीदारी रही।

सीएसडब्ल्यू के 69वें सत्र में उन?होंने लैंगिक समानता और सामाजिक कल्याण पर सहयोग को मजबूत करने के लिए सुश्री मेलरोज कार्मिंटी (सिएरा लियोन), श्री सोडिक एस सफोएव (उजबेकिस्तान), डॉ. विंध्या पर्साड (गुयाना) और सुश्री एंटोनिया ओरेलाना ग्वारेलो (चिली) सहित प्रमुख नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठकों में भाग लिया।

सीएसडब्ल्यू एक प्रमुख वैश्विक अंतर-सरकारी निकाय है और यह लैंगिक समानता, अधिकारों और महिलाओं के सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से समर्पित है। संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद (ईसीओएसओसी) के कार्यात्मक आयोग के एक सत्र का आयोजन 10 से 21 मार्च, 2025 तक किया जा रहा है।

चंडीगढ़ में महाराष्ट्र के पदकों का बोलबाला

बिभा संवाददाता

रांची : 5 मार्च से 8 मार्च 2025 तक चंडीगढ़ में आयोजित अखिल भारतीय सिविल सेवा योगासन खेल प्रतियोगिता 2024-25 में महाराष्ट्र सरकार की टीम ने सफलता की अपनी परंपरा जारी रखी। इस योग प्रतियोगिता में 24 राज्य और केंद्र शासित प्रदेश सामिल हुऐ थे इस योग प्रतियोगिता में 24 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के विभिन्न आयु समूहों के लगभग 400 एथलीटों ने भाग लिया था! महाराष्ट्र टीम को 5 स्वर्ण पदक, 7 रजत पदक, 6 कांस्य पदक मिला है! महाराष्ट्र टीम के दूसरे स्थान के प्रदर्शन को हर तरफ से प्रशंसा और शुभकामनाएं मिल रही हैं।

योगा स्पर्धा विजेता का नाम

स्वर्ण पदक योगिता देसाई, योगेश्वर सानप ब्रॉन्झ पदक, दयानंद बिडवे सिल्वर मेडल , योगिता देसाई ब्रॉन्झ मेडल, योगेश्वर सानप ब्रॉन्झ मेडल, दत्ताराम सावंत ब्रॉन्झ मेडल, योगेश्वर सानप, सचिन गावडे ब्रॉन्झ मेडल
गोल्ड मेडल वीणा रानडे
शुभांगी शेजुळ
सिल्व्हर मेडल योगिता देसाई
ममता पावसकर
गोल्ड मेडल दत्ताराम सावंत
जगन्नाथ लांडगे
सिल्व्हर मेडल शुभांगी चिकटे
वीणा रानडे
सिल्व्हर मेडल ममता पावसकर
भारती खराडे।

पीएम सूर्य घरः मुफ्त बिजली योजना ने 10 लाख इंस्टॉलेशन का कीर्तिमान स्थापित किया

बिभा संवाददाता

रांची : पीएम सूर्य घरः मुफ्त बिजली योजना (पीएमएसजीएमबीवाई, दुनिया की सबसे बड़ी घरेलू रूफटॉप सौर पहल है, ने 10 मार्च 2025 तक देश भर में 10.09 लाख इंस्टालेशन के साथ एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर हासिल किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 13 फरवरी 2024 को शुरू की गई इस महत्वाकांक्षी योजना का उद्देश्य 1 करोड़ आवासीय घरों को रूफटॉप सौर प्रणालियों के माध्यम से मुफ्त बिजली प्रदान करना और पारंपरिक बिजली स्त्रोतों पर निर्भरता को कम करना है, साथ ही नागरिकों को ऊर्जा उत्पादक बनने में सक्षम बनाना है। यह योजना प्रत्येक घर को 100 पेड़ लगाने के बराबर कार्बन उत्सर्जन को कम करके जलवायु परिवर्तन शमन में योगदान करने में सक्षम बनाती है।

भारत के रूफटॉप सौर क्षेत्र को आगे बढ़ाना

इस योजना का कुल परिव्यय 75,021 करोड़ है। आसान वित्तपोषण की सुविधा के लिए, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री प्रहलाद जोशी ने हाल ही में मुंबई में नवीकरणीय ऊर्जा के लिए वित्त जुटाने पर राष्ट्रीय कार्यशाला में शीर्ष बैंकरों के साथ एक बैठक की, जिसमें उनसे योजना के तहत परेशानी मुक्त ऋण वितरण सुनिश्चित करने का आग्रह किया गया। चर्चाओं में कई प्रमुख निष्कर्ष निकले, जिनमें वित्त तक,पहुंच को अनलॉक करने के लिए कम लागत वाले वित्तपोषण, अभिनव वित्तपोषण मॉडल, वैश्विक जलवायु निधियों तक बेहतर पहुंच और नई तकनीकों के लिए बेहतर जोखिम-साझाकरण तंत्र की आवश्यकता शामिल है। बैठक में भारत के स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन का समर्थन करने के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी को मजबूत करने और हरित वित्तीय उपकरणों के विस्तार के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया।

सरकार रूफटॉप सोलर पहल को सार्वजनिक बुनियादी ढांचे तक भी विस्तारित कर रही है, जिससे सरकारी भवनों पर सौर ऊर्जा प्रणालियों की स्थापना को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह प्रयास न केवल परिचालन ऊर्जा लागत को कम करता है बल्कि वाणिज्यिक और औद्योगिक क्षेत्रों के लिए एक मॉडल के रूप में भी काम करता है, जिससे पूरे देश में सौर ऊर्जा को व्यापक रूप से अपनाने को प्रोत्साहन मिलता है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, आत्मनिर्भर भारत पहल के अनुरूप, पीएम सूर्य घरः मुफ्त बिजली योजना भारत में बनने वाले सौर मॉड्यूल और सेल के उपयोग को अनिवार्य करके घरेलू विनिर्माण का समर्थन करती है। 10 मार्च 2025 तक, इस योजना ने 3 गीगावॉट से अधिक रूफटॉप सौर क्षमता की स्थापना को सुगम बनाया है, और मार्च 2027 तक अतिरिक्त 27 गीगावॉट का लक्ष्य रखा गया है। यह पहल इनवर्टर और बैलेंस ऑफ प्लांट (बीओपी) घटकों के स्थानीय उत्पादन को भी बढ़ावा दे रही है, जिससे भारत के नवीकरणीय ऊर्जा पारिस्थितिकी तंत्र को और मजबूती मिल रही है और 'मेक इन इंडिया' के दृष्टिकोण को बढ़ावा मिल रहा है।

केंद्रीय मंत्री श्री प्रह्लाद जोशी के मार्गदर्शन में, एमएनआरई तेजी से क्रियान्वयन, त्वरित तैनाती के लिए बुनियादी ढांचा निर्माण, कुशल सब्सिडी वितरण सुनिश्चित करने और व्यापक जागरूकता अभियान चलाने की दिशा में काम कर रहा है। यह योजना जनता और सरकार से लगातार भारी समर्थन प्राप्त कर रही है, जो भारत के लिए स्वच्छ, हरित और ऊर्जा-सुरक्षित भविष्य की ओर एक परिवर्तनकारी कदम है।

सब्सिडी और प्रोत्साहन के साथ परिवारों को सशक्त बनाना

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) द्वारा कार्यान्वित इस योजना को 47.3 लाख आवेदन प्राप्त हुए हैं। 6.13 लाख लाभार्थियों को सफलतापूर्वक सब्सिडी प्राप्त हुई है, जिसकी राशि 4,770 करोड़ है। www.pmsuryaghar.gov.in के माध्यम से पूरी तरह से स्वचालित आवेदन, विक्रेता चयन और सब्सिडी रिडीम प्रक्रिया के साथ, सब्सिडी आवेदकों के बैंक खातों में 15 दिनों के भीतर जमा हो जाती है।

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, पीएम सूर्य घरः मुफ्त बिजली योजना की एक प्रमुख विशेषता 12 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबीपीएसबी) के माध्यम से 6.75 प्रतिशत की रियायती ब्याज दर पर 2 लाख रुपये तक के ऋण के लिए संपार्श्विक-मुक्त ऋण का प्रावधान है, जिससे रूफटॉप सौर इंस्टॉलेशन आम लोगों के लिए अधिक सुलभ हो गया है। आसान ऋण सुविधा के साथ, एक) के माध्यम से 6.75प्रतिशत की रियायती ब्याज दर पर 2 लाख रुपये तक के ऋणों के लिए बिना किसी जमानत के ऋण का प्रावधान है, जिससे रूफटॉप सौर इंस्टॉलेशन आम जनता के लिए अधिक सुलभ हो सके। आसान ऋण सुविधा के साथ, 3 किलोवाट रूफटॉप सौर प्रणाली को 15,000/- जितना कम निवेश करके स्थापित किया जा सकता है, जो 25 वर्षों में 15 लाख तक का रिटर्न दे सकता है।

ऋण आवेदन प्रक्रिया भी पूरी तरह से स्वचालित और ऑनलाइन है। अब तक, 3.10 लाख ऋण आवेदन प्राप्त हुए हैं, जिनमें से 1.58 लाख ऋण स्वीकृत और 1.28 लाख वितरित किए जा चुके हैं, जिससे संभावित लाभार्थियों के लिए व्यापक पहुंच सुनिश्चित की जा सके। लाभार्थियों को 3 किलोवाट तक के रूफटॉप सौर प्रणाली के लिए ?78000 तक की सब्सिडी मिलती है सब्सिडी मिलती है, जिससे इंस्टॉलेशन लागत काफी कम हो जाती है।

कई राज्यों में उल्लेखनीय प्रगति

इस योजना में कई राज्यों में उल्लेखनीय प्रगति देखी गई है। विशेष रूप से, चंडीगढ़ और दमन और दीव ने अपने सरकारी भवनों पर रूफटॉप सोलर के 100प्रतिशत लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है, रूप से, चंडीगढ़ और दमन और दीव ने अपने सरकारी भवनों की छत पर सौर ऊर्जा के 100प्रतिशत लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है, जिससे जिससे वे स्वच्छ ऊर्जा अपनाने में देश का नेतृत्व कर रहे हैं। राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात और तमिलनाडु जैसे राज्य भी असाधारण रूप से अच्छा प्रदर्शन करते हुए कुल इंस्टालेशन आंकड़ों में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। सरकार योजना के सुचारू और समय पर क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए सभी राज्यों में प्रगति की सक्रिय रूप से निगरानी कर रही है, जिसका लक्ष्य 2026-27 तक एक करोड़ घरों तक पहुंचना है।

विशाखापटनम-पटना-विशाखापटनम वाया रांची स्पेशल ट्रेन का परिचालन 16 से

रांची : ट्रेनों में अतिरिक्त भीड़ को देखते हुए यात्रियों की सुविधा के लिए ट्रेन संख्या 08537/08538 विशाखापटनम झ पटना झ विशाखापटनम स्पेशल ट्रेन (वाया झ रांची) का परिचालन होगा। ट्रेन संख्या 08537 विशाखापटनम झ पटना स्पेशल (वाया झ रांची), यात्रा प्रारंभ दिनांक 16.03.2025, 23.03.2025 एवं 30.03.2025 को विशाखापटनम से प्रस्थान करेगी (कुल 3 ट्रिप)। ट्रेन संख्या 08538 पटना झ विशाखापटनम स्पेशल (वाया झ रांची), यात्रा प्रारंभ दिनांक 17.03.2025, 24.03.2025 एवं 31.03.2025 को पटना से प्रस्थान करेगी (कुल 3 ट्रिप)। इन ट्रेनों में एसएलआरडी का 01 कोच, जनरेटर यान का 01 कोच, सामान्य श्रेणी के 04 कोच, द्वितीय श्रेणी स्लीपर के 07 कोच, वातानुकूलित 3-टियर (ईकानमी) के 04 कोच एवं वातानुकूलित 2-टियर के 03 कोच होंगे।

प्रतीक्षा सूची के यात्रियों की सुविधा हेतु अतिरिक्त कोच की सुविधा

रांची : यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को मद्देनजर प्रतीक्षा सूची के यात्रियों की सुविधा हेतु रांची रेल मंडल से परिचालित निम्नांकित ट्रेनों में अतिरिक्त कोच की सुविधा प्रदान की जाएगी। ट्रेन संख्या 18603 रांची झ गोड्डा एक्सप्रेस में दिनांक 13.03.2025 को द्वितीय श्रेणी स्लीपर का 01 अतिरिक्त कोच लगाया जाएगा। ट्रेन संख्या 18611 रांची झ वाराणसी एक्सप्रेस में दिनांक 13.03.2025, 15.03.2025, 17.03.2025 एवं 18.03.2025 को द्वितीय श्रेणी स्लीपर का 01 अतिरिक्त कोच लगाया जाएगा। ट्रेन संख्या 18640 रांची झ आरा एक्सप्रेस में दिनांक 13.03.2025 को द्वितीय श्रेणी स्लीपर का

एनआईटीजेएए, एनआईटी जमशेदपुर के सहयोग से आंतरिक शिकायत समिति द्वारा आयोजित

महिलाओं की उपलब्धियों और समानता की दिशा में तेजी लाने की आवश्यकता पर पांच दिवसीय कार्यशाला संपन्न

बिभा संवाददाता

जमशेदपुर : राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) जमशेदपुर में एनआईटीजेएए के सहयोग एवं आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) द्वारा आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला महिलाओं की उपलब्धियों और समानता की दिशा में कार्रवाई में तेजी लाना 12 मार्च को सफलतापूर्वक संपन्न हुई। समापन सत्र लैंगिक समानता को बढ़ावा देने, महिलाओं को सशक्त बनाने और विभिन्न क्षेत्रों में प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने के लिए समर्पित एक व्यावहारिक और प्रेरक कार्यक्रम था। 8 से 12 मार्च, 2025 तक आयोजित कार्यशाला का आयोजन अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर किया गया था, जिसका विषय था कार्रवाई में तेजी लाएं-क्योंकि समानता इंतजार नहीं कर सकती। इसमें प्रतिष्ठित शिक्षाविदों, उद्योग जगत के गणमान व्यक्ति तथा नीति निमार्ताओं और सामाजिक कार्यकताओं ने महिला सशक्तिकरण, नेतृत्व और समान अवसरों से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की।

समापन सत्र में प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया, जिन्होंने लैंगिक अंतर को पाटने और समाज के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए निरंतर कार्रवाई की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रख्यात वक्ताओं ने लैंगिक समानता का समर्थन करने वाली सरकारी पहलों पर प्रकाश डाला। सरस्वती सहाय, अध्यक्ष, अरटए सहायक, यूएसए, और डॉ. परिमिता, संस्थापक और निदेशक और अनुसंधान परिषद, ने महिला नेतृत्व और सामाजिक प्रभाव पर अपने अनुभव और अंतर्दृष्टि साझा की।

कार्यशाला के दौरान, शिक्षा जगत, उद्योग और सार्वजनिक सेवा से जाने-माने संसाधन व्यक्तियों ने विभिन्न विषयों पर सत्र आयोजित किए, जिनमें व्यापार, राजनीति और शिक्षा में महिलाओं की उपलब्धियां, लिंग आधारित हिंसा से निपटने की रणनीति और महिलाओं के स्वास्थ्य और कल्याण का महत्व शामिल था। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों और उद्योगों के संकाय सदस्यों, शोध विद्वानों, छात्रों और पेशेवरों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई, जिसने लैंगिक समानता को आगे बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रतिबद्धता को मजबूत किया। जिन सहभागियों ने कम से कम 70% सत्रों में सक्रिय रूप से भाग लिया, उन्हें उनकी भागीदारी के सम्मान में ई-प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

कार्यशाला के अध्यक्ष, प्रो. अशोक कुमार, डॉ. रश्मि सिन्हा और डॉ. मधु सिंह, साथ ही समन्वयक, डॉ. रेणु कुमारी, डॉ. श्वाति सुधा, डॉ. अरविंद गली, डॉ. बिनय कुमार, डॉ. तुषार बनर्जी और डॉ. विनीत साहू ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी वक्ताओं, प्रतिभागियों और आयोजक सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया।

संरक्षक, प्रो. गौतम सूत्रधार (निदेशक, एनआईटी जमशेदपुर) और सह-संरक्षक, प्रो. आर. वी. शर्मा (उप निदेशक, एनआईटी जमशेदपुर) ने समावेशी और न्यायसंगत शैक्षणिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता दोहराई। मुख्य अध्यक्ष और सलाहकार इंद्राणी सूत्रधार ने भी प्रतिभागियों को लैंगिक समानता की वकालत करने में सक्रिय होने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यशाला के समापन पर, मुख्य संदेश जोर से और स्पष्ट रूप से गूंज उठा - ह्लसमानता इंतजार नहीं कर सकती, और सामूहिक कार्रवाई समय की मांग है। एनआईटी जमशेदपुर परिवर्तन लाने, महिलाओं को सशक्त बनाने और ऐसा भविष्य सुनिश्चित करने के लिए समर्पित है, जहां सभी को उत्कृष्टता प्राप्त करने के समान अवसर मिलें

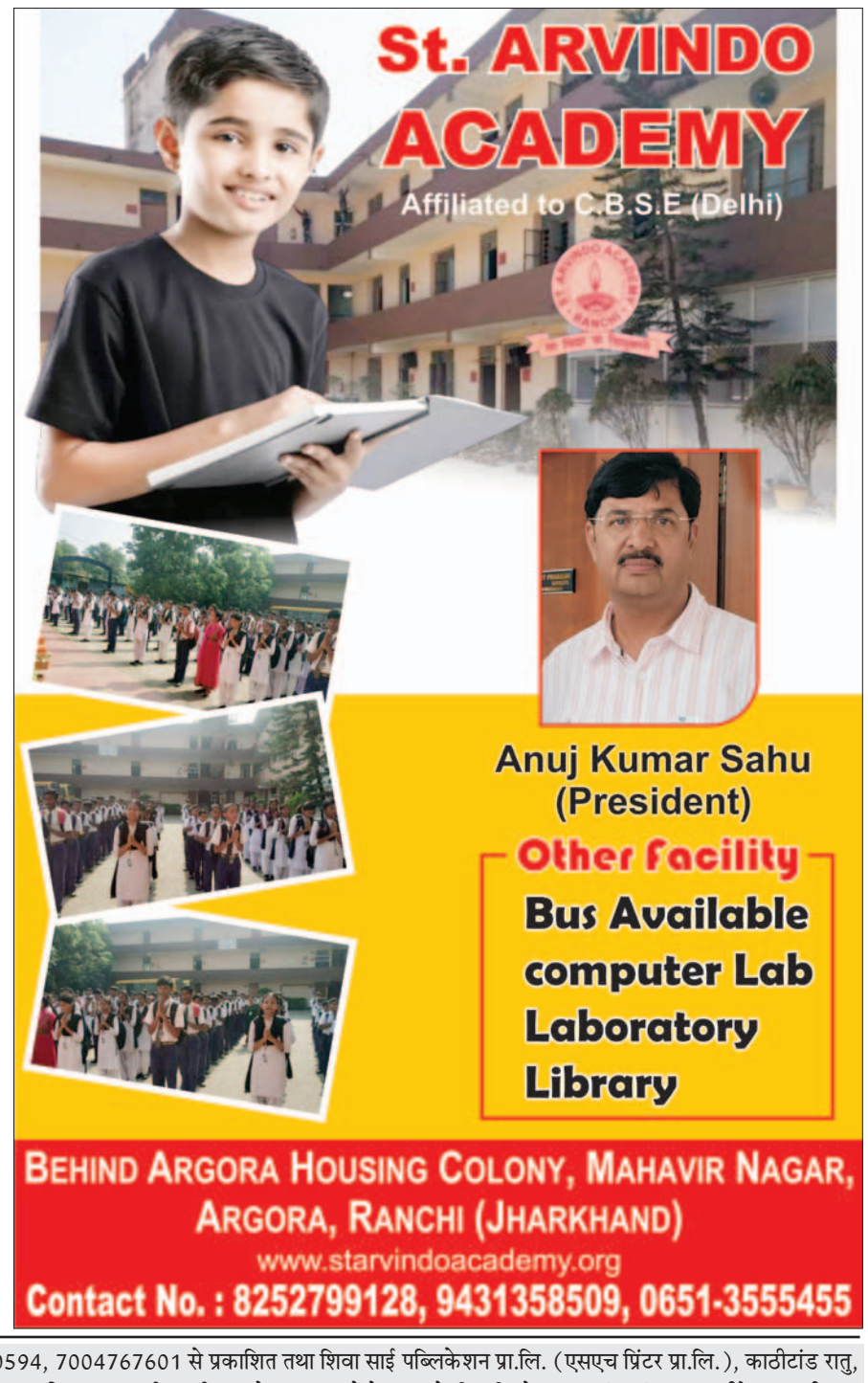

बिहान भारत की ओर से स्वात्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक संजय कुमार के लिए वाटिका अपार्टमेंट,भोसले गली,हरिहर सिंह रोड,बरियातू,रांची-834009(झारखंड) दूरभाषः 7761060594, 7004767601 से प्रकाशित तथा शिवा साई पब्लिकेशन प्रा.लि. (एसएच प्रिंटर प्रा.लि.), काठीटांड रातु, नियर टेंडर बगीचा, एचपी पेट्रोल पंप, रातु, रांची - 835222 झारखंड से मुद्रित। समस्त दीवानी विवाद, न्यायोचित कार्रवाई एवं दंडित परिवादो के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। संपादक : कविता साहू(*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार)। प्रबंध संपादक : बीरेन्द्र महली ।
Email-bihanbharat@gmail.com, bihanbharatranchinews@gmail.com